असली प. रामस्वरूप शर्मा मेरठ निवासी (सैडे) का

ज्योतिष सर्व संग्रह

(भाषा-टीका)



।। श्री गणेशाय नमः ।।



असली ज्योतिष सर्व संग्रह

(चारों प्रकरण, भाषा टीका सहित)

जिसको

पण्डित रामस्वरुप शर्मा

मेरठ निवासी ने पण्डितों के सुभीते के लिए लिखा

प्रकाशक :

मनोज प्रकाशन

3/69, मानपाड़ा, आगरा-282003

फोन : 2365492

मूल्य : चालीस रुपये

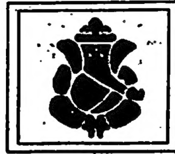
विषय-सूची

जातक प्रकरण-प्रथम भाग

विवाह प्रकरण- द्वितीय भाग

मुहूर्त्त प्रकरण- तृतीय भाग

प्रश्न प्रकरण- चतुर्थ भाग



अथ ज्योतिष सर्व संग्रह

प्रथम भाग

(जातक प्रकरण)

प्रणम्य परमात्मानं वक्रतुण्डं च शङ्करम् ।
समाहृत्यान्यग्रन्थेभ्यो लिख्यते सर्व संग्रहः ।

द्वादश मासों के नाम

मासश्चैत्रश्च वैशाखो ज्येष्ठश्चाषाढसंज्ञकः ।
श्रावणश्चैव भाद्राख्य आश्विनः कार्तिकस्तथा ।।
मार्गशीर्षश्च पौषश्च माघश्च फाल्गुनस्तथा ।

चैत्र को मधु और मीन भी कहते हैं।	**वैशाख** को माधव और मेष भी कहते हैं	**ज्येष्ठ** को शुक्र और वृष भी कहते हैं	**आषाढ़** को शुचि और मिथुन भी कहते हैं
श्रावण को नभ और कर्क भी कहते हैं	**भाद्रपद** को नभस्य और सिंह भी कहते हैं	**आश्विन** को ईश व कन्या भी कहते हैं	**कार्तिक** को ऊर्ज और तुला भी कहते हैं
मार्गशीर्ष को सिंह और वृश्चिक भी कहते हैं	**पौष** को सहस्य और धनु भी कहते हैं	**माघ** को तप व मकर भी कहते हैं	**फाल्गुन** को तपस्य व कुम्भ भी कहते हैं

सोलह तिथियों के नाम

१ प्रतिपदा, २ द्वितीया, ३ तृतीया, ४ चतुर्थी, ५ पंचमी, ६ षष्ठी, ७ सप्तमी, ८ अष्टमी, ९ नवमी, १० दशमी, ११ एकादशी, १२ द्वादशी, १३ त्रयोदशी, १४ चतुर्दशी, १५ पूर्णमासी और अमावास्या-ये सोलह तिथियाँ होती हैं ।

तिथियों की नन्दादि संज्ञा

१ प्रतिपदा, ६ षष्ठी और ११ एकादशी– ये नन्दा तिथि हैं । द्वितीया, ७ सप्तमी, और १२ द्वादशी- ये भद्रा तिथि हैं। ३ तृतीया ८ अष्टमी और १३ त्रयोदशी, –ये जया तिथि हैं। ४ चतुर्थी, ९ नवमी और १४ चतुर्दशी– ये रिक्ता तिथि हैं। ५ पंचमी, १० दशमी, १५ पूर्णिमा तथा ३० अमावास्या– ये तिथियाँ 'पूर्णा' संज्ञक है ।

सात वारों के नाम

रविवार, चन्द्रवार, भौमवार, बुधवार, गुरुवार, शुक्रवार, तथा शनिवार ये सात वारों (दिनों) के नाम हैं।

रविवार को आदित्यवार या एतवार चन्द्रवार को सोमवार, भौमवार को मंगलवार, बुधवार को बुध, गुरुवार को बृहस्पतिवार, शुक्रवार को शुक्र तथा शनिवार को थावर भी कहते हैं । राहु और केतु ये दोनों सात वारों के ग्रहों के साथ में मिलकर नवग्रह कहलाते हैं ।

एक महीने में दो पक्ष होते हैं- कृष्ण पक्ष और शुक्ल पक्ष । अन्धेरी रात को कृष्ण पक्ष कहते हैं और चाँदनी रात को शुक्ल पक्ष । महीने की शुरू की पड़वा से अमावास्या तक कृष्ण पक्ष एवं अमावास्या के बाद की पड़वा से पूर्णमासी तक शुक्ल पक्ष होता है । अन्धेरे पक्ष को बदी और उजाले पक्ष को सुदी भी कहते हैं ।

अट्ठाईस नक्षत्रों के नाम

१ अश्विनी, २ भरणी, ३ कृत्तिका, ४ रोहिणी, ५ मृगशिरा, ६ आर्द्रा, ७ पुनर्वसु, ८ पुष्य, ९ आश्लेषा, १० मघा, ११ पूर्वा फाल्गुनी, १२ उत्तरा फाल्गुनी, १३ हस्त, १४ चित्रा, १५ स्वाति, १६ विशाखा, १७ अनुराधा, १८ ज्येष्ठा, १९ मूल, २० पूर्वाषाढा, २१ उत्तराषाढा, २२ अभिजित्, २३ श्रवण, २४ धनिष्ठा, २५ शतभिषा, २६ पूर्वाभाद्रपद, २७ उत्तराभाद्रपद और २८ रेवती– ये अट्ठाईस नक्षत्र हैं ।

नक्षत्रों के देवता- चक्र

नक्षत्र	अश्विनी	भरणी	कृत्तिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु
देवता	आश्विनी-कुमार	यम	अग्नि	ब्रह्मा	चन्द्रमा	रुद्र	अदिति
नक्षत्र	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू. फा.	उ. फा.	हस्त	चित्रा
देवता	गुरु	सर्प	पितर	भग	अर्यमा	सूर्य	विश्व-कर्मा
नक्षत्र	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढा	उ. षाढा
देवता	वायु	इन्द्र अग्नि	मित्र	इन्द्र	निर्ऋति	जल	विश्वेदेवा
नक्षत्र	अभिजित्	श्रवण	धनिष्ठा	शतभि.	पू. भा.	उ. भा.	रेवती
देवता	विधि	विष्णु	वसु	वरुण	अजैक-पाद	अहिर्बुध्न्य	पूषा

सत्ताईस योगों के नाम

विष्कुम्भः प्रीतिरायुष्मान् सौभाग्यः शोभनस्तथा ।
अतिगंडः सुकर्मा च धृतिः शूलस्तथैव च ।१।
गंडो वृद्धिर्ध्रुवश्चैव व्याघातौ हर्षणस्तथा ।
वज्रं सिद्धिर्व्यतीपातो वरीयान् परिघः शिवः ।२।
सिद्धिः साध्यः शुभः शुक्लो ब्रह्म चैन्द्रोऽथवैधृतिः ।
सप्तविंशतिराख्याता नामतुल्यफलप्रदाः ।३।

टीका- १ विषकुम्भ, २ प्रीति, ३ आयुष्मान्, ४ सौभाग्य, ५ शोभन, ६ अतिगंड, ७ सुकर्मा, ८ धृति, ६ शूल, १० गंड, ११ वृद्धि, १२ ध्रुव, १३ व्याघात, १४ हर्षण, १५ वज्र, १६ सिद्धि, १७ व्यतीपात, १८ वरीयान्, १६ परिघ, २० शिव, २१ सिद्धि, २२ साध्य, २३ शुभ, २४ शुक्ल, २५ ब्रह्म, २६ ऐन्द्र और वैधृति- ये सत्ताईस योग हैं ।

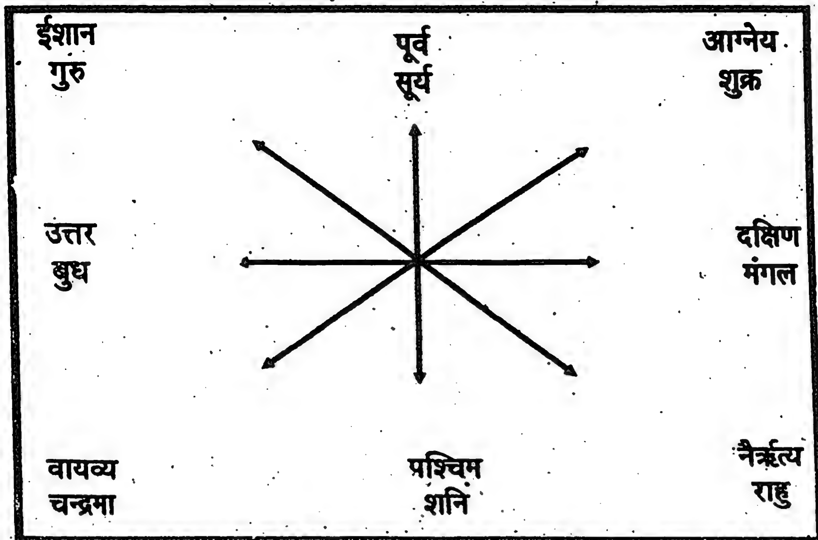
छः ऋृतुओं के नाम

(१) वसन्त, (२) ग्रीष्म, (३) वर्षा, (४) शरद, (५) हेमन्त और (६) शिशिर ।

एक-एक ऋतु दो महीने विद्यमान रहते हैं । जैसे- मीन-मेष के सूर्य यानी फाल्गुन, चैत्र में वसन्त ऋतु । वृष-मिथुन के सूर्य यानी वैशाख, ज्येष्ठ में ग्रीष्म। कर्क- सिंह के सूर्य यानी आषाढ़, श्रावण में वर्षा । कन्या-तुला के सूर्य यानी भाद्रपद, आश्विन में शरद् । वृश्चिक-धनु के सूर्य यानी कार्तिक अगहन में हेमन्त तथा मकर-कुम्भ के सूर्य यानी पौष, माघ में शिशिर ऋतु होती है ;

६ महीने सूर्य उत्तरायण और ६ महीने दक्षिणायन रहता है । उत्तरायण सूर्य में देवताओं का दिन होता है और दक्षिणायन में रात होती है । इसी कारण जितने शुभ काम हैं वे उत्तरायण सूर्य में किए जाते हैं । माघ, फाल्गुन, चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ और आषाढ़- इन ६ महीनों में सूर्य उत्तरायण रहते हैं । श्रावण, भाद्रपद, आश्विन, कार्तिक, मार्गशीष और पौष- इन ६ महीनों में सूर्य दक्षिणायन रहते हैं । इस प्रकार मकर के सूर्य से ६ मास उत्तरायण और कर्क के सूर्य से ६ मास दक्षिणायन के माने जाते हैं ।

आठ दिशाओं के स्वामी ग्रह



पूर्व दिशा का स्वामी सूर्य, आग्नेयकोण का शुक्र, दक्षिण का मंगल, नैर्ऋत्य का राहु, पश्चिम का शनि, वायव्य का चन्द्रमा, उत्तर का बुध और ईशान कोण का स्वामी बृहस्पति है । इस प्रकार आठों दिशाओं के ये आठ स्वामी हैं।

एकादश करणों के नाम

१ बव, २ बालव, ३ कौलव, ४ तैतिल, ५ गर, ६ वणिज और ७ विष्टि ।

ये सात करण 'चर संज्ञक' हैं ।

८ शकुनि, ९ चतुष्पद, १० नाग, और ११ किंस्तुघ्न ।

ये चार करण 'स्थिर संज्ञक' हैं, इस प्रकार ११ करण हैं ।

करण बनाने की विधि

शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से गत तिथि को दूनी करे अर्थात् बीच की तिथि को दूना करे । यदि सात से अधिक हों तो सात का भाग दें, जो शेष रहें उन्हीं को बवादि करण जानना । जैसे- हमें कृष्ण पक्ष की द्वितीया के पहले तथा दूसरे दल का करण जानना है तो गत तिथि शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से कृष्ण पक्ष की

प्रतिपदा तक १६ हुई । इन्हें दूना किया तो ३२ हुए । इनमें ७ का भाग देने से ४ बचे। पहले दल में चौथा तैतिल करण हुआ तथा दूसरे में गर करण हुआ। इसी क्रम से सब तिथियों के करणों को जानो ।

बारह राशियों के नाम

१ मेष, २ वृष, ३ मिथुन, ४ कर्क, ५ सिंह, ६ कन्या, ७ तुला, ८ वृश्चिक, ९ धनु, १० मकर, ११ कुम्भ और १२ मीन ।

दिनमान देखना

साठ घड़ी का एक दिन होता है । कभी दिन बड़ा हो जाता है और कभी रात बड़ी हो जाती है । एक घड़ी के ६० पल होते हैं । ६० पल की एक घड़ी और एक पल के ६० विपल होते हैं । २ पल का १ मिनट होता है । २४ मिनट की १ घड़ी होती है । २ घड़ी का एक घंटा और २४ घण्टों का एक दिन-रात होता है । एक नक्षत्र के चार चरण होते हैं यानी चार अक्षर । जब किसी बालक का जन्म हो, उस दिन देखना है कि कौन-सा चरण है तो उस नक्षत्र के चार भाग कर लें । जब वह नक्षत्र आरंभ हुआ हो और जब तक रहे । जैसे-अश्विनी नक्षत्र में जन्म हुआ है तो देखो कि यह नक्षत्र ६० घड़ी भोग करता है, तो पन्द्रह-पन्द्रह घड़ी के चार चरण हुए । जो नक्षत्र ६० घड़ी से कम या अधिक हो तो उतनी ही घड़ियों को चार जगह बाँटें तो जितनी बाँट में आये, उतनी ही घड़ियों, पलों का एक नक्षत्र का एक चरण जानें । जिस चरण में जन्म हो, उसी चरण का अक्षर नक्षत्र के नाम में पहले आता है । इसका कुछ प्रमाण नहीं है कि एक नक्षत्र ६० ही घड़ी भोगे । जो पण्डित ६० घड़ी लगाते हैं, उनके लगाने से राशि में अन्तर आ जाता है । देखिये कि अश्विनी नक्षत्र में जन्म हुआ तो यह देखें कि कौन-से चरण में हुआ ? उसी चरण के अक्षर पर नाम धरें । जैसे– चू, चे, चो, ला- अश्विनी । पहले चरण का अक्षर चू है, दूसरे का चे है, तीसरे का चो है, चौथे का ला है । जो चू पर लड़के का जन्म हो तो चुन्नी । लड़की का जन्म हो तो चुनिया । चे पर चेतराम । चो पर चोबसिंह, चोलावती। ला पर लालमणि या लालो । सब नक्षत्रों पर ऐसे ही नाम रखें । ब्राह्मण के यहाँ 'शर्मा' लगाकर लिखें । क्षत्रियों के यहाँ 'वर्मा' । वैश्य के यहाँ गुप्त तथा शूद्र के यहाँ 'दास' व 'चौधरी' करके लिखना चाहिए। जिस नक्षत्र के चरण में लड़के या लड़की का जन्म होगा, उसका वही नक्षत्र होगा। जैसे-यह ४ अक्षरों का नक्षत्र

है, इसी प्रकार चार-चार अक्षरों के २८ नक्षत्र हैं । उन २८ नक्षत्रों के नाम तथा अक्षर आगे लिखे हैं ।

नक्षत्रों के चार-चार अक्षर

चरणाक्षर				नक्षत्र	चरणाक्षर				नक्षत्र
चू	चे	चो	ला	अश्विनी	रू	रे	रो	ता	स्वाति
ली	लू	ले	लो	भरणी	ती	तू	ते	तो	विशाखा
आ	ई	ऊ	ए	कृतिका	न	नी	नू	ने	अनुराधा
ओ	बा	बी	बू	रोहिणी	नो	या	यी	यू	ज्येष्ठा
वे	वो	का	की	मृगशिरा	ये	यो	भा	भी	मूल
कू	घ	ङ	छ	आर्द्रा	भू	धा	फा	ढ	पूर्वाषाढा
के	को	ह	ही	पुनर्वसु	भे	भो	जा	जी	उत्तराषाढा
हू	हे	हो	डा	पुष्य	जू	जे	जो	खा	अभिजित्
डी	डू	डे	डो	श्लेषा	खि	खी	खू	खे	श्रवण
म	मी	मू	मे	मघा	ग	गी	गू	गे	धनिष्ठा
मो	टा	टी	टू	पू. फा.	गो	सा	सी	सू	शतभिषा
टे	टो	प	पी	उ. फा.	से	सो	द	दी	पू० भाद्रपद
पू	ष	ण	ठ	हस्त	दू	थ	झ	ञ	उ० भाद्रपद
पे	पो	र	री	चित्रा	दे	दो	चा	ची	रेवती

नौ अक्षरों की एक राशि होती है । जैसे चू + चे + चो + ला + ली + लू + ले + लो + आ– इन नौ अक्षरों की मेष राशि हुई । इन अक्षरों में से जो नाम का पहला अक्षर होगा उसकी मेष राशि होगी । ऐसे ही ये बारह राशि हैं। बारह राशियों के नाम आगे लिखे जाते हैं–

नौ अक्षरों का राशि		दो अक्षरों की राशि	
चू चे चो ला ली लू ले लो आ	मेष	आ ला	मेष
इ उ ए ओ बा बी बू बे बो	वृष	ओ वा	वृष
क की कू घ ङ छ के को ह	मिथुन	का छा	मिथुन
हि हू हे हो डा डि डू डे डो	कर्क	डा हा	कर्क
म मी मू मे मो टा टी टू टे	सिंह	मो टा	सिंह
टो पा पी पू ष ण ठ पे पो	कन्या	पा ठा	कन्यां
रा री रू रे रो ता ती तू ते	तुला	रा ता	तुला
तो ना नी नू ने नो या यी यू	वृश्चिक	नो या	वृश्चिक
ये यो भा भी भू धा फा ढा भे	धनु	भू धा	धनु
भो जा जी खा खी खू खे गा गी	मकर	खा गा	मकर
गू गे गो सा सी सू से सो द	कुम्भ	गो सा	कुम्भ
दी दू थ झ ञ दे दो चा ची	मीन	दा चा	मीन

सवा दो नक्षत्रों का एक चन्द्रमा होता है- जैसे अश्विनी, भरणी, कृत्तिका के एक चरण तक 'मेष' का चन्द्रमा होता है । जिस जातक का अश्विनी नक्षत्र में जन्म होगा, अथवा भरणी का होगा या कृत्तिका के पहले चरण तक का होगा, उसकी मेष राशि होगी ।

चन्द्रमा देखना

अश्विनीभरणी कृत्तिकापादे मेषः । कृत्तिकानां त्रयः पादा रोहिणी मृगशिरार्द्धं वृषः । मृगशिरार्द्धं आर्द्रा पुनर्वसुपादत्रयं मिथुनः । पुनर्वसुपादमेकं पुष्यश्लेषान्ते कर्कः । मघां च पूर्वाफाल्गुनी उत्तरापादे सिंहः । उत्तराणां त्रयो पादा हस्तचित्रार्द्धकन्या । चित्रार्द्धं स्वातिः विशाखापादत्रयं तुला । विशाखापादमेकं अनुराधा ज्येष्ठान्तें वृश्चिकः । मूलं च पूर्वाषाढा उत्तरापादे धनुः । उत्तराणां त्रयो पादाः श्रवण धनिष्ठार्द्धं मकरः । धनिष्ठार्द्धं शतभिषा पूर्वाभाद्रपदा पादत्रयं कुम्भः पूर्वाभार्द्रपदापादमेकं उत्तरा भाद्रपदा रेवती मीनः ॥

टीका- अश्विनी के ४ चरण, भरणी के ४ चरण तथा कृत्तिका के १ चरण तक मेष का चन्द्रमा रहता है। कृत्तिका ३,रोहिणी ४ तथा मृगशिरा के २ तक वृष का चन्द्रमा रहता है। मृगशिरा २, आर्द्रा ४, पुनर्वसु ३ तक मिथुन का चन्द्रमा। पुनर्वसु १, पुष्य ४, श्लेषा ४ तक कर्क का चन्द्रमा। मघा ४, पूर्वा फाल्गुनी ४, उत्तरा फाल्गुनी के १ तक सिंह का चन्द्रमा। उत्तरा फाल्गुनी ३, हस्त ४, चित्रा २ तक कन्या का चन्द्रमा। चित्रा २, स्वाति ४ तथा विशाखा के ३ तक तुला का चन्द्रमा। विशाखा १, अनुराधा ४, ज्येष्ठा ४ तक वृश्चिक का चन्द्रमा। मूल ४, पूर्वाषाढा ४, उत्तराषाढा १ तक धनु का चन्द्रमा। उत्तराषाढा ३, श्रवण ४, धनिष्ठा २ तक मकर का चन्द्रमा। धनिष्ठा २, शतभिषा ४ तथा पूर्वाभाद्रपदा ३ तक कुम्भ का चन्द्रमा एवं पूर्वभाद्रपदा १, उत्तरा भाद्रपदा ४ तथा रेवती ४ तक मीन का चन्द्रमा रहेगा। इस क्रम से सब को जान लें।

जब किसी लड़के का जन्म हो उस वक्त लग्न देखना कि इस वक्त क्या लग्न है। पहिले यह देखें कि इस महीने में सूर्य किस राशि का है। जिस राशि का सूर्य हो, उससे सातवीं राशि पर सूर्य छिप जाता है। जिस राशि पर सूर्य हो, उसको संक्रांति कहते हैं। उस राशि का २६ अंश तक एक अंश रोज घटता है। ३० अंश पर सूर्य दूसरी राशि पर होता है। वही संक्रांति है। एक महीना सूर्य एक राशि पर रहता है। १२ राशियों पर इसी प्रकार घूमता रहता है। अब लग्न देखना चाहिए कि चैत्र के महीने में किसी के बालक हुआ तो चैत्र में मीन की संक्रांति होगी। उसी रोज से मीन का सूर्य होता है। जिस वक्त सूर्य उदय होता है, उस वक्त मीन लग्न रहती है और तीन घड़ी चौंतीस पल भोगता है, यानी तीन घड़ी के चौंतीस पल चढ़े तक रहता है। फिर मेष लग्न आ जाता है। ऐसे ही दिन-रात में १२ लग्न भोग करते हैं। संक्रांति के जितने अंश बीतते जायेंगे, वह लग्न उतना ही रात में बीतता जाएगा। देखिए, मीन की संक्रांति के दस दिन गये, जब किसी के बालक हुआ, तो संक्रांति के दस अंश गये तो वह मीन लग्न तिहाई रात में बीत जाता है, क्योंकि दस तिया तीस। अब मीन लग्न ३ घड़ी ३४ पल का है, १ घड़ी १२ पल रात में बीता और २ घड़ी २२ पल दिन चढ़े तक रहा। फिर मेष आ गया, जो १० घड़ी १५ पल दिन चढ़े तक रहा किसी के किसी वक्त बालक हुआ, वही उसका इष्ट होता है। २ घड़ी २२ पल मीन लग्न बाकी रहा और ३।३४ मेष और ४।७ वृष इनको जोड़ो तो १०।३ आया, अब देखो इष्ट १०।१५ का है तो जानें मिथुन लग्न रहा। एक कायदा और है, इष्ट की घड़ी-पल यानी जितना दिन चढ़ा हो या जितनी रात गई हो अर्थात् जितना इष्ट हो, यह देखें कि संक्रांति के कितने अंश शेष हैं। पत्रे में देखें। जितने अंश सूर्य राशि के गये हों, उतने अंश के कोष्ठक लग्न-सारिणी में देखें। उसी खाने की घड़ी-पल इष्ट में जोड़ दें। फिर उसमें सात का भाग दें।

जो अंक बचे, उसे लग्नसारिणी में देखें कि इन अंकों पर क्या लग्न है ? जहाँ अंक मिलें, वही लग्न जानना ।

लग्न भोग देखना

मीने मेषे ३ । ३४ कृत भू नेत्रे वृषे कुम्भे ४ । ७ मुनि वेदभुजा । मकरे मिथुने ५ । ०१ शशिख वह्नि कर्के धने शराकृतरामा ५ । ४५ वृश्चिके सिंहे ५ । ४१ रूप शराग्निः कन्या तुल ५ । ४२ भुजवेदगुणाः ।

लग्न भोग चक्रम्

३	४	५	५	५	५	५	५	५	५	४	३	घड़ी
३४	७	१	४५	४१	४२	४२	४१	४५	१	७	३४	पल
मेष	वृष	मि.	कर्क	सिंह	क.	तुला	वृ.	धनु	मकर	कुंभ	मीन	राशि

तिथि गण्डान्तम्

नन्दा तिथेश्च नामादौ पूर्णायाश्च तथान्तिके ।
घटिकैका शुभे त्याज्या तिथिगण्डा घटि द्वयम् ।।

टीका- नन्दा तिथि के आदि की तथा पूर्णा के अन्त की एक घड़ी अशुभ होती है । अतः ये शुभकार्यों में त्याज्य हैं ।

नक्षत्र गण्डान्तम्

ज्येष्ठा श्लेषा रेवतीनां नक्षत्रान्ते घटीद्वयम् ।
आदौ मूलमघाश्विन्या भगण्डे घटिका द्वयम् ।।

टीका- ज्येष्ठा, आश्लेषा, रेवती के अन्त की २ घड़ी और मूल, मघा तथा अश्विनी के आदि की दो घड़ी शुभ कार्य में त्याज्य हैं ।

लग्न गण्डान्तमाह

मीन वृश्चिक कर्कान्ते घटिकार्द्धं परित्यजेत् ।
आदौ मेषस्य चापस्य सिंहस्य घटिकार्द्धकम् ।।

टीका- मीन, वृश्चिक कर्क के अन्त की आधी घड़ी तथा मेष धनु और सिंह के आदि की आधी घड़ी में शुभ कर्म नहीं करने चाहिए ।

तिथिगण्डे भगण्डे च लग्नगण्डे च जातकः ।
न जीवति यदा जातो जीविते च धनी भवेत् ॥

टीका- तिथि, नक्षत्र, लग्न के गंडान्त में बालक का जन्म हो तो न जिये-जो जियो तो वह धनी हो । ये छः नक्षत्र गण्ड हैं- मूल, ज्येष्ठा, आश्लेषा, अश्विनी, रेवती और मघा । ज्येष्ठा, मूल और आश्लेषा- इन तीन का प्रधान विचार होता है । अश्विनी, रेवती तथा मघा- इन तीन का नहीं ।

ज्येष्ठा नक्षत्र फलम्

ज्येष्ठादौ मातरं हन्ति द्वितीये पितरं तथा ।
तृतीये भ्रातरं चैव मातरं च चतुर्थके ॥
आत्मानं पंचमे हन्ति षष्ठे गोत्रक्षयो भवेत् ।
सप्तमे चोभयकुल ज्येष्ठं भ्रातरमष्टमे ॥
नवमे श्वसुरं हन्ति सर्व हन्ति दशांशके ।

टीका- ६० घड़ी के दस भाग करे, फिर ६-६ घड़ी का फल कहे । यदि ज्येष्ठा नक्षत्र की पहली ६ घड़ी में बालक का जन्म हो तो नानी को अशुभ । दूसरी ६ घड़ी में जन्मा हो तो नाना को कष्ट । तीसरी ६ घड़ी में जन्मा हो तो मामा को कष्ट । चौथी ६ घड़ी में जन्मा हो तो माता को कष्ट । पांचवीं ६ घड़ी में जन्मा हो तो बालक को कष्ट । छठी ६ घड़ी में जन्मा हो तो गोत्र वालों को कष्ट । सातवीं ६ घड़ी में नाना के परिवार को और अपने कुटुम्ब को कष्ट । आठवीं ६ घड़ी में भाई को कष्ट । नवीं ६ घड़ी में ससुर को कष्ट तथा दसवीं ६ घड़ी में सब कुटुम्ब को कष्ट कहे ।

वार- सेवन फल

रवि ताम्बूल, सोम को दर्पण । मंगल को गुड़ खाकर अर्पण ॥ बुध को धनिया, गुरु को जौ । शुक्र को दही की पीड़ा कहौ ॥ शनिश्चर को अदरक खावे । सुख सम्पत्ति घर को आवे ।

मूल नक्षत्र फलम्

मूलेष्टौ मूलवृक्षस्य घटिकाः परिकीर्तिता ।
स्तम्भेषु षष्ठं घटिका त्वकू चैकादश स्मृताः ॥

शाखायां च नव प्रोक्ताः पत्रे प्रोक्ताश्चतुर्दश ।
पुष्पे पंच फले वेदाः शिखायां च त्रयः स्मृताः ।।
मूले नाशो हि मूलस्य स्तम्भे हानिर्धनक्षयः ।
त्वक् भ्रातुर्विनाशश्च शाखायां मातृपीड़नम् ।।
परिवारक्षयः पत्रे पुष्पे मंत्री च भूपतेः ।
फले राज्यं शिखायां स्यादल्पजीवी च बालकः ।।

टीका- अब मूल संज्ञक नक्षत्र के विचारने की रीति मूलवृक्ष बना कर कहते हैं । मूल वृक्ष बनाकर ८ घड़ी जड़ में रखे, ६ स्तम्भ में, ११ छाल में, ६ शाखा में, १४ पत्र में, ५ पुष्प में, ४ फल में, ३ शिखा में– इस प्रकार ६० घड़ी रखे। फिर उसका फल कहे । यदि मूल की ८ घड़ी में बालक का जन्म हो तो मूल नाश हो । स्तम्भ की ६ घड़ी में हो तों धन की हानि । छाल की ११ घड़ी में हो तो भाई का नाश । शाखा की ६ घड़ी में हो तो माता को पीड़ा । पत्तों की १४ घड़ी में हो तो परिवार का नाश । फल की ४ घड़ी में जन्म हो तो राजा का मंत्री हो अथवा वंश में या देश में श्रेष्ठ हो । और शिखा की ३ घड़ी में जन्म हो तो आयु अल्प पावे अर्थात् उमर थोड़ी हो ।

मूल वृक्ष फलम्

शिखा	फल	फूल	पत्र	शाखा	छाल	स्तम्भ	मूल
३	४	५	१४	६	११	६	८
अल्पायु	राजा	राजा-मं.	पर.क्षय	मा.कष्ट	भाई नाश	धनहीन	मू.नाश

आश्लेषा नक्षत्र फलम्

मूर्द्धास्यनेत्रगलकांशयुगञ्च बाहू । हृज्जानु गुह्यपदमित्यहि देह भागः ।। बाणाद्रि नेत्रहुत भुक् श्रुतिनाग रुद्रं । षडनन्दपंचशिरसः क्रमशस्तु नाड्यः ।। १ ।। राज्यं पितृक्षयो मातृनाशः कामक्रियारतिः । पितृभक्तो बली स्वघ्नस्त्यागी भोगी धनी क्रमात् ।।

टीका- आश्लेषा नक्षत्र के जिस भाग में बालक का जन्म हो, उसका फल इस प्रकार कहना । आश्लेषा नक्षत्र की पहली ५ घड़ी मे बालक का जन्म हो तो राज्य प्राप्ति । दूसरे भाग की ७ घड़ी में पिता को कष्ट । तीसरे भाग की २ घड़ी में माता को कष्ट । चौथे भाग की ३ घड़ी में पर-स्त्री रत । पांचवें भाग की ४ घड़ी में पितो का भक्त । छठे भाग की आठ घड़ी में बलवान् । सातवें भाग की ११ घड़ी में आत्मघाती । आठवें भाग की ६ घड़ी में त्यागी । नवें भाग की ६ घड़ी में भोगी तथा दसवें भाग की ५ घड़ी में धनवान् हो । इस प्रकार ६० घड़ी के १० भाग करके फल कहना चाहिए ।

मूल, ज्येष्ठा तथा आश्लेषा नक्षत्र का अलग-अलग विचार

यदि मूल, ज्येष्ठा व आश्लेषा- इन तीन नक्षत्रों में से किसी नक्षत्र में बालक का जन्म हो तो इनका २८००० मन्त्रों का अथवा जितनी श्रद्धा हो, जाप कराये। और जब वह नक्षत्र २८ दिन में फिर आए, तो जिस मंत्र का जाप हो, उसका दसूठन करे । और जितना जाप हो, उसके दशांश का हवन करे । ७ या १४ या २१ या २८ ब्राह्मण जिमावे । ऐसा करने से मूल आदि नक्षत्रों का दोष दूर हो जाता है अन्यथा विघ्न होता है ।

मूल नक्षत्र मन्त्रः

ॐ मातेव पुत्रपृथिवीपुरीष्यमग्निं स्वेतो नावमारुध्यातां विश्वेर्देवर्ऋतुभिः संवदानः प्रजापतिर्विश्वकर्मा विमुञ्चतु ॥

लघु मूल मन्त्रः

ॐ एष ते निर्ऋते ! भागस्तं जुषस्व । १ ।

आश्लेषा नक्षत्र मन्त्र

ॐ नमोस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु
ये अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः । २ ।

ज्येष्ठा नक्षत्र मन्त्रः

ॐ स इषुहस्तैः सनिषंगिभिर्व्वशीस सृष्टा सयुधऽइन्द्रो गणेन ।
सं सृष्टजित्सोमपा बाहु शुद्धर्युग्र धन्वाप्रति हिताभिरस्ता ।३।

अश्विनी नक्षत्र मन्त्रः

ॐ अश्विनीतेजसोचक्षुः प्राणेन सरस्वती वीर्यम् ।
वाचेन्द्रबलेन्द्रायदधुरिन्द्रियम् । ॐ अश्विनिभ्यां नमः ।४।

यदि अश्विनी नक्षत्र के प्रथम चरण में बालक का जन्म हो तो पिता को बाधा हो, दिन में जन्म हो तो पिता को कष्ट, रात्रि में जन्म हो तो माता को कष्ट, और संध्या में जन्म हो तो स्वयं को कष्ट होता है ।

मघा नक्षत्र मन्त्रः

ॐ पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः पितामहेभ्यः
स्वाधायिभ्यः स्वधा नमः प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधानमः
अक्षन्नपितरोऽमीमदन्त पितरोऽतीतपन्त पितरः शुन्धध्वम् ।५।

मघा के प्रथम चरण में जन्म हो तो मातृ-पक्ष को कष्ट । द्वितीय चरण में हो तो पिता को कष्ट । तृतीय चरण में हो तो सुख-सम्पत्ति । चतुर्थ चरण में हो तो धन प्राप्ति हो ।

रेवती नक्षत्र मन्त्रः

ॐ पूषन् तव व्रते वयन्तरिष्येम कदाचनस्तोतारस्त इहस्मसि
।६। ओं पूष्णे नमः ।

रेवती नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्म हो तो राजा हो, दूसरे चरण में मंत्री, तृतीय चरण में सुख-सम्पत्ति मिले और चतुर्थ चरण में हो तो स्वयं को कष्ट हो।

मूल- शान्ति की सामग्री

घड़ा १, करवा १, सराई १०, पंचरंग, नारियल २, दूब, कुशा, बताशे, सुपारी ५०, इन्द्र जी, भोजपत्र, आटा, चावल, धूप, कपूर, अंगोछे २, कपड़ा लाल रंग का डेढ़ मीटर चंदोवे के लिए, मेवा ५० ग्राम, बूरा ५० ग्राम, पेड़ा

५० ग्राम, केले ४, पुष्पहार २, २७ खेड़ों की कंकड़, २७ पेड़ों के पत्ते, २७ कुओं का पानी, आम की टहनी, गंगा-जल, यमुना-जल, हरनद का जल, समुद्र का जल या समुद्र-झाग, पञ्च- रत्न, पञ्च- पल्लव, पञ्च-गव्य, पंचामृत, बन्दनवार, हल, बाँस की टोकरी, घड़ा कच्चा १०१ छेद वाला, घण्टी १, छायादान को कटोरी २, वृष दान, गोदान, मूर्ति सोने की १ (मूल की), मूर्ति चाँदी की १ (मूलनी की), सतनजा २७ सेर या श्रद्धानुसारः मिट्टी हाथी के नीचे की, घोड़े के नीचे की, गौ के नीचे की, तालाब की, बामी की, नदी की या त्रिवेणी की, राजद्वार की । पीली मिट्टीं वेदी के लिए २ ढेले ।

हवन साम्ग्री- चावल १ भाग, घी २ भाग, बूरा २ भाग, जौ ३ भाग, तिल ४ भाग, मेवा, मधु, अष्टगन्ध, इन्द्र जौ, भोजपत्र, सुगन्ध के लिए ।

हवन सामग्री- चावल १ भाग, घी २ भाग बूरा २ भाग, जौं ३ भाग, तिल ४ भाग, मेवा, मधु, मधु, अष्टगन्ध, इन्द्र जी, भोजपत्र, सुगन्ध के लिए ।

नोट- १ लाख मन्त्र पर १ मन चरु होना चाहिए । इसी हिसाब से जितना मन्त्र जपना हो, उतनी ही सामग्री होनी चाहिए ।

अथ जन्मपत्री लिखना

ॐ श्रीगणेशाय नमः ।। यं ब्रह्म वेदान्त विदो वदन्ति परं प्रधानं पुरुषं तथान्ये । विश्वेद्गतेः कारणमीश्वरं वा तस्मै नमो विघ्नविनाशनाय ।। १ ।। जननी जन्म सौख्यानां वर्द्धिनी कुल संपदाम् । पदवी पूर्वपुण्यानां लिख्यते जन्मपत्रिका ।। २ ।। अथ शुभ संवत्सरेऽस्मिन् श्रीनृपति विक्रमादित्य राज्ये संवत् २०१६ शाके शालिवाहनस्य १८८१ उत्तरायणे वा दक्षिणायणे वर्षा ऋतौ मासानां मासोत्तमेमासे भाद्रपदमासे कृष्ण पक्षे शुभतिथौ ३ तृतीयायां भौमवासरे घट्यः ३१ पलानि १ पूर्वाभाद्रपदानाम नक्षत्रे ४२।०१/अतिगण्ड योगे ०५।३१ बव नामकरणे ३१।०१ तत्र दिनमानं ३४।५७ रात्रिप्रमाणं २५।०३ कर्कार्कगतांशाः २५ शेषांशा ५ तत्रेष्टम् ३४।५७ तत्समये मकरलग्नोदये विप्रवंशे वशिष्ठ गोत्रे पण्डित रामप्रसाद शर्मा तत्पुत्र पण्डित घासीराम शर्मा तत्पुत्र पं. केदारनाथ शर्मा तस्य गृहे पुत्रो जातः पूर्वाभाद्रपदे चतुर्थ चरणे जन्मवशोत्तस्य जन्मनाम दीवानचन्द शर्मा सचेश्वर कृपया दीर्घायुष्मान् भवतु । तस्यराशिः

मीन, वर्ण विप्र,वश्य जलचर, योनिः अश्व, राशीश गुरु, गण मनुष्य, नाड़ी आद्य, वर्ग सप्त, एते गुणा विवाहादौ व्यवहारादौ च विचारणीयाः । शुभम् भूयात् । ।

अथ चन्द्र कुण्डली

१ ११
चं. के. १२ बृ.
श. १०
२
३ ९
४ सू.
रा. शु. ६
८
५ बुध ७ मंगल

अथ जन्म कुण्डली

११ ९
चं. १२ के.बृ.
१० श.
८
१
७ मंगल
२
४ सू.
रा. ६ शु.
३ ५ बुध

इसी रीत्यानुसार, जन्म समय के आधार पर जन्मपत्री बना कर लिखनी चाहिए।

लग्न-परीक्षा और ग्रहों का फल

शब्द मेषे वृषे सिंहे, मकरे च तथा तुले ।
अर्द्ध शब्दो घटे कन्या शेषे शब्द विवर्जयेत् ।।

टीका- मेष, वृष, सिंह, मकर और तुला- इन लग्नों में बालक का जन्म हो तो वह होते ही रोवे और कुम्भ, कन्या में रो कर चुप हो जा अर्थात् थोड़ा रोवे। अन्य लग्नों में बालक रोवे नहीं ।

शीर्षोदये विलग्ने मूर्धा प्रसवोऽन्यथोदये चरणौ ।
उभयोदये च हस्तौ शुभदृष्टः शोभनोऽन्यथा कष्टः ।।

टीका- ४ । ६ । ७ । ८ । ३ । ११ इन लग्नों में जन्म हो तो बालक शिर से पैदा हुआ । १२ लग्न में हाथों के बल, पहले दोनों हाथ आवें । १ । २ । ४ । ९ । १० इन लग्नों में पैरों की तरफ से बालक का जन्म कहे । लग्न पर शुभ-ग्रह की दृष्टि हो तो बिना कष्ट के हो और पाप-ग्रह की दृष्टि हो तो कष्ट से हुआ-ऐसा कहे ।

मीने मेषे च द्वे भार्ये चतुस्रो वृषकुम्भयोः ।
तुलायां सप्तकन्यायां वाणाश्च धनुकर्कयोः ।
अन्य लग्ने तथा तिस्रः सूतिकायां विधीयते ।।

टीका- मीन और मेष, लग्न में २ स्त्री । वृष और कुम्भ में ४ स्त्री । तुला और कन्या में ७ स्त्री । धनु और कर्क में ५ स्त्री । अन्य लग्नों में बालक के जन्म के समय प्रसूति-गृह में ३ स्त्री उपस्थित थीं- ऐसा कहे ।

शशि लग्ने समाधात्री ज्येगृहेशे दिगम्बरम् ।
तिस्रो वै मन्दिरे नार्यः बाला, वृद्धा युवास्तथा ।।

टीका- लग्न में जहाँ चन्द्रमा पड़े, उस बीच में जितने ग्रह हों, उतनी बाला, वृद्धा तथा युवा स्त्रियों की उपस्थिति कहे ।

पापे च विधवा नारी क्रूर ग्रहे कुमारिका ।
सौम्य ग्रहे च सौभाग्या सूतिकायां विधीयते ।।

टीका- लग्न और चन्द्रमा के बीच में जितने पाप ग्रह हों उतनी विधवा-स्त्री कहे । जितने क्रूर ग्रह हों उतनी कुमारी कहे और जितने शुभ ग्रह हों, उतनी सुहागिन स्त्रियाँ कहे ।

यत्र राहुस्तत्र शय्या मंगलः तत्र भङ्गदः ।
रविस्थाने दीपकश्च शनौ लौहश्च जायते ।।

टीका- जहाँ राहु हो वहाँ खाट कहे । जहाँ मंगल हो वहाँ पुरानी खाट या पावा फटी खाट कहे । जहाँ सूर्य हो वहाँ दीपक का स्थान कहे और जहाँ शनिश्चर हो; वहाँ लोहे की उपस्थिति कहे ।

उदयस्थेपि वा मंदे कुजे वाऽस्तं समागते ।
स्थिते वातः क्षपानाथे शशांक सुत शुक्रयोः ।।

टीका- यदि शनि लग्न में हो अथवा ७ वें मंगल हो या चन्द्रमा ३ । ६ । २ । ७ इन राशियों का होय- तो घर में जन्म नहीं हुआ था- ऐसा कहे ।

राशियों के स्थान

राशि- १ सिर, २ मुख, ३ स्तन, ४ हृदय, ५ उदर, ६ कंठ, ७ नाभि, ८

लिंग, ९ गुदा, १० जंघा, ११ घुटना तथा १२ पैर की सूचक हैं । इनमें से जन्म के समय जिस राशि में पाप-ग्रह हो, उसी जगह बालक के शरीर पर तिल या लहसुन का निशान बतावे ।

सिंहे कन्या धने मीने कर्कटे च तथा तुले ।
अंतरिक्षे भवेज्जन्म शेषे भूमौ च जायते ॥

टीका- सिंह, कन्या, धनु, मीन, कर्क, और तुला– इन लग्नों में बालक का जन्म शैय्या पर कहे या हाथों पर, अन्य लग्नों में पृथ्वी पर कहे ।

दशमे बुधजीवौ च केन्द्रस्थाने यदा भवेत् ।
सूर्यश्च तथा भौमश्च बालकस्य षडंगुलिः ॥
सव्यऽहस्तः तथा चैव दक्षिणः करमेव च ।
वामहस्ते भवेद्राज्यं सजातः कुलदीपकः ॥

टीका- दशवें स्थान बुध या गुरु हो या केन्द्र १ । ४ । ७ । १० में हो या सूर्य मंगल के संग में हो तो बालक के ६ अंगुली कहे । बायें या दायें पैर में और बायें हाथ में ६ अंगुली अच्छी होती हैं ।

तनुस्थाने यदा चन्द्रोऽथवा षष्ठे तथा भवेत् ।
बालकस्य भवेज्जन्म तैलं दीपे न दृश्यते ॥
दशमे शुक्रसौरी च पंचमे चैव चन्द्रमाः ।
तस्मिन् बाले च जाते वै दीपकं परिपूर्णकम् ।
खण्ड दीपं तथा बुधे अष्टमे च बृहस्पतौ ॥

टीका- तनु स्थान में या छठे स्थान में चन्द्रमा हो तो दीपक में तैल नहीं था। शुक्र-शनि दशवें स्थान हों और चन्द्रमा पाँचवें हो तो दीपक में तैल भरा हुआ था। बुध हो तो आधा दीपक तैल से भरा हुआ कहे । अष्टम बृहस्पति हो तो तैल भरा नहीं था- ऐसा कहे । जो लग्न के आरम्भ में जन्म हो तो बत्ती पूरी थी और जो मध्य मे हो तो आधी और अन्त में हो तो नहीं रही थी– ऐसा कहे ।

चरलग्ने करे दीपं स्थिरे तत्रैव संस्थितम् ।
द्विस्वभावे तथा लग्ने दीपं हस्ते प्रचालयेत् ॥

टीका- जो सूर्य चर राशि में हो या चर लग्न हो तो दीपक हाथ में उठाया हुआ कहे । स्थिर लग्न में, वहीं रक्खा हुआ कहे । द्विस्वभाव में, उठा कर वहीं धर दिया या बत्ती खाली हो, ऐसा कहना चाहिए ।

लग्नेन्दुमध्येशनिमिष्ठतैलं सूर्योभवेत्तस्य घृतस्यदीपं ।
शेषे ग्रहे च कटुतैलंदीपमेवं प्रसूतौ खलु दीपमाहुः ।।

टीका- जो लग्न में चन्द्रमा या शनि हो तो दीपक का तैल मीठा कहे । सूर्य हो तो घी का कहे, और कोई अन्य ग्रह हो तो कड़वे तैल का दीपक कहे ।

द्वादशे भवने भौमे वामनेत्र विनश्यति ।
द्वादशे रवि राहुश्च दक्षिणं चक्षु नाशयेत् ।।

टीका- १२ वे स्थान में मंगल हो तो बाँया नेत्र बिगड़ा कहे और १० वें सूर्य- राहु हो तो दाहिनी आँख का नाश कहे ।

शुक्रश्च तृतीये स्थाने सिंह मेषे बृहस्पती ।
दशमे अर्कभौमो च मूकौ भवति बालकः ।।

टीका- शुक्र से तीसरे स्थान में मेष या सिंह का गुरु और दशवें सूर्य या मंगल हो तो बालक गूंगा हो- ऐसा कहे ।

तुलालि कुम्भो अकुलीर लग्ने वाच्यं प्रसूता गृह पूर्व द्वारे ।
कन्याधनुर्मीननृयुग्मलग्ने स्याद्उत्तरा पश्चिमतो वृषे च ।
मेषे च सिंहे मकरे च याम्ये निगद्यतेसौभुवि द्वारदेशः ।।

टीका- तुला, वृश्चिक, कुम्भ, कर्क- इन सब लग्नों में से किसी में बालक का जन्म हो तो जच्चा के घर का दरवाजा पूर्व को बतावे । ६ । ९ । १२ । ३ में हो तो उत्तर को । २ में पश्चिम को और १ । ५ । १० में दक्षिण को दरवाजा कहे ।

रिपु स्थाने यदा चन्द्र षड्रात्रं नैव लंघते ।
अथवा षष्ठमासं च जातकाय विचारयेत् ।।

टीका- जिसके छठे स्थान में पाप-ग्रह के साथ चन्द्रमा हो तो जातक को ६ दिन तक कष्ट कहे अथवा वह ६ महीने तक जिये ।

लग्नस्थाने यदा सौरी रिपुस्थाने च चन्द्रमाः ।
कुजश्च दशमे स्थाने मृतको जायते पिताः ।।

टीका- लग्न में शनि, ६ में चन्द्रमा, १० वें मंगल हो तो उसके पिता की मृत्यु हो या कष्ट हो ।

रवि मंगल वारः स्यात् कृत्तिका भरणीयुता ।
श्लेषा छठ आठें चौदस्या सो उपजे कन्या धिया ॥
आप मरे या माय सतावे, कुलक्षय करे कलंक लगावे ।

टीका- रवि, शनि, मंगल- ये वार और कृत्तिका, भरणी आश्लेषा- ये नक्षत्रः ६ । ८ । १४- ये तिथि; जो इनमें कन्या का जन्म हो तो या तो कन्या मरे या माता मरे या कुलक्षय हो या कहीं कलंक लगे ।

आदित्ये नवमे तातो, माता चन्द्र चतुर्थके ।
भौमे तृतीये भ्राता स्यात् बुध तृतीये च मातुलः ॥

टीका- सूर्य से नौवें स्थान में पिता को देखे । चन्द्रमा से चौथे स्थान माता को देखे । मंगल से तीसरे स्थान भाई को देखे । बुध से तीसरे स्थान मामा को देखे । अच्छा ग्रह हो तो अच्छा फल, बुरा हो तो बुरा फल कहे ।

चौथ चतुर्दशी नवमी जानो, रवि गुरु मंगल को पहिंचानो ।
जो तीनों में उत्तरा लहै, निश्चय बीज पराया कहै ॥

टीका- ४ । १४ । ९ ये तिथिः सूर्य गुरु, भौम-- ये वार, और उत्तरा नक्षत्र में बालक का जन्म हो तो और का बिन्द कहे ।

चतुष्पद गते भानौ शेषैर्वीर्य समन्वितैः ।
द्वितनुस्थः चस्व यमलौ भव कोशवेष्टिता ॥

टीका- सूर्य चतुष्पद राशि १ । २ । ६ परार्ध मकर पूर्वार्ध में होवे और सब ग्रह द्विस्वभाव में बलवान होंय तो दो बालकों का जन्म कहे ।

षष्ठाष्टमे च मूर्तौ च राहुश्चैव भवेद्यदि ।
चतुर्वर्षे भवेन्मृत्युः रक्षति यदि शंकरः ॥

टीका- ६ । ८ । १२ राहु हो तो चौथे वर्ष में मृत्यु कहे । महादेव भी रक्षा करें तो भी न जीवे ।

चतुर्थे च गतो राहुः अथवा दशमे भवेत् ।
तस्य बालक जन्मेषु दशमासे न जीवति ॥

टीका- चौथे या दशवें स्थान पर राहु हो तो दशवें महीने में कष्ट कहे ।

मीने च लग्ने गुरु भार्गवौ च मेषे च सूर्यो मकरे कुजः स्यात् ।
महीपतिः छत्र धरोऽपि बालः मान्यो भवेद्वापि धनाढ्यतां गतः ।

टीका- जो मीन लग्न हो और उसमें गुरु शुक्र पड़े हों और मेष राशि का सूर्य पड़े, मकर का मंगल पड़े तो वह बालक नृप हो या राजा का मंत्री हो या धनाढ्य हो ।

लग्ने शुक्रो बुधोयस्य यस्य केन्द्रे बृहस्पति ।
दशमेऽङ्गारको यस्य स जातो कुलदीपकः ॥

टीका- लग्न में शुक्र या बुध हो, केन्द्र १ । ४ । ७ । १० में गुरु हो और दशम भाव में मंगल हो तो बालक कुल-दीपक होता है ।

लग्ने शुक्रो बुधो नास्ति नास्ति केन्द्रे बृहस्पतिः ।
दशमेऽङ्गारको नास्ति स जातः किं करिष्यति ॥

टीका- लग्न में शुक्र, बुध न हो और केन्द्र में गुरु भी न हो और १० वें मंगल भी न हो तो जातक दूसरों पर आश्रित रहे ।

चतुर्थे कर्मणि सोमः सुखेन प्रसवो भवेत् ।
त्रिकोणेऽस्तं गतोः पापाः कष्टतः प्रसवो भवेत् ॥

टीका- लग्न से ४ वा १० स्थान में चन्द्रमा हो तो माता को कष्ट न हो और जो ९ । ५ । ७ पाप-ग्रह हों तो माता को कष्ट हो ।

कृष्णपक्षे दिवा जन्म शुक्ल पक्षे यदा निशि ।
षष्ठेऽष्टमे भवेत् चन्द्रः सर्वारिष्टं निवारयेत् ॥

टीका- जो कृष्ण प्रक्ष के दिन में और शुक्ल पक्ष की रात्रि में बालक का जन्म हो और ६ और ८ में चन्द्रमा हो तो सब कष्ट दूर करे ।

अर्कसुतः कुजो राहुः पंचमस्था प्रसूतिवा ।
लशुनं वामकुक्षौ च गर्गाचार्येण भाषितम् ॥

टीका- शनि, राहु, मंगल– ये ग्रह पांचवें स्थान में हों तो बाँई कोख में लहसुन कहे– गर्गाचार्य का ऐसा कहना है ।

सिंहे लग्ने यदा जाता यामित्रे च शनैश्चरः ।
ब्रह्मापुत्रोऽपि संजातो म्लेच्छो भवति बालकः ॥

टीका- जो सिंह लग्न में बालक जन्म हो और सातवें स्थान में शनि हो तो ब्राह्मण के यहां पैदा हुआ बालक भी मलेच्छ होता है ।

लग्नस्थाने यदा शौरिः षष्ठे भवति चन्द्रमाः ।
कुजश्च सप्तमे स्थाने पिता तस्य न जीवति ॥

टीका- लग्न में शनि, ६ चन्द्रमा, ७ मंगल हो तो पिता की मृत्यु हो ।

दशमस्थाने यदा भौमः शत्रुक्षेत्रस्थितो यदि ।
मृतये तस्य बालस्य पिता शीघ्रं न जीवति ॥

टीका- १० वें स्थान में मंगल हो और शत्रु की राशि में हो तो उस बालक का पिता शीघ्र मृत्यु को प्राप्त हो ।

त्रिभिरुच्चैर्भवेद्राजा त्रिभिः स्वस्थानि मन्त्रिणां ।
त्रिभिर्नीचैर्भवेद्दासः त्रिभिरस्तैर्भवेत् शठः ॥

टीका- जिसके तीन ग्रह उच्च के पड़े हों वह राजा होता है और जो तीन ग्रह अपने स्थान के हों तो मंत्री और नीच के हों तो दास हो और जो ग्रह अस्त के पड़े हों तो मूर्ख होता है ।

जन्मलग्ने यदा भौमश्चाष्टमे च बृहस्पतिः ।
वर्षे च द्वादशे मृत्युः यदि रक्षति शंकरः ॥

टीका- जो जन्म लग्न में मंगल हो और ८ में बृहस्पति हो तो बारह वर्ष में मृत्यु हो। शंकर भी रक्षा करें तो भी न जीवे ।

चतुर्थे च यदा राहुः षष्ठे चन्द्रोऽष्टमेऽपि वा ।
सद्य एव भवेन्मृत्युः शंकरो यदि रक्षति ॥

टीका- चौथे स्थान में राहु हो; ६, ८ चन्द्रमा हो तो बालक की तत्काल मृत्यु हो । महादेव भी रक्षा करें तो भी न जीवे ।

लग्ने क्रूरश्च भवने क्रूरगः पातलगे यदा ।
दशमे भवने क्रूरः कष्टे जीवति बालकः ॥

लग्न और क्रूर ग्रह चौथे या दशवें स्थान में हों तो भी बालक कष्ट से जीवे।

शनिक्षेत्रे यदा भानुर्भानुक्षेत्रे यदा शनिः ।
द्वादशे वत्सरे मृत्युर्बालकस्य न संशयः ॥

टीका- शनि के क्षेत्र में सूर्य और सूर्य के क्षेत्र में शनि हो तो १२ वर्ष में अरिष्ट हो ('क्षेत्र' स्थान या घर को कहते हैं) ।

मूर्तौ शुक्रबुधौ यस्य केन्द्रे चैव बृहस्पतिः ।
दशमेऽङ्गारकश्चैव स ज्ञेयः कुलदीपकः ॥

टीका- जिसके जन्म लग्न में बुध, शुक्र हों, केन्द्र में गुरु हो और १० वें स्थान में मंगल हो तो वह बालक कुल में दीपक हो ।

पंचमे च निशानाथो त्रिकोणे यदि वाक्पतिः ।
दशमे च महीपुत्रः परमायुः स जीवति ॥

टीका- लग्न से चन्द्रमा ५ वें स्थान हो और त्रिकोण में वृहस्पति हो और ५।६।१० में मंगल हो तो उसकी परमायु अर्थात् सौ वर्ष की आयु हो।

धनस्थाने यदा शौरिः सैंहिकेयो धरात्मजः ।
शुक्रो गुरुः सप्तमे वा अष्टमे रवि चन्द्रमाः ॥
ब्रह्मपुत्रो भवेद्वापि वेश्यासु च सदा रतिः ।
प्राप्तो विंशतिमे वर्षे म्लेच्छो भवति नान्यथा ॥

टीका- दूसरे स्थान में शनि, राहु मंगल हों और सातवें स्थान में शुक्र, गुरु हों और ८वें स्थान में रवि, चन्द्र हों तो ब्राह्मण का पुत्र होने पर भी वेश्यागामी हो । २० वर्ष की उम्र में म्लेच्छ हो जाये ।

अजे सिंहे कुजे शौरिर्लग्ने तिष्ठति पंचमे ।
पितरं मातरं हन्ति भ्रातरं हि शिशोः क्रमात् ॥

टीका- जो रवि, राहु, मंगल, शनि- ये ग्रह १। ५ स्थान में पड़ें तो कष्ट देते हैं । शनि, रवि हो तो पिता को कष्ट दे । राहु माता को, मंगल भ्राता को और शनि बालक को कष्ट करता है ।

भौमक्षेत्रे यदा जीवः षष्ठाष्टासु च चन्द्रमाः ।
वर्षेऽष्टमेपि मृत्युर्वै ईश्वरो यदि रक्षति ॥

टीका- मंगल के क्षेत्र में बृहस्पति हो और ६ । ८ स्थान में चन्द्रमा हो तो ८ वर्ष में बालक को कष्ट हो । जो ईश्वर ही रक्षा करे तो ही बचे ।

दशमेऽपि यदा राहुर्जन्मलग्ने यदा भवेत् ।
वर्षे तु षोडशे ज्ञेयो बुधैर्मृत्युर्नरस्य च ॥

टीका- १० वें राहु अथवा लग्न में राहु हो तो १६ वें वर्ष में अरिष्ट जानना।

षष्ठे च भवने भौमः राहुश्च सप्तमे भवेत् ।
अष्टमे च यदा शौरिः तस्या भार्या न जीवति ॥

टीका- छठे स्थान में मंगल हो, सातवें स्थान में राहु हो, आठवें स्थान में शनि हो तो स्त्री को कष्ट हो । कन्या की जन्मपत्री में पाप ग्रह अथवा क्रूर ग्रह सातवें स्थान में हो तो ये वैधव्य-योग करते हैं।इनका देखना बहुत आवश्यक है।

शुभ-अशुभ ग्रह देखना

चन्द्रमा, बुध, बृहस्पति, शुक्र- ये शुभ ग्रह हैं और सूर्य, मंगल, शनि, केतु- ये पाप और क्रूर ग्रह हैं ।

स्त्री-कुण्डली फलम्

सप्तमे भार्गवे जाता कुलदोषकरी भवेत् ।
कर्कराशिस्थिते भौमे शौरो भ्रमति वेश्मसु ॥

टीका- सातवें घर में जिस स्त्री के शुक्र हो, वह कुल को दोष लगावे । कर्क राशि में मंगल या शनि हो तो बन्ध्या हो या घर-घर वास करे ।

बाल्ये च विधवा भौमे पतित्याज्या दिवाकरे ।
त्रस्मै शौरिः पापदृष्टे कन्यैव समुपैष्यति ॥

टीका- जिस स्त्री के ७ वें स्थान पर भौम हो, उसको बाल-विधवा योग क. हे, सूर्य हो तो पति का त्याग करे, शनि हो या पाप-ग्रह की दृष्टि हो तो कन्या व ग विवाह बड़ी उम्र में हो ।

एक एव सुरराज पुरो वा केन्द्रगोऽपि नव पंचमगो वा ।
शुभ ग्रहस्य विलोक्यतो वा शेषखेचरबले न किंवा ॥

टीका- जिस स्त्री के लग्न में गुरु हो और केन्द्र १ । ४ । ७ । १० में हों या ६ । ५ में हों और शुभ ग्रहों की उन पर दृष्टि हो तो फिर खोटे ग्रह कुछ नहीं कर सकते ।

विशेष- सूर्य से नवें स्थान पिता का, चन्द्रमा से चौथे स्थान माता का, मंगल से तीसरे स्थान भाई का, शनि से आठवें स्थान मत्यु का, बुध से छठे स्थान रोगों का तथा मामा और शत्रु का, गुरु से पाँचवें स्थान सन्तान का, शुक्र से ७ वें स्थान स्त्री का हाल कहे । जो शुभ ग्रह पड़े अच्छा कहे । पाप या क्रूर ग्रह पड़े तो खोटा कहे । यदि किसी स्थान का स्वामी दूसरे स्थान को देखता हो तो उस स्थान के शुभ ग्रह की वृद्धि करेगा तथा पाप और क्रूर ग्रह का नाश करेगा ।

मूर्तौ करोति विधवां दिनकृत् कुजश्च राहुर्विनष्टतनयां रविजो दरिद्राम् । शुक्रः शशाङ्कतनयश्च गुरुश्च साध्वीमायुः क्षयं प्रकुरुतेऽत्र च शर्व राशिः ॥

टीका- जिस स्त्री के लग्न में सूर्य और मंगल हों, वह स्त्री विधवा होती है और राहु केतु सन्तान का नाश करते हैं, शनि हो तो दरिद्रा होती है, शुक्र या बुध अथवा बृहस्पति होय तो साध्वी (भली) हो और चन्द्रमा हो तो आयु कम करता है ।

कुर्वन्ति भास्करशनैश्चर राहुभौमाः दारिद्र्यदुःखमतुलं सततं द्वितीये । वित्तेश्वरीमविधवां गुरु शुक्रसौम्यः नारीं प्रभूततनयां कुरुते शशांकः ॥

टीका- सूर्य, शनि, राहु, केतु और मंगल- यह ग्रह दूसरे स्थान में स्थित हों तो वह स्त्री अत्यन्त दरिद्रा और दुःखिता होती है । बृहस्पति, शुक्र या बुध स्थित हों तो वह स्त्री सौभाग्यवती और अधिक धनवती होनी चाहिए और चन्द्रमा बहुत पुत्रवती करता है ।

शुक्रेन्दुभौमगुरुसूर्यबुधस्तृतीये कुर्युः सतीं बहुसुतां धनभोगिनीं च । कन्यां करोति रविजो बहु वित्तयुक्ताम् पुष्टिं करोति नियतं खलुसैंहिकेयः ॥

टीका- जिस स्त्री के तीसरे स्थान में शुक्र, चन्द्रमा, मंगल, बृहस्पति, सूर्य अथवा बुध इनमें से कोई ग्रह बैठा हो तो वह स्त्री पतिव्रता, अनेक पुत्रों वाली और धन सम्पन्न होती है। शनि बैठा हो तो उसके विशेष धन होता है । उसी स्थान में राहु, केतु भी विद्यमान हों तो शरीर को पुष्ट करते हैं ।

स्वल्पं पयः क्षितिजसूर्यसुते चतुर्थे सौभाग्यशीलरहितां कुरुते शशांकः । राहुः सपत्निसहितां क्षिति वित्तलाभम् दद्यात्बुधः सुरगुरुर्भृगुजश्च सौख्यम् ॥

टीका-चतुर्थ स्थान में मंगल अथवा सूर्य स्थित हो तो उस स्त्री के दुग्ध स्वल्प अर्थात् थोड़ा होता है । चन्द्रमा सौभाग्य और सुशीलता का नाश कता है । राहु, केतु हो तो उसके कन्या अधिक होती हैं और उसको भूमि धन का लाभ होता है। बुध, बृहस्पति और शुक्र हो तो उसे अनेक प्रकार के सुख की प्राप्ति होती है।

नष्टात्मजां रविकुजौ खलु पंचमस्थौ, चन्द्रात्मजं बहुसुतां गुरुभार्गवौ च । राहुर्ददाति मरणं रविजश्च रोगं, कन्यानिधानमुदरं कुरुते शशांकः ॥

टीका- पंचम स्थान में यदि सूर्य अथवा मंगल हो तो संतान को कष्ट करता है । बुध, बृहस्पति और शुक्र हो तो वह स्त्री अनेक पुत्रों वाली होती है । राहु, केतु मरण करता है । शनिश्चर प्रबल रोग उत्पन्न करता है और यदि चन्द्रमा उक्त स्थान में हो तो कन्या अधिक होती हैं ।

षष्ठे शनैश्चरकुजौ रविराहुजीवाः । नारीं करोति सुभगां पतिसेविनीं च । चन्द्रः करोति विधवामुशना दरिद्रां वेश्यां शशांकतनयः कलहःप्रियां वा ॥

टीका- जिस स्त्री के छठे स्थान में शनिश्चर, सूर्य, राहु, केतु, बृहस्पति अथवा मंगल इनमें से कोई ग्रह बैठा हो तो वह स्त्री सदाचारिणी और पति की अत्यन्त सेवा करने वाली होती है । छठे स्थान में चन्द्रमा हो तो विधवा करता है और उक्त स्थान में शुक्र के स्थित होने से वह स्त्री दरिद्रा होती है । यदि उस स्थान में बुध बैठा हो तो वह स्त्री वेश्या अथवा नित्य कलह करने वाली होती है ।

सूर्याऽऽरशौरिशशिसौम्यगुरुश्च शुक्रः नारीं करोति सततं निज जन्मलग्नात् । ईशैर्विहीनविधवां च जरासमेतां सौन्दर्यभर्तु-सुखभोगयुतां क्रमेण ॥

टीका- जिस स्त्री के सूर्य सप्तम हो तो वह पति को त्याग दे, मंगल सप्तम हो तो विधवा हो, शनि हो तो बहुत बड़ी का विवाह हो, चन्द्रमा हो तो सुन्दर हो, बुध हो तो सौभाग्यवती, बृहस्पति हो तो सर्व सुख वाली, शुक्र हो तो भोग भोगने वाली भाग्यवती हो ।

स्थानेऽष्टमे गुरुबुधौ नियतं वियोगं मृत्युं शशांक भृगवश्चतथैव राहुः । सूर्यं करोति विधवां सुभगां महीजः सूर्यात्मजौ बहुसुतां पतिवल्लभां च ॥

टीका- जिस स्त्री के अष्टम स्थान में बृहस्पति अथवा बुध बैठे हों उसका अपने पति से वियोग रहता है । सूर्य विधवा करता है, मंगल सदाचरण करने वाली बनाता है और शनिश्चर उस स्थान में हो तो उसके पुत्र बहुत हों तथा वह स्त्री अपने पति की प्यारी होती है ।

चन्द्रात्मजौ भृगुदिवाकरसौम्यधिष्णाः धर्मस्थिता विदधते किल धर्मनिष्ठाम् । भौमोरुजं सूर्यसुतश्च रण्डा नारी प्रसूततनयां कुरुते शशांकः ॥

टीका- जिस स्त्री के बुध, सूर्य और बृहस्पति नवम स्थान में हों तो उस स्त्री की बुद्धि धर्म आचरण करने वाली हो । मंगल रोग उत्पन्न करता है, शनिश्चर विधवा करता है तथा चन्द्रमा सन्तान उत्पन्न करता है ।

राहुः करोति विधवां यदि कर्मणि स्यात् पापे रतिं दिनकरश्च शनैश्चरश्च । मृत्युं कुजोऽर्थरहितां कुलटां च-चन्द्रः शेषा ग्रहा धनवतीं सुभगां च कुर्य्युः ॥

टीका- कर्म अथवा दशम स्थान में जिस स्त्री के राहु स्थित हो वह विधवा होती है, सूर्य और शनि पाप में प्रीति करते हैं, मंगल धन का नाश और मृत्यु करता है, चन्द्रमा उसी स्त्री को कुलटा, पर-पुरुष से प्रीति एवं अन्य ग्रह धनवती और सुभगा करते हैं ।

आयुः स्थितश्च तपनः कुरुते सुपुत्रां पुत्रार्थिनीं च महिजोऽर्थवतीं हि चन्द्रः । आयुष्मतीं सुरगुरुश्च तथैव सौम्यो राहुः करोति विधवां भृगुरर्थयुक्ताम् ॥

टीका- जिस स्त्री के ग्यारहवें स्थान में सूर्य हो तो वह सुपुत्रवती होती है, उसी स्थान में मंगल पड़ा हो तो उसे पुत्र की सदैव अभिलाषा बनी रहे । चन्द्रमा धनवती करता है । बृहस्पति आयु की वृद्धि करते हैं और बुध, राहु, केतु विधवा कर देते हैं तथा शुक्र अनेक प्रकार से धन का लाभ कराते हैं ।

अन्तेगुरुर्हि विधवां दिनकृद्दरिद्रां चन्द्रोधनव्ययकरीं कुलटां च राहुः । साध्वी भवेत् भृगुबुधो बहुपुत्र पौत्रान् प्राणप्रसक्त हृदयां सुहृदां कुजश्च ॥

टीका- बारहवें स्थान में जिस स्त्री के बृहस्पति हों तो विधवा करते हैं । सूर्य दरिद्रा (धनहीन) कर देता है । चन्द्रमा धन खर्च कराता है । राहु, केतु कुलटा (व्यभिचारिणी) करते हैं । यदि उस स्थान में शुक्र अथवा बुध हो तो वह स्त्री साध्वी (पतिव्रता) होती है और मंगल अनेक पुत्र-पौत्रों से युक्त करके सुहृदयी बनाता है ।

छठी दसूटन देखना

टीका- ६ दिन की छठी और दस दिन का या ग्यारह दिन का दसूटन । शुभ वार हो । जन्म पत्री में जहाँ चन्द्रमा पड़े, वही उसकी राशि समझनी चाहिए ।

वर्ग देखना

अवर्गो गरुड़ो ज्ञेयो विडालः स्यात्कवर्गकः ।
चवर्गः सिंहनामास्याद् टवर्गः कुक्कुरः स्मृतः ॥
सर्पाख्यः स्यात्तवर्गोऽपि पवर्गो मूषकः स्मृतः ।
यवर्गो मृगनामास्यात्तथा मेषः शवर्गकः ॥

वर्ग चक्रम्

अ	क	च	ट	त	प	य	श
आ	ख	छ	ठ	थ	फ	र	ष
इ	ग	ज	ड	द	ब	ल	स
उ	घ	झ	ढ	ध	भ	व	ह
ए	ङ	ञ	ण	न	म	०	०
गरुड़ वर्ग	बिलाव वर्ग	सिंह वर्ग	कुत्ता वर्ग	सर्प वर्ग	मूषक वर्ग	मृग वर्ग	मेंढा वर्ग

वर्ग वैर देखना

वैरं मूषकमार्जारं तद्वद् वैरं मृगसिंहयोः ।
वैरं गरुड़सर्पश्च यद्वद् वैरं श्वानमेषयोः ॥

टीका- मूसे का और बिलाव का वैर । मृग का और सिंह का वैर । गरुड़ का और सर्प का वैर । कुत्ते का और मेंढे का वैर ।

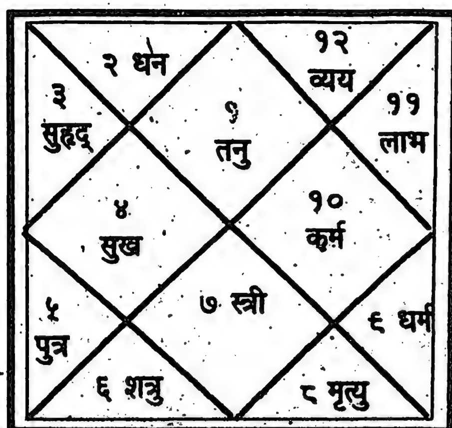
वर्ग फल देखना

स्ववर्गात् पंचमे शत्रुश्चतुर्थे मित्रसंज्ञकः ।
उदासीनस्तृतीयश्च वर्ग भेदस्त्रिधोच्यते ॥

टीका- अपने वर्ग से पाँचवें वर्ग हो तो वैर जानो । चौथे हो तो मित्र, तीसरे हो तो उदासीन जानना ।

बारह स्थानों के नाम

(द्वादश भाव संज्ञा)



तनुर्धनं सुहृत् सौख्यं, पुत्र शत्रुः कलत्रकाः ।
मरणं धर्म कर्माय व्ययो द्वादश संख्यकाः ॥

तनु १, धन २, सुहृत् ३, सुख ४, पुत्र ५, अरि ६, योषितः ७, निधनं ८, धर्म ९, कर्म १०, आय ११, तथा व्यय १२- ये बारह भाव होते हैं ।

टीका- इन बारह स्थानों के नाम ऊपर के कुंडली चक्र में देखकर जानो ।

ग्रहों की दृष्टि

टीका- जिस स्थान को जो ग्रह देखता है, उसका नाम दृष्टि है ।

पादैकदृष्टिर्दशमे तृतीये द्विपाददृष्टिर्नवपंचमे वा ।
त्रिपाददृष्टिश्चतुरष्टके च सम्पूर्णदृष्टिः सम सप्तके च ॥
शनेस्त्वेकादशे पूर्णा दृष्टिर्जीवस्य कोणके ।
बुधैर्ज्ञेया पूर्णदृष्टिः भौमस्य चतुरष्टके ॥

टीका- सब ग्रह अपने स्थान से तीसरे व दसवें घर में एकपाद दृष्टि से देखते हैं । नवें व पांचवें घर में दो पाद दृष्टि, चौथे व आठवें घर में तीन पाद दृष्टि और सब ग्रहों की सातवें घर में सम्पूर्ण दृष्टि होती है । शनि, गुरु, भौम इनकी सम्पूर्ण दृष्टि में ये भेद हैं कि ये ग्रह शनि तीसरे व दशवें घर में भी, गुरु पांचवें व नवें घर में भी तथा मंगल चौथे व आठवें घर में भी सम्पूर्ण दृष्टि से देखता है।

ग्रहों की अवधि

मासं शुक्रबुधादित्याश्चन्द्रः सपादिनद्वयम् ।
भौमस्त्रिपक्षं जीवोऽब्दं सार्द्धवर्षद्वयं शनिः ।।
राहुः केतु सदाभुक्ते सार्द्धमेकन्तु वत्सरम् ।

टीका- सूर्य, शुक्र, बुध, एक-एक महीना एक राशि पर भोग करते हैं अर्थात् रहते हैं । चन्द्रमा सवा दो दिन रहता है । मंगल डेड़ महीने, बृहस्पति एक वर्ष, शनिश्चर ढाई वर्ष और राहु केतु डेढ़-डंढ़ वर्ष भोग करते हैं ।

नवग्रहों की जाति

ब्राह्मणौ जीवशुक्रौ च क्षत्रियौ भौमभास्करौ ।
सोमसौम्यौ विशौ प्रोक्तौ राहुमंदौ तथा सुरौ ।।

टीका- शुक्र, बृहस्पति की ब्राह्मण जाति है । मंगल, सूर्य की क्षत्रिय । बुध, चन्द्रमा की वैश्य और शनिश्चर, राहु, केतु इनकी दैत्य जाति है ।

नव ग्रहों के रङ्ग

रक्तावङ्गारकादित्यौ श्वेतौ शुक्रनिशाकरौ ।
हरित्ः बुधो गुरुः पीतः शनिः कृष्णस्तथैव च ।
राहु केतुस्तथा धूम्रं कारयेच्च विचक्षणः ।

टीका- मंगल, सूर्य इनका लाल रंग । चन्द्रमा, शुक्र का सफेद रंग । बृहस्पति का पीला, बुध का हरा, शनि का काला, राहु-केतु का धुएं जैसा । ग्रहों के स्थान- सूर्य शरीर, चन्द्रमा मन, मंगल सत्व, बुध वाणी, बृहस्पति ज्ञान व सुख, शुक्र वीर्य अर्थात् कामदेव, शनि दुःख । ग्रहों के बल-बलवान् ग्रह पुष्ट और निर्बल ग्रह बलहीन होते हैं ।

ग्रहों के अधिकारी गण

राजा रविः शशधरश्च बुधः कुमार सेनापति
क्षितिसुतः सचिवौ सितस्यौ । भृत्यस्तथा तरणिजः
सवला ग्रहाश्च कुर्वन्ति जन्म समये निजमेव रूपम् ॥

सूर्य राजा, चन्द्रमा मंत्री, मंगल सेनापति; बुध, युवराज, गुरु, शुक्र मंत्री; शनि दूत है। फल देने वाला ग्रह है, ऐसे ही अधिकारी के द्वारा फल देता है ।

राशियों की भाव संज्ञा

मेष वृष धनुर्सिंहाश्चतुष्पादास्युः मकरपूर्वार्धभागश्च ।
कीटः कर्कटराशिः सरीसृपो वृश्चिकः कथितः ॥
मकरस्यापश्चिमार्ध ज्ञेयो मीनश्च जलचर ख्यातः ।
मिथुन तुला घटकन्या द्विदाख्या धनु पूर्व भागश्च ॥

१ शीर्ष २ मुख ३ बाहु ४ हृदय ५ उदर ६ कीट ७ नाभि ८ लिंग ६ गुदा १० जंघा ११ जानु १२ चरणानि ।

एक चर, दूसरी स्थिर, तीसरी द्विस्वभाव– इसी प्रकार राशियों को गिनें । इनकी यही तीन संज्ञा हैं ।

बारह राशियों के रंग

१ अरुण, २ शीतल, ३ हरित, ४ पाटल, ५ पांडु, ६ चित्रा, ७ श्वेत, ८ काला, ६ पूर्वार्द्ध सुवर्ण, उत्तरार्द्ध पीत, १० पिंगल, ११ विचित्र, १२ भूरा ।

टीका– मेष का रंग लाल, वृष का कपूर, मिथुन का हरा, कर्क का गुलाबी, सिंह का पीला, कन्या का चित्र विचित्र जैसा, तुला का सफेद, वृश्चिक का काला, धनु का पीला, मकर का नेवले जैसा, कुम्भ का भी नेवले जैसा और मीन का मछली जैसा होता है ।

स्वामी देखना

मेषवृश्चिकयोर्भौमः शुक्रो वृषतुलाधिपः ।
बुधः कन्या मिथुनयोः पतिः कर्कस्य चन्द्रमाः ॥
स्वामी मीनधनुर्जीवः शनिर्मकरकुम्भयोः ।

सिंहस्याधिपतिः सूर्यः कथितो गणकोत्तमः ॥
कन्या राहोर्गृहं प्रोक्तं केतोश्च मीनसंज्ञकम् ।

१	२	६	६	१०	४	५	६	१२
८	७	३	१२	११	०	०	०	०
भौम स्वामी	शुक्र स्वामी	बुध स्वामी	गुरु स्वामी	शनि स्वामी	चन्द्र स्वामी	सूर्य स्वामी	राहु स्वामी	केतु स्वामी

उच्च नीच ग्रह देखना

रविर्मेषे तुले नीचौ वृषे चन्द्रस्तु वृश्चिके ।
भौमश्च नक्रे कर्के च स्त्रियां सौम्यो झषस्तथा ॥
गुरुः कर्के च मकरे च मीने कन्ये सितस्य च ।
मन्दस्तुलायां मेषे च कन्या राहुर्ग्रहस्य च ॥
राहुर्युग्मे च चापे च तमोवत् केतुजं फलम् ।
प्रोक्तं गृहाणामुच्चत्वं नीचत्वं च क्रमाद् बुधैः ॥

ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	राहु	केतु
उच्च	१	२	१०	६	४	१२	७	३	९
नीच	७	८	४	१२	१०	६	१	९	३

टीका- जिस राशि पर जो ग्रह उच्च का होता है, उससे वही ग्रह छठी राशि पर नीच का होता है ।

ग्रहों के दान

सूर्याय धेनुं ताम्रं च गोधूमं रक्तचन्दनम् ।
चन्द्रं शंखं चन्दनं च सितवस्त्रं च तण्डुलम् ॥
कुज वस्त्र प्रदातव्या रक्तवस्त्र गुडौदनम् ।
बुधे कर्पूरमुग्धे च हरितवस्त्र हरिन्मणिम् ॥

पीतवस्त्र द्वयं जीवो हरिद्रा चणकं मणिम् ।
अश्वं शुक्रः सितं देयाच्छुक्ल धान्यानि यानि च ॥
शनौ तैलतिले देयात्कृष्ण गोदानमुत्तमम् ।
राहुश्च महिषी छागा माषाश्च तिलसर्षपौ ॥
अजामेषश्च दातव्यौ केतुश्चान्नं च मिश्रितम् ।
स्वर्णगो-विप्र पूजाभिः सर्वेषु शान्तिरुत्तमा ॥

ग्रह-दान-वस्तु चक्रम्

सूर्य	गुड़, लाल गेहूँ, लाल कपड़ा, सोना, ताँबा, लाल चन्दन, लाल फूल, घृत, केशर, मूंगा, लाल गौ, माणिक यानी मणि कुसुम्भ ।
चन्द्र	सफेद चावल, कपूर, चांदी, घृत, श्वेत चन्दन, श्वेत वस्त्र, दही, श्वेत फूल, बूरा, मोती, शंख, मिश्री, सफेद बैल ।
मंगल	मूँगा, लाल गेहूँ, ताँबा, गुड़, लाल कनेर का फूल, घृत, लाल कपड़ा, लाल चन्दन, मसूर, लाल बैल, सोना, केशर, कस्तूरी ।
बुध	मूँग, काँसी का पात्र, सोना, घृत, हाथी दाँत, हरा वस्त्र, हरी मणि, हरा फूल, हरे फल, मिश्री, पन्ना, खांड़, कपूर, शस्त्र ।
बृहस्पति	हल्दी, पुस्तक, पीला कपड़ा, घृत, पीले फूल, चने की दाल, पुखराज सोना, घोड़ा, शक्कर, कांसी, पीला फल, केशर ।
शुक्र	सफेद कपड़ा, चावल, गाय, सोना, चांदी, सफेद घोड़ा, शंख, सफेद चन्दन, घृत, बूरा, हीरा, दही, मिश्री, सफेद फूल ।
शनि	उड़द, तिल, तैल, काला कपड़ा, भैंस, लोहा, काले जूते, काली गौ, काला कम्बल, काला फूल, नीलम, सोना, कस्तूरी ।
राहु	काली गौ, तिल, तैल, काला कपड़ा, लोहा, घोड़ा, सरसों, बकरी, सतनजा, नील, काला कम्बल, काला फूल सोना, शीशा ।
केतु	कंड, तिल, तैल, सोना, कस्तूरी, मेंढा, छुरी, सतनजा, काला कम्बल, लोहा, काले फूल । राहु, केतु का दान बुध या शनिवार को करे।

टीका- साधु, ब्राह्मणों और मूर्खों को भोजन कराने, पीपल की पूजा करने, वेदपाठी ब्राह्मण को प्रणाम करने, गुरुजनों की आज्ञा पालन, कथा के पढ़ने-सुनने तथा हवन, दान, जप करने सभी ग्रह सब प्रसन्न होते हैं ।

होरा देखना

वारातु षष्ठ षष्ठस्य हीरा सार्द्ध द्विनाडिकाः ।
अर्कः शुक्रो बुधश्चन्द्रो मन्दो जीवो धरासुतः ॥
गुरोर्विवाह गमने भृगुपुत्र शुभावहाः ।
ज्ञाने सौमस्य वै चन्द्रः सर्वकार्ये शुभप्रदः ॥
युद्धे तु भूमिपुत्रस्य सेवायां भूपतेः रवेः ।
धनं च ये तु मन्दस्य शुभा होरा प्रकीर्त्तिता ॥
यस्य ग्रहस्य वारे तु यत्कर्म्म मुनिभिः स्मृतम् ।
कालहोरा सुतस्य स्यात् तत्कर्म्म च शुभप्रदम् ॥

टीका- जिस दिन जो वार हो, उस वार की होरा २॥ घड़ी रहती है । फिर छठे वार की होरा २॥ घड़ी । जैसे- रविवार से शुक्र की २॥ घड़ी, फिर २॥ घड़ी बुध की, फिर २॥ घड़ी चन्द्रमा की, फिर २॥ घड़ी शनि की, फिर २॥ घड़ी गुरु की तथा फिर २॥ घड़ी मंगल की । इस रीति से सब दिन की होरा जानो । सोमवार को पहले चन्द्रमा की २॥ घड़ी दिन चढ़े तक होरा रहती है, फिर छठे ग्रह की, फिर उसके छठे की, ऐसे ही दिन-रात में २४ होरा सातों वार की होती हैं । जरूरी कार्य जिस वार में करना लिखा है, उस दिन वह वार न हो तो उसकी होरा में कर लें । जो भी वार हो, २॥ घड़ी को पहले उसकी होरा होती है, फिर छठे २ की होती है । गुरु की होरा में विवाह शुभ है । यात्रा में शुक्र की, ज्ञान-कार्य में बुध की, अन्य सभी कार्यों में चन्द्रमा की, युद्ध में मंगल की, राज-सेवा में सूर्य की तथा धन एकत्र करने में शनि की होरा शुभदायक होती है ।

ग्रह जप संख्या

रवेः सप्त सहस्राणि चन्द्रस्यैकादशैव तु ।
भौमे दशसहस्राणि बुधे चाष्टसहस्रकम् ॥

एकोनविंशतिर्जीवे शुक्रस्यैकादशैव तु ।
त्रयोविंशति मन्दे च राहोरिष्टादशैव तु ।।
केतोः सप्तसहस्राणि जपसंख्याः प्रकीर्तिताः ।।

टीका- सूर्य को जाप ७०००, चन्द्रमा का ११०००, मंगल का १००००, बुध का ८०००, बृहस्पति का १९०००, शुक्र का ११०००, शनि का २३०००, राहु का १८००० तथा केतु का ७००० । नव ग्रहों के जाप इस संख्या में करने चाहिए ।

ग्रह-दान समय

बुधस्य घटिका पञ्च शौरिर्मध्याह्नमेव च ।
चन्द्रजीवयोः संध्यायां भौमस्य घटिकाद्वयम् ।।
राहुकेत्वोऽर्धरात्रे च सूर्य शुक्रेऽरुणोदये ।
अन्यकाले न कर्त्तव्यं कृते दानन्तु निष्फलम् ।।

टीका- बुध का दान ५ घड़ी चढ़े, शनैश्वर का दुपहरी में, चन्द्रमा और बृहस्पति का सायंकाल को, मंगल का दो घड़ी दिन चढ़े, सूर्य और शुक्र का सूर्य उदय होने पर तथा राहु-केतु का आधी रात को करे । अन्य समय दान करने से निष्फल होता है । छाया-दान काँसे की कटोरी में घृत भर कर सूर्योदय के समय होना चाहिए ।

अथ वर्ण देखना

मीनालिकर्कटा विप्राः क्षत्री मेषो हरिर्धनुः ।
शूद्रो युग्म तुलाकुम्भौ वैश्यो कन्यावृषौ मृगः ।।

वर्ण चक्रम्

मीन राशि का	वृश्चिक का	कर्क का	ब्राह्मण वर्ण
मेष का	सिंह का	धन का	क्षत्रिय वर्ण
मिथुन का	तुला का	कुम्भ का	शूद्र वर्ण
कन्या का	वृष का	मकर का	वैश्य वर्ण

अथ वर्ण फलम्

नोत्तमामुद्वहेत्कन्यां ब्राह्मणीं च विशेषतः ।
म्रियते हीनवर्णश्च ब्रह्मणा सदृशो यदि ।।
विप्र वर्णे च या नारी शूद्र वर्णे च यः पतिः ।
ध्रुवं भवति वैधव्यं शक्रस्य दुहिता यदि ।।

टीका- यदि उत्तम वर्ण की कन्या और नीच वर्ण का पुरुष हो तो पुरुष की मृत्यु हो । ब्राह्मण वर्ण की कन्या से हीनवर्ण पुरुष का विवाह वर्जित है, अन्यथा वह ब्रह्मा ही क्यों न हो, मर जाता है । ब्राह्मण वर्ण की कन्या और शूद्र वर्ण का पति हो, तो इन्द्र की पुत्री होने पर भी वह विधवा हो जाती है ।

अथ वश्य देखना

मकरस्य पूर्वभागो मेषसिंहे धनुर्वृषाः ।
चतुष्पदा कीटसंज्ञः कर्कः सर्पश्च वृश्चिकः ।।
तुलां च मिथुनं कन्या पूर्वार्द्ध धनुषश्च यत् ।
द्विपदास्तु मृगार्द्ध तु कुम्भमीनौ जलाश्रितौ ।।

टीका- मकर राशि का पहला अर्द्ध भाग (उत्तराषाढ़ के तीनों चरण और श्रवण के डेढ़ चरण पर्यन्त का चन्द्रमा), मेष, सिंह का आधा धनु का पिछला भाग तथा वृष की चतुष्पद (चौपाये) की संज्ञा जानिये । कर्क राशि की कीट संज्ञा है। वृश्चिक की सर्प संज्ञा है और तुला, मिथुन, कन्या और धनु का पूर्वार्द्ध इनको द्विपद जानिये । मकर का पिछला भाग, कुम्भ और मीन की जलचर संज्ञा जानिए।

अथ वश्य फलम्

हित्वा मृगेन्द्रं नरराशिवश्याः सर्वे तथैषां जलजाश्च भक्ष्याः ।
सर्वेऽपि सिंहस्य वशे विनाऽलिम् ज्ञेयं नराणां व्यवहारतोऽन्यत् ।।

टीका- सिंह के बिना सभी राशियाँ मनुष्य के वश में हैं । जलचर राशि तो मनुष्य का भोजन ही है । वृश्चिक को छोड़ अन्य सभी सिंह के वश में हैं । अन्य सबको मनुष्यों के व्यवहार से जानो अर्थात् कन्या की राशि वर की रशि के वश में हो तो शुभ है ।

अथ तारा देखना

जन्मभाद् गणयेद्धीमान् क्रमाच्च दिनभावधिम् ।
नवभिस्तु हरेद्भागं शेषां तारां विनिर्दिशेत् ॥

टीका- जन्म-नक्षत्र से विवाह के दिन के नक्षत्र तक गिनें, फिर उसमें ६ का भाग दें, जो शेष बचे उसे तारा जानिये ।

अथ तारों के नाम

जन्म सम्पद्विपद् क्षेमं प्रत्यरिः साधको वधः ।
मैत्रातिमैत्राः ताराः स्युस्त्रिरावृत्या नवैव हि ॥

टीका- जन्म, सम्पत्, विपद्, क्षेम, प्रत्यरि, साधक, वध, मैत्र और अतिमैत्र- ये ६ तारों के नाम हैं।

तारा शुभाशुभ फलम्

जन्मतारा द्वितीया च चतुष्षष्ठाष्टमो तथा ।
नवषष्ठो शुभा ताराः शेषास्तिस्रोऽशुभावहाः ॥

टीका- जन्म, सम्पद्, क्षेम, साधक, मैत्र और अतिमैत्र- ये छः तारे शुभदायक हैं । विपद्, प्रत्यरि और वध-ये तीन तारे अशुभ होते हैं ।

अथ योनि देखना

अश्विनी वारुणश्चाश्वो रेवती भरणी गजः ।
पुष्यश्च कृत्तिका छागो नागश्च रोहिणीमृगः । १ ।
आर्द्रा मूलमपि श्वानं मूषकः फाल्गुनी मघा ।
मार्जारोऽदितिराश्लेषा गोजातिरुत्तराद्वयम् । २ ।
महिषः स्वातिहस्तौ च मृगौ ज्येष्ठाऽनुराधिका ।
व्याघ्रश्चित्रा विशाखा च श्रुत्याषाढौ च मर्कटः । ३ ।
वसु भाद्रपदौ सिंहो नकुलोऽभिजिद्विश्वयोः ।
योनयः कथिता भानां वरमैत्री विचार्यताम् । ४ ।

अथ योनि चक्रम्

अश्विनी शतभिषा की घोड़ा योनि	रेवती, भरणी की हाथी	पुष्य, कृत्तिका की बकरी	रोहिणी, मृगशिरा की नाग	आर्द्रा, मूल की श्वान
पूर्वा फाल्गुनी, मघा की मूषक	पुनर्वसु, आश्लेषा की बिलाव	उत्तरा फा. उत्तरा भाद्र. की गौ	स्वाति, हस्त की भैंस	अनुराधा ज्येष्ठा की मृग
चित्रा, विशाखा की भेड़िया	पूर्वाषाढ, श्रवण की बन्दर	धनिष्ठा, पूर्वा-भाद्रपद की सिंह	अभिजित् उत्तराषाढ की नेवला	इस प्रका योनि समझना

अथ योनि वैर देखना

गोव्याघ्रं गजसिंहमश्वमहिषं श्वेणं च बभ्रूरगम् ।
वैरं वानरमेषकं च सुमहत्तद्वद्बिडालेन्दुरुम् ।।
लोकानां व्यवहारतो निगदितं ज्ञात्वा प्रयत्नादिदं ।
दम्पत्योर्नृपभृत्ययोरपि सदा वर्ज्यः शुभस्यार्थिभिः ।।

योनि वैर चक्रम्

गाय का	हाथी का	कुत्ते का	नेवले का	बन्दर का	बिलाव का
भेड़िये का	शेर का	हिरन का	सर्प का	मेंढ़े का	चूहे का
वैर	वैर	वैर	वैर	वैर	वैर

ग्रह शत्रु-मित्र देखना

शत्रुः मन्दसितौ समश्च शशिजो मित्राणि शेषारवेः ।
तीक्ष्णांशुर्हिमरश्मिजश्चसुहृदः शेषः समाः शीतगोः ।।
जीवेन्दूष्णकरः कुजस्य सुहृदः शौरिः सितार्की समौ ।
मित्रे सूर्यसितौ बुधस्य हिम्गुः शत्रुः समाश्चापरे ।।

सूरे सौम्यसितौरवरी रविसुतो मध्यः परोत्वन्यथा ।
सौम्यार्की सुहृदौ समौ कुजगुरुः शुक्रस्य शेषावरी ॥
शुक्रज्ञौ सुहृदौ समौ सुरगुरुः शौरेस्तथान्येऽरयः ।
ये प्रोक्ताः सुहृदस्त्रिकोणभवनास्तेऽमी मयाकीर्तिताः ॥

ग्रह शत्रु- मित्र चक्रम्

ग्रह	रवि	चन्द्रमा	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
मित्र	चं. मं. वृ.	र.बु.	र.चं.गु.	र. शु.	र. मं. चं.	बु. श.	बु. शु.
सम	बुध	मं. बृ. शु. श.	शु. श.	बृ. श. मं.	शनि	मं. बृ.	गुरु
शत्रु	श.शु.	०००	बुध	चन्द्रमा	बु. शु.	र. चं.	र. चं. मं.

अथ गण देखना

अश्विनी मृगरेवत्यौर्हस्तः पुष्यः पुनर्वसुः ।
अनुराधा श्रुतिः स्वातिः कथ्यते देवतागणः ॥
तिस्रः पूर्वाश्चोत्तराश्च तिस्रोऽप्यार्द्रा च रोहिणी ।
भरणी च मनुष्याख्यौ गणश्च कथितो बुधैः ॥
कृत्तिका च मघा श्लेषा विशाखा शततारकाः ॥
चित्रा ज्येष्ठा धनिष्ठा च मूलं रक्षोगणः स्मृतः ॥

अथ गण चक्रम्

अ.	मृग.	रे.	ह.	पुष्य.	पुन.	अनु.	श्र.	स्वा.	देवता गण
पू.फा.	पू.षा.	पू.भा.	उ.फा.	उ.षा.	उ.भा.	आ.	रो.	भ.	मनुष्य गण
कृ.	म.	श्ले.	विशा.	श.	चि.	ज्ये.	ध.	मू.	राक्षस गण

अथ गण फलम्

स्वगणे परमा प्रीतिर्मध्यमा देवमर्त्ययोः ।
मर्त्यराक्षसयोर्मृत्युः कलहो देवराक्षसोः ॥

टीका- यदि स्त्री-पुरुष दोनों का एक ही गण हो तो उनमें अधिक प्रीति हो। जो देवता और मनुष्य गण हो तो मध्यम प्रीति हो । मनुष्य और राक्षस गण हों तो मृत्यु को प्राप्त हों । देवता और राक्षस गण हों तो क्लेश रहे ।

अथ भकूट फलम्

मीनालिभ्यां युते चैव कुम्भे मिथुनसंयुते ।
मकरे कन्यकायुक्ते न कुर्यान्नव पञ्चमे ॥

टीका- मीन राशि से नवीं वृश्चिक और वृश्चिक से पांचवीं मीन है । इस प्रकार भकूट नवम पंचम हुआ सो विवाह में बुरा होता है । वैसे ही कुम्भ से मिथुन, मिथुन से कुम्भ और मकर से कन्या, कन्या से मकर ठीक नहीं होता है । यह विवाह में त्याज्य है । नवीं पांचवीं राशि परस्पर ठीक नहीं होती ।

एकाधिपत्ये राशीश मैत्र्यां दुष्ट भकूटके ।
नाड़ी नक्षत्र शुद्धिश्चेद् विवाहः शुभदस्तदा ॥

टीका- वर और कन्या दोनों की राशि का स्वामी एक ही ग्रह हो अथवा दोनों राशियों में मित्रता हो और नाड़ी नक्षत्र शुद्ध रहें तो दुष्ट भकूट आदि में भी विवाह शुभ होता है ।

अथ नाड़ी देखना

आदिमध्यान्तके वापि अन्तमध्यादि भानि च ।
अश्विन्यादि क्रमेणैव रेवत्यन्तं सुसंलिखेत् ॥
ऊर्ध्वगा वेद रेखाःस्युस्तिर्यग्रेखा दशा स्मृताः ।
सर्पाकारं लिखेद् भानां नाड़ी चक्रं वदेद्बुधः ॥

टीका- आदि, मध्य, अन्त और अन्त, मध्य, आदि– इस प्रकार अश्विनी से रेवती तक गिनें । ४ रेखा खड़ी और १० रेखा तिरछी, इस प्रकार सत्ताईस कोष्ठों का नाड़ी-चक्र होता है ।

अथ नाड़ी चक्रम्

आदि	अ.	आ.	पु.	उ.फा.	हस्त	ज्येष्ठा	मू.	शत.	पू.भा.
मध्य	भ.	मृ.	पुष्य	पू.फा.	चित्रा	अनु.	पू.षा.	धनिष्ठा	उ.भा.
अन्त	कृ.	रो.	श्लेषा	म.	स्वाति	वि.	उ.षा.	श्रवण	रेवती

अथ नाड़ी दोष देखना

नाड़ीदोषस्तु विप्राणां वर्णदोषश्च क्षत्रिये ।
गणदोषश्च वैश्येषु योनिदोषस्तु पादजान् ।।

टीका- नाड़ी दोष का विचार ब्राह्मण को, वर्ण का विचार क्षत्रिय को, गण का विचार वैश्य को और योनि का विचार शूद्र को अवश्य करना चाहिए ।

अथ नाड़ी फलम्

एक नाड़ीस्थ नक्षत्रे दम्पत्योर्मरणं ध्रुवम् ।
सेवायां च भवेद्धानिर्विवाहेचाशुभं भवेत् ।।

टीका- यदि वर-कन्या दोनों की एक ही नाड़ी हो तो दोनों की मृत्यु हो । यदि नाड़ी के दोष में विवाह करे तो हानि हो ।

आदि नाड़ी वरं हन्ति मध्य नाड़ी च कन्यकाम् ।
अन्त्यनाड्यां द्वयोर्मृत्युर्नाड़ीदोषं त्यजेद् बुधः ।।

टीका- यदि आदि नाड़ी का दोष हो तो वर को अरिष्ट करे और मध्य का दोष हो तो कन्या को अरिष्ट करे । अन्त्य नाड़ी का दोष लगे तो दोनों की मृत्यु होती है ।

एक नक्षत्र जातानां नाड़ीदोषो न विद्यते ।
अन्यर्क्षपतिवेधेषु विवाहो वर्जितः सदा ।।

टीका- यदि वर-कन्या दोनों का एक ही नक्षत्र का जन्म हो तो एक नाड़ी का दोष नहीं लगता । अन्य नक्षत्र में जन्म हो, तो विवाह वर्जित है ।

गोचर ग्रह देखना

त्रिषष्ठदशमे भौमो राहुः केतुः शनिः शुभः ।
षष्ठाष्टमे द्वितीये वा चतुर्थे दशमे बुधः ॥
द्वितीये पञ्चमे जीवः सप्तमे नवमे शुभः ।
एकादशे ग्रहाः सर्वे सर्वकार्येषु शोभनाः ॥

टीका- ३ । ६ । १० स्थान में मंगल, राहु, केतु और शनि शुभ हैं । ६, । ८ । ४ । १० स्थान में बुध शुभ हैं । २ । ५ । ७ । ९ स्थान में बृहस्पति शुभ हैं तथा ११ वें स्थान में सभी ग्रह शुभदायक होते हैं ।

द्विजन्मनि पञ्चमसप्तमगाः चतुरष्टकद्वादश धर्मयुताः ।
धनधान्य हिरण्य विनाशकराः रवि राहु शनैश्चर भूमिसुताः ॥

टीका- २ । १ । ५ । ७ । ४ । ८ । १२ । ९- इन स्थानों में सूर्य, मंगल, राहु, शनिश्चर बैठें तो धन का और अन्न का नाश करते हैं । इन राशियों में ये चार ग्रह अशुभ होते हैं ।

१. अथ द्वादश लग्न भाव फलम्

लग्नेशः सप्तमे यस्य तस्य भार्या न जीवति ।
प्रवासी च विरामी च पिता तस्य ऋणी भवेत् ॥
लग्नेशोऽभ्युदितो लग्ने मृजीवोऽस्तङ्गतो यदि ।
जीवत्येव तदाऽवश्यं शस्त्रबिद्धोपि मानवः ॥

टीका- यदि लग्न का मालिक लग्न में बैठा हो और अष्टमेश अस्त हो तो वह बालक जरूर जीवे । शस्त्र का छेदा हुआ भी नहीं मरे । और जो लग्नेश सप्तम स्थान में हो तो उस मनुष्य की स्त्री नहीं जीवे और कामना निष्फल हो तथा उसका पिता ऋणी भी हो ।

२. धन भाव फलम्

धनेशः केन्द्रगो वापि धन सौख्यं महद् भवेत् ।
त्रिकस्थे वाऽथ सहजे धनसौख्यं न जायते ॥

टीका- यदि धनेश अर्थात् दूसरे घर का मालिक केन्द्र १ । ४ । ७ । १०- इन स्थानों में पड़े तो वह धनवान् हो और ३ । ६ । ८ । १२ स्थानों में पड़े तो धन के लाभ से वंचित हो ।

३. भ्रातृभाव फलम्

सहजे सहजाधीशे भ्रातृसौख्य प्रजायते ।
केन्द्रेपि तद्वद्ज्ञेयं त्रिकस्थे चाशुभं भवेत् ॥

टीका- यदि तीसरे स्थान का मालिक ६ । १ । ४ । ७ । १०- इन स्थानों में पड़े तो भाई का सुख हो और यदि ३ । ८ । १२- इन स्थानों में पड़े तो भाई के सुख से वंचित हो ।

४. मातृ भाव फलम्

शनि भौमकयोर्मध्ये यदि तिष्ठति चन्द्रमाः ।
तदा मातृभयं विद्याच्चतुर्थे दशमे पितुः ॥
तुर्येशः स्यात् सुभेराशौ पापग्रहैर्विवर्जितः ।
केन्द्रे चेन्मातु सौख्यंस्यादन्यत्र नाशयेत्तथा ॥

टीका- यदि शनि, मंगल के बीच चन्द्रमा चौथे स्थान में पड़े तो माता को कष्ट हो और दशवें स्थान में हो तो पिता को कष्ट हो । यदि चौथे स्थान का मालिक केन्द्र में पड़े और १ । ४ । ७ । १०– ये भाव पाप ग्रहों से वंचित हों तो माता को सुख हो, अन्यथा नहीं ।

५. पुत्र भाव फलम्

सुतेगः सप्तमे यस्य तस्य गर्भो विनश्यति ।
अन्यस्थ यदि पुत्रेशः सुखं त्रिक विहाय वा ॥

टीका- यदि पाँचवें घर का मालिक सातवें स्थान में हो तो गर्भ नष्ट हो । यदि ६ । ८ । १२ स्थान को छोड़ कर अन्य स्थानों में हो तो पुत्र का सुख प्राप्त हो ।

६. रिपु भाव फलम्

षष्ठेशो लग्नगेहस्थो रिपुहन्ता नरो भवेत् ।
केन्द्रे चेद्रिपुभिः किंचित् व्ययाऽष्टरिपुगे न हि ॥

टीका- यदि छठे स्थान का स्वामी लग्न में हो तो दुश्मन का नाश करने वाला हो । यदि वह ग्रह केन्द्र में हो तो दुश्मनों का भय अधिक रहे । और यदि

६।८।१२ इन स्थानों में हो तो दुश्मन नष्ट हो और मामा को भी नष्ट करे ।

७. स्त्री भाव फलम्

सप्तमेशः केन्द्रगो वा पित्तादिभिर्विकारवान् ।
स्त्रीसौख्यं च विजानीयात् भ्रातृवान् धनवानपि ॥
अन्यत्र यदि गेहस्थे स्त्री विहीनो नरो भवेत् ।
धने सहजेऽर्थलाभे वा स्त्रीसौख्यं महद् भवेत् ॥

टीका- यदि सप्तमेश अर्थात् सातवें स्थान का मालिक केन्द्र १।४।७।१० स्थानों में हो तो पित्तादि विकारयुक्त हो और स्त्री का अधिक सुख हो । भाई का सुख हो और धन भी प्राप्त हो ।

८. मृत्यु भाव फलम्

अल्पायु दिननाथस्य शत्रौ लग्नाधिपे यदि ।
समत्वे मध्यमायुः स्यान्मित्रे दीर्घायुमादिशेत् ॥

टीका- यदि लग्नेश सूर्य का शत्रु हो तो अल्पायु अर्थात् ३२ वर्ष की उम्र हो और यदि सूर्य से 'सम' हो तो मध्य-आयु ६४ वर्ष की उम्र हो । यदि 'मित्र' हो तो ९६ वर्ष की पूर्ण आयु को प्राप्त हो ।

९. धर्म भाव फलम्

धर्मेशो धर्म गेहस्थो धर्मवान् भाग्यवांस्तथा ।
केन्द्रेपि च तदा ज्ञेयोऽन्यत्रस्थोप्यशुभो भवेत् ॥

टीका- यदि धर्म-स्थान का मालिक धर्म-स्थान में ही हो और केन्द्र १।४।७।१०– इन स्थानों में पड़े तो धर्मवान् तथा भाग्यवान् हो, अन्यत्र पड़े तो अशुभ ।

१०. कर्म भाव फलम्

कर्मेशो लग्नगो वापि राजतुल्यो नरो भवेत् ।
पितृसौख्यं विशेषेण लक्ष्मीः पूर्णा च जायते ॥

टीका- यदि कर्मेश अर्थात् दशवें स्थान का मालिक लग्न में हो तो राजा के समान आचरण करने वाला हो, पिता का पूर्ण सुख हो और धन भी बहुत हो ।

११. लाभ भाव फलम्

लाभेशे लग्नगे वापि केन्द्रे वाप्यथ वा भवेत् ।
दिने दिने भवेद् लाभो त्रिके हानिः प्रजायते ॥

टीका- यदि लाभ-स्थान का मालिक लग्न में हो और केन्द्र १ । ४ । ७ । १० में पड़े तो दिन-प्रतिदिन लाभ ही लाभ हो और जो ८ । ६ । १२ स्थान में हो तो लाभ की जगह हानि हो ।

१२. व्यय भाव फलम्

व्ययेशे च त्रिकस्थे वा सर्वसम्पद्युतो नरः ।
केन्द्र वाऽथ त्रिलाभे वा दरिद्री जायते ध्रुवम् ॥

टीका- यदि बारहवें स्थान का मालिक ६ । ८ । १२ में पड़े तो सम्पूर्ण सुख हो और केन्द्र १ । ४ । ७ । १० वें स्थान में पड़े या ३ । ११ वें स्थान में पड़े तो दरिद्री हो । जिसके चन्द्रमा से २ और १२ वें स्थान में कोई ग्रह न हो, वह मनुष्य दरिद्री होता है । यदि चन्द्रमा को बृहस्पति देखता हो तो उसका दरिद्री-योग नष्ट हो जाता है ।

ग्रह-वाहन चक्रम्   ग्रह-शान्ति रत्न चक्रम्

सू. अश्व	चं. मृग	मं. वाराह	सू. चुन्नी	चं. मोती	मं. मूंगा
बु. सिंह	गुरु हाथी	शु. दादुर	बु. पन्ना	बृ. पुखराज	शु. हीरा
शनि भैंसा	राहु चीता	केतु मगर	शनि नीलम	राहु गोमेद लहसुनिया	केतु मणि

किस ग्रह का कौन-सा वाहन है ।   इन वस्तुओं के दान से क्रूर-ग्रह प्रसन्न होते हैं ।

अथ भाग देखना

पौष्णादिकं षट्कमुशन्ति पूर्वामार्द्रादिकं द्वादश मध्यभागम् ।
पौरन्दराद्यं नव कुंभचक्रम् परंच भागं गणकाः विदग्धा ॥

टीका- पौष्णा अर्थात् रेवती को आदि लेकर ६ नक्षत्र-रेवती, अश्विनी, भरणी, कृत्तिका, रोहिणी और मृगशिरा-ये पूर्व भाग के हैं और आर्द्रा को आदि

लेकर १२ नक्षत्र- आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा, मघा, पूर्वाफाल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाति, विशाखा और अनुराधा-ये मध्य भाग के हैं । पौरन्दर अर्थात् ज्येष्ठा को आदि लेकर ६ नक्षत्र-ज्येष्ठा, मूल, पूर्वाषाढ़, उत्तराषाढ, अभिजित्, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, पूर्वाभाद्रपद और उत्तराभाद्रपद- ये पर-भाग के हैं ।

भाग-फल देखना

पूर्वभागे पतिः श्रेष्ठो मध्यभागे च कन्यका ।
परभागे च नक्षत्रे द्वयोः प्रीतिर्महीयसी ॥

टीका- पूर्व भागी नक्षत्रों वाला लड़का श्रेष्ठ होता है । मध्य भाग वाले नक्षत्रों की कन्या श्रेष्ठ होती है । यदि दोनों पर- भागों के हों तो परस्पर बड़ी प्रीति रहती है ।

अथ ग्रह नपुंसक देखना

बुधसूर्यसुतौ नपुंसकाख्यौ शशिशुक्रौ युवती नराश्च शेषाः ।
शिखिभूखपयो मरुद्गणानामधिपा भूमिसुतोदयः क्रमेण ॥

टीका- बुध और शनि नपुंसक हैं । चन्द्रमा और शुक्र स्त्री हैं । सूर्य, मंगल, बृहस्पति ये पुरुष हैं । जन्म में ये बलवान् ग्रह का रूप हैं ।

अथ भकूट मेल देखना

मरणं पितृ मात्रोश्च संग्राह्यं नवपंचकम् ।
वरस्य पंचमे कन्या कन्यायां नवमे वरः ॥
एतत्त्रिकोणकं ग्राह्यं पुत्रपौत्रसुखावहम् ।
षडष्टके भवेन्मृत्युर्यत्नं तस्य विचारयेत् ॥

टीका- यदि वर की राशि से कन्या की राशि नौवीं हो तो उसके पिता की मृत्यु हो । और यदि कन्या की राशि से वर की राशि पांचवीं हो तो उसकी माता की मृत्यु हो । और वर की राशि से पांचवीं कन्या की राशि हो और कन्या से नवीं वर की राशि हो तो यह त्रिकोण शुभ होता है और पुत्र-पौत्र के सुख को देनेवाला है । ६ । ८ वें स्थान होवें तो मृत्यु हो, अतः यत्न से विचार करें ।

अथ पाये देखना

जन्मोरसेरुद्र सुवर्ण पादे द्विपंच नवमं रजतं शुभं च ।
त्रिसप्तदिक् ताम्रपदंबलिष्ठम् तूर्येष्टसूर्ये इतिलौहकष्टम् ॥

टीका- अगर चन्द्रमा लग्न में १ या लग्न से ६ या ११ हो तो सोने के पाये जानिए । यदि २ । ५ । ९ हो तो चाँदी के पाये जानिये । ३ । ७ । १० हो तो ताँबे के पाये जानिये । यदि ४ । ८ । १२ हो तो लोहे के पाये जानिये।

सर्वोपरि चक्रम्

न वर्ग वर्णो न गणो न योनिः द्विर्द्वादशे चैव षडाष्टके वा ।
ताराविरुद्धं नवपंचमं स्याद् राशीशमैत्री शुभदो विवाहे ॥

टीका- वर्ग, वर्ण, योनि, राशि, षडाष्टक, तारा नाड़ी, नवें और पाँचवें इतने गुणों में से कोई भी न मिले, परन्तु वर कन्या का एक स्वामी हो या दोनों में मित्रता हो तो सब चीज मिल गई– ऐसा विवाह शुभदायक होता है ।

अथ मङ्गली देखना

लग्ने व्यये च पाताले यामित्रे चाष्टमे कुजः ।
कन्या वै मृतभर्त्ता स्याद् भर्त्ता भार्या हनिष्यति ।

टीका- १ । १२ । ४ । ७ । ८ इन स्थानों में जिसके मंगल हो, वह मंगली होता है । यदि वर- कन्या मंगली हों और उनका विवाह हो तो शुभ है। और यदि वर मंगली और कन्या सादी या कन्या मंगली और वर सादा हो तो अशुभ है ।

मङ्गली दोष देखना

यामित्रे च सदा सौरिर्लग्ने वा हिबुकेऽथवा ।
नवमे द्वादशे चैव भौम दोषो न विद्यते ॥

टीका- जिसके ७ । १ । ४ । ९ । १२ इन स्थानों में शनिश्चर हो तो उसको मंगली का दोष नहीं होता ।

अथ भद्रा देखना

दशम्यां च तृतीयायां कृष्णपक्षे परे दले ।
सप्तम्यां च चतुर्दश्यां विष्टिः पूर्वदले स्मृता ॥
एकादश्यां चतुर्थ्याम् च शुक्लपक्षे परे दले ।
अष्टम्यां पूर्णिमायां च विष्टिः पूर्वदले स्मृता ॥

भद्रा-वास चक्रम्

तिथि	१०	३	कृष्ण पक्ष में	भद्रा पर-दल में वास करती है।
तिथि	७	१४	कृष्ण पक्ष में	भद्रा पूर्व-दल में वास करती है।
तिथि	११	४	शुक्ल पक्ष में	भद्रा पर-दल में रहती है ।
तिथि	८	१४	शुक्ल पक्ष में	भद्रा पूर्व-दल में रहती है ।

चन्द्रमा के साथ भद्रा का वास देखना

मेष मकर वृष कर्कट स्वर्गे कन्या मिथुन तुला धनुनागे ।
कुंभमीन अलिकेसरि मर्त्यो विचरति भद्रा त्रिभुवनमध्ये ॥

भद्रा चक्रम्

मेष १	मकर १०	वृष २	कर्क ४	के चन्द्रमा में	स्वर्ग लोक में भद्रा रहती है ।
कन्या ६	मिथुन ३	तुला ७	धनु ६	के चन्द्रमा में	पाताल लोक में भद्रा रहती है ।
कुम्भ ११	मीन १२	वृश्चिक ८	सिंह ५	के चन्द्रमा में	मृत्युलोक में भद्रा रहती है ।

अथ भद्रा-फल देखना

स्वर्गे भद्रा शुभं कार्ये पाताले च धनागमः ।
मृत्युलोके यदा विष्टिः सर्वकार्य विनाशिनी ॥

टीका- जो स्वर्ग-लोक में भद्रा हो तो शुभ कार्य करे । पाताल की भद्रा में लाभ हो तथा मृत्यु-लोक की भद्रा में सब कार्यों का नाश हो ।

यावत् भद्रा जितने घड़ी-पल पत्रा में लिखी हो, उतने घड़ी-पल दिन चढ़े तक बीती जानो, और उपरान्त भद्रा जितने घड़ी-पल लिखी हो उतनी घड़ी-पल में ३० घड़ी-पल और जोड़ो । फिर जोड़ में जितनी घड़ी-पल आवें तथा जब सब घड़ी पल बीत जाये तो भद्रा बीत गई जानो।

कन्या या पुत्र देखना

दम्पती पुत्रसंयुक्तौ द्विगुणौ चेन्दुसंयुतौ ।
पंचघ्नौ कन्यकायुक्तौ पंचविंशति शौ धतौ ।।
वामे पुत्रं विजानीयात् दक्षिणे कन्यकां तथा ।

टीका- यदि कोई पूछे कि मेरे कितने लड़के और कितनी लड़की हैं, तो स्त्री-पुरुष यानी दोनों में जितने पुत्र हों, मिला दे । फिर दुगने कर एक और मिलावे । फिर पांच गुणा करके कन्या भी मिला दे । फिर पच्चीस घटा दे । जो शेष बचे उनमें बांई तरफ के जोड़ को पुत्र और दाहिनी तरफ के जोड़ को कन्या जानना चाहिए ।

स्त्री पहले मरे या पुरुष

अक्षराणि द्विगुणिताः मात्रा चैव चतुर्गुणाः ।
एकीकृत्य त्रिभिर्भुक्तं शेषं ज्ञेयं च लक्षणम् ।।
एकं च पुरुषं हन्ति तथा नारीं द्वितीयके ।
शून्ये च पुरुषं ज्ञेयम् एवं प्रश्नस्य लक्षणम् ।।

टीका- स्त्री-पुरुष के नाम के अक्षर गिन कर दुगुने करे तथा मात्रा चौगुनी करके उन सबको एक जगह मिलावे । फिर तीन का भाग दे । १ बचे तो पुरुष मरे, २ बचे तो स्त्री मरे, और शून्य बचे तो भी पुरुष मरे ।

जीवित की कुण्डली है या मरे की

जन्मांकप्रश्नांक रन्ध्रांक युक्तं लग्नेश गुण्यं रन्ध्रेशभुक्तं । विषमे जीवितस्यैव समे च मृत्युमादिशेत् ।।

टीका- जन्म- लग्न के अङ्क; प्रश्न के अङ्क और जन्म लग्न से आठवें स्थान के अङ्क-- इन सबको एक जगह करके जन्म लग्नेश के साथ गुणा करे और अष्टमेश का भाग दे । जो विषम १ । ३ । ५ बचे तो जीवित की और सम २ । ४ । ६ । बचे तो मरे हुए की कुण्डली जाननी चाहिए ।

संक्रान्ति पुण्य-काल फलम्

संक्रान्तिकालेदुभयत्र नाडिकाः पुण्यामताः षोडश षोडशोष्णगोः
निशीथतोऽर्वागपरत्र संक्रमे पूर्वापरान्हन्ति न पूर्व भागयोः ।।

टीका- संक्रान्ति के पहले और पीछे की १६-१६ घड़ी पुण्य-काल माना जाता है । संक्रान्ति आधी रात से पहले बैठी हो तो दिन के तीसरे भाग में पुण्य-काल मानें और आधी रात के बाद बैठे तो दूसरे दिन के पूर्व भाग में पहिले सबेरे अगला दिन मानें और ठीक आधी रात को बैठे तो दोनों दिन पुण्य-काल मानना चाहिए।

त्रिंशतिः कर्क्कटे नाड्यो मकरस्य दशाधिकाः ।
तुला मेषस्य विंशः स्यात् शेषाः षोडश षोडशः ॥

टीका- कर्क की संक्रान्ति की ३० घड़ी, मकर की संक्रान्ति की ४० घड़ी एवं तुला-मेष की संक्रान्ति की २० घड़ी पुण्य-काल माना जाता है । अन्य राशियों की जो संक्रान्ति रहीं, उनका १६ घड़ी पहिले या पीछे पुण्य-काल जानें ।

आदि मध्य अन्त्य भोगी चक्रम्

२	५	८	४	इन राशियों की संक्रान्ति आदि भोगनी है ।		
१	७	०	०	इन राशियों की संक्रान्ति मध्य भोगनी है ।		
३	६	९	१०	११	१२	इन राशियों की संक्रान्ति अन्त्य भोगनी है।

याप्युत्तरा पुण्यतमा मयोक्ता सायं भवेत्सा यदि सापि पूर्वा । पूर्वा तु योक्ता यदि साविभाते साप्युत्तरा रात्रिनिशीथिनी स्यात् ।१। अर्द्धे निशीथे यदि संक्रमः स्यात्पूर्वेन्हि पुण्यं परतः परेन्हि ।२।

टीका- जो संक्रान्ति अन्त्य-भोगनी चक्र में लिखी है, वह सायंकाल में अर्के तो आदि भोगनी हो जाती है । और जो आदि-भोगनी लिखी है, वह प्रातःकाल में अर्के तो अत्यन्त भोगनी हो जाती है । और जो आधी रात से पहिले अर्के तो वह आदि भोगनी होती है । इसका पुण्य-काल पहिले दिन होता है । आधी रात से पीछे अर्के तो अन्त्य-भोगनी, अगले दिन पुण्य-काल हो । जो ठीक आधी रात पर बैठे अर्थात् अर्के तो दोनों दिन उसका पुण्य-काल जानो ।

अथ संक्रान्ति मुहूर्त्त भेद

संक्रान्तौ मुहूर्ति भेदा हर पवनयमे वारुणे सार्परौद्रे, एषा पंचेन्दुसंज्ञा गुरुकरपितृभेचाग्निदस्त्रे च सौम्ये । त्वाष्टेमैत्रे च मूले

श्रुतिवशुवपुषा त्रीणि पूर्वाखराम, ब्राह्मोऽदित्ये द्विदैवे भवति शरकृता दुत्तरा त्रीणि ऋक्षम् ।। वाणवेदैः समर्घ स्यान्मध्यस्थं व्योमरामयोः । मूर्तो पञ्चदशे याते दुर्भिक्षं च प्रजायते ।।

टीका- आर्द्रा, स्वाति, भरणी, शतभिषा, आश्लेषा व ज्येष्ठा– जो इन नक्षत्रों मे संक्रान्ति बैठे तो १४ मुहूर्ती जानो, प्रजा में दुर्भिक्ष पड़े । पुष्य, हस्त, मघा, कृत्तिका, अश्विनी, मृगशिरा, चित्रा, अनुराधा, श्रवण, मूल, धनिष्ठा, रेवती, तीनों पूर्वा– इन नक्षत्रों मे अर्के तो ३० मुहूर्ती जानो, इसका फल साधारण है । रोहिणी, पुनर्वसु, विशाखा, तीनों उत्तरा– इन नक्षत्रों में अर्के तो ४५ मुहूर्ती जानो, इसका फल उत्तम और श्रेष्ठ है ।

अथ भद्रा के मुख-पुच्छ देखना

पंचद्वयद्रि कृताष्ट रामरसभू यामादि घट्यः शराः ।
विष्टेराश्यसमद्गजेन्द्र रसरामाद्र्यांशिववाणावब्धिषु ।।
याम्येष्वन्त्यघटी त्रयंशुभकरं पुच्छं तथा वासरे ।
विष्टिस्तिथ्य परार्द्धजा शुभकरी रात्रौतु पूर्वार्द्धजा ।।

भद्रा के मुख-पुच्छ देखने का चक्र

तिथि	०४	०८	११	१५	०३	०७	१०	१४
प्रहर	०५	०२	०७	०४	०८	०३	०६	०१
आदि	आ.	आ.	आ.	आ.	आ.	आ.	आ.	आ.
घ. मु.	०५	०५	०५	०५	०५	०५	०५	०५
प्रहर	०८	०१	०६	०३	०७	०२	०५	०४
अन्त	अन्त	अन्त	अन्त	अन्त	अन्त	अन्त	अन्त	अन्त
घ. मु.	०३	०३	०३	०३	०३	०३	०३	०३

भद्रा के मुख की घड़ी त्याज्य और पुच्छ की शुभ काम में ग्राह्य हैं ।

नोट- प्रहर की गणना तिथि के आरम्भ से करनी चाहिए ।

पौष संक्रान्ति फलम्

पौषमासस्य संक्रान्तौ रविवारो यदा भवेत् ।
धान्यान्यां त्रिगुणं मूल्यं भौमवारे चतुर्गुणम् ।।
त्रिगुण शनिवारे च बुधे शुक्रे समं भवेत् ।
सुराचार्ये च सोमे च मौल्यमर्धं सुनिश्चितम् ।।
क्रूरो हि लाभकृद्धान्ये सौम्यो हानिप्रदो भवेत् ।

टीका- पौष मास की संक्रान्ति को यदि रविवार हो तो अन्न का तिगुना मूल्य हो। मंगल हो तो चौगुना । शनिवार हो तो तिगुना । बुध अथवा शुक्रवार हो तो समभाव रहता है । अगर गुरुवार या सोमवार हो तो निश्चय ही आधा मूल्य रह जाता है । यदि क्रूरवार हो तो अन्न में लाभ तथा सौम्यवार हो तो अन्न में हानि ।

मीन संक्रान्ति फलम्

मीनं संक्रमणे सूर्ये वारे वाति समीरणः ।
भौमे पीडा पशूनां च दुर्भिक्षं च शनैश्चरे ।।
वृक्षपातः प्रजापीड़ा मिथ्या सञ्चरते मही ।
हिंसा कामातुरा लोके यदि वृष्टिश्च तद्दिने ।।
संक्रान्तौ यदि मीनस्य बुधवारः प्रजायते ।
छत्रभंगो महामारी रोदनं भयचिन्तया ।।
संक्रान्तौ सोमवारश्चेत्प्रजानां परमं सुखम् ।
भानुभौमार्किवारेषु पापयुद्धं महर्घता ।।

टीका- यदि मीन संक्रान्ति को रविवार हो तो वायु अधिक चले । मंगलवार हो तो पशुओं को पीड़ा । शनिवार हो तो दुर्भिक्ष, वृक्ष गिरें, प्रजा में पीड़ा, मिथ्या प्रचार हो । यदि उस दिन वर्षा हो तो लोग हिंसक तथा कामातुर हों । बुधवार हो तो छत्र-भंग, महामारी-भय, चिन्ता और रोदन हो । यदि सोमवार हो तो सुख। रवि, भौम या शनिवार हो तो पाप-युद्ध तथा मँहगाई बढ़े ।

अथ संक्रान्ति समय फलम्

यदि सूर्य निकलने पर संक्रान्ति बैठे तो प्रजा को मारी, दोपहर में बैठे तो शुभ, सुर्य छिपे राजा को अशुभ तथा रात्रि में शुभ हो ।

- इति जातक प्रकरणम्-

अथ ज्योतिष सर्व संग्रह

द्वितीय भाग

(विवाह-प्रकरण)

अथ सगाई मुहूर्त्त

धरणीदेवोऽथवा कन्यका सहोदरः शुभदिने गीत वाद्यादिभिः संयुतः । वरंवृत्तिं वस्त्रयज्ञोपवीतादीनां ध्रुवयुतैर्वह्नि पूर्वायै अर्चयेत् ।

टीका- पुरोहित या ब्राह्मण या कन्या का छोटा भाई या बड़ा भाई वस्त्र यज्ञोपवीत आदि लेकर शुभ दिन में वर का वरण यानी तिलक करे । रोहिणी, तीनों उत्तरा, कृत्तिका, तीनों पूर्वा– ये नक्षत्र और शुभ वार-चन्द्रमा, बुध, शुक्र, गुरु होने चाहिए । परन्तु सगाई के पहले दोनों टेवे वर– कन्या के मिला लेने चाहिए। जो नहीं मिलते हों तो उनको चाहिए कि विवाह सुझाने को टेवे न दें। वर-कन्या के नाम से सुझावें या जन्म-नाम से सुझावें । दोनों नाम बोलते हों या दोनों नाम जन्म के हों तो शुभ हैं ।

जन्मपत्र गुण विचार

वर्णो वश्यं तथा तारा योनिश्च ग्रहमैत्रकम् ।
गणमैत्रं भकूटं च नाड़ी चेते गुणाधिकाः ॥

टीका- वर्ण, वश्य, तारा, योनि, ग्रह-मैत्री, गण-मैत्री, भकूट और नाड़ी– यह मिलाने चाहिए।

अथ विवाह सुझाना

दैवज्ञं पूजयेत्पूर्वं फल ताम्बूलं गृह्यते ।
विप्राय भेटकं दद्याद्विवाहे प्रश्न कारयेत् ॥

टीका- कन्या का पिता या कन्या का भाई जब विवाह करना चाहें तो पहले पण्डित के पास जावे । नारियल या सुपारी, पान, फूल, चावल, दक्षिणा पण्डित को भेंट करें, फिर प्रश्न करे तो वह विवाह शुभदायक होता है ।

ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणः ।
ब्रह्मवाक्य सदा नित्यं हन्यतां तव शत्रवः ।।

टीका- चारों वेदों का यह सिद्धान्त है कि ब्राह्मण के आशीर्वाद से ही तुम्हारे शत्रुओं का नाश होता है ।

विवाहे सर्वमाङ्गल्ये यात्रायां गृहगोचरे ।
जन्मराशिप्रधानत्वं नामराशिं न चिन्तयेत् ।।

टीका- विवाह में, शुभ-काम में, यात्रा में, घर बनाने में, प्रतिष्ठा में, गोचर ग्रह देखने में और जितने शुभ काम हैं, उन सब में जन्म-राशि ही प्रधान है ।

देशे ग्रामे गृहे युद्धे सेवायां व्यवहारके ।
नामराशिप्रधानत्वं जन्मराशिं न चिंतयेत् ।।

टीका- देश, गाँव या घर के बारे में तथा युद्ध, नौकरी और व्यापार के विषय में नाम-राशि से देखें, जन्म से नहीं ।

जन्मर्भं जन्मधिष्ण्येव नामधिष्ण्येव नामभम् ।
व्यत्ययेन यदा योज्यं दम्पत्योर्निधनप्रदम् ।।

टीका- वर का जन्म-नक्षत्र हो तो कन्या का भी जन्म का नक्षत्र हो या दोनों का बोलता नाम हो । एक का जन्म एक दूसरे का बोलता नाम हो तो अशुभ होता है ।

जन्ममासे जन्मभे च न च जन्मदिनेपि च ।
ज्येष्ठे न ज्येष्ठगर्भस्य विवाह कारयेत् कचित् ।।

टीका- जन्म का मास, जन्म का दिन, जन्म का नक्षत्र और प्रथम गर्भ वाले से उत्पन्न व्यक्ति का ज्येष्ठ मास में विवाह वर्जित है ।

ज्येष्ठ विचार देखना

न कन्यावरयोर्ज्येष्ठे ज्येष्ठयोः पाणिपीडनम् ।
द्वयोरेकतरे ज्येष्ठे न ज्येष्ठो दोषमावहेत् ।।

टीका- यदि वर-कन्या दोनों प्रथम गर्भ के हों तो ज्येष्ठ के महीने में विवाह नहीं करें । एक जेठा हो तो विवाह करने में कोई दोष नहीं । ज्येष्ठ उसे कहते हैं, जो पहले पैदा हुआ हो, यानी तीन ज्येष्ठ नहीं मिलने चाहिए ।

सिंहे गुरौ गते कार्यो न विवाहः कदाचन ।
मेषस्थिते दिवानाथे सिंहेगुरौ शुभप्रदः ।।

टीका- सिंह के बृहस्पति में विवाह न करे । मेष के सूर्य में सिंह का बृहस्पति हो तो विवाह करने में कुछ दोष नहीं होता ।

विवाह के नक्षत्र देखना

रोहिण्युत्तररेवत्यो मूलं स्वातिर्मृगो मघा ।
अनुराधा च हस्तश्च विवाहे मङ्गलप्रदाः ।।

टीका- रोहिणी, तीनों उत्तरा, रेवती, मूल, स्वाति, मृगशिरा, मघा, अनुराधा और हस्त— ये ग्यारह नक्षत्र विवाह के हैं ।

विवाह के मास देखना

माघे धनवती कन्या फाल्गुने सुभगा भवेत् ।
वैशाखे च तथा ज्येष्ठे पत्युरत्यन्तवल्लभा ।।

टीका- माघ के महीने में विवाह करे तो कन्या धनवती हो । फाल्गुन में सौभाग्यवती और वैशाख तथा ज्येष्ठ में विवाह करे तो पति को प्यारी हो ।

आषाढ़े कुलवृद्धिः स्यादन्ये मासाश्च वर्जिताः ।
मार्गशीर्षमपिच्छन्ति विवाहे केऽपि कोविदाः ।।

टीका- आषाढ़ में विवाह करे तो कुल-वृद्धि हो । अन्य महीने में विवाह वर्जित है मार्गशीर्ष के महीने को भी कुछ आचार्य विवाह के लिए शुभ कहते हैं।

विवाह में वर्जित नक्षत्र-तिथि-वार

अमावास्याच रिक्ता च वारवेला च जन्मभम् ।
गण्डान्तं क्रूर वाराश्च वर्जनीयाः प्रयत्नतः ।।

टीका- अमावास्या और रिक्ता तिथि ४ । ९ । १४ वार-वेला, जन्म का नक्षत्र, क्रूर वार-रवि, शनि, मंगल और गण्डान्त नक्षत्र— ये विवाह में वर्जित हैं।

विवाह वर्जित योग देखना

भद्रा कर्कटयोगं च तिथ्यन्तं यमघण्टकम् ।
दग्धां तिथिं च भांतं च कुलिकं च विवर्जयेत् ।।

टीका- भद्रा,कर्कट योग, तिथि के अंत की २ घड़ी, यमघण्टक योग, दग्धा तिथि, नक्षत्र के अन्त की ३ घड़ी और कुलिक योग-ये सब विवाह में वर्जित हैं।

मासान्तादि देखना

मासान्ते दिनमेकन्तु तिथ्यन्तं घटिकाद्वयम् ।
घटिकानां त्रयं भान्ते विवाहे परिवर्जयेत् ॥

टीका- मासान्त कहिये या संक्रान्ति के अन्त का एक दिन, तिथ्यन्त कहिये अर्थात् तिथि के अन्त की दो घड़ी तथा नक्षत्र के अन्त की तीन घड़ी-ये विवाह में वर्जित हैं ।

मासान्ते म्रियते कन्या तिथ्यन्ते स्यादपुत्रिणी ।
नक्षत्रान्ते च वैधव्यं विष्टौ मृत्युर्द्वयोर्भवेत् ॥

टीका- मास के अन्त में कन्यादान करे तो कन्या की मृत्यु हो, तिथि के अन्त में कन्यादान करे तो वह अपुत्रिणी हो, नक्षत्र के अन्त में विवाह हो तो विधवा हो और भद्रा में विवाह हो तो वर-कन्या दोनों की मृत्यु होती है ।

विवाह में किस-किस प्रकार का बल देखना

वरस्य भास्करबलं कन्यायाश्च गुरोर्बलम् ।
द्वयोर्चन्द्रबलं ग्राह्यं विवाहे नान्यथा भवेत् ॥

टीका- वर को सूर्य का बल देखे, कन्या को बृहस्पति का बल देखे और वर-कन्या दोनों को चन्द्रमा का बल देखे ।

अष्टमे च चतुर्थे च द्वादशे च दिवाकरे ।
विवाहितो वरो मृत्युं प्राप्नोत्यत्र न संशयः ॥

टीका- यदि वर की राशि से सूर्य ४ । ८ । १२ हो तो विवाह न करे । यदि करे तो वर की मृत्यु हो, इसमें सन्देह नहीं है ।

जन्मन्यथ द्वितीये वा पंचमे सप्तमेपि वा ।
नवमे च दिवानाथे पूजयाः पाणिपीडनम् ॥

टीका- यदि वर की राशि से सूर्य १ । २ । ५ । ७ । ९ हो तो पूजा का विवाह होता है । सूर्य का जप, दान और पूजादि करने से विवाह शुभ होता है ।

एकादशे तृतीये वा षष्ठे वा दशमेपि वा ।
वरस्य शुभदो नित्यं विवाहे दिननायकः ॥

टीका- जो वर की राशि से ११ । ३ । ६ । १० सूर्य हो तो शुभदायक और कल्याण करने वाला होता है ।

सूर्य-बल चक्रम्

८	१२	४	सूर्य	अशुभ होता है ।	
१	२	५	७	९	पूजा का होता है ।
११	३	६	१०	शुभ होता है ।	

गुरु-बल देखना

अष्टमे द्वादशे वाऽपि चतुर्थे वा बृहस्पतौ ।
पूजा तत्र न कर्तव्या विवाहे प्राणनाशकः ॥

टीका- यदि कन्या की राशि से बृहस्पति ४ । ८ । १२ हो तो अशुभ है। यह योग प्राणघात करने वाला है, इसमें पूजा न करे ।

षष्ठे जन्मनि देवेज्ये तृतीये दशमेऽपि वा ।
भूरिपूजापूजितः स्यात्कन्यायाः शुभकारकः ॥

टीका- यदि कन्या की जन्म-राशि से बृहस्पति ६ । १ । ३ । १० हो तो बहुत सी पूजा, दान, जप आदि करने से ही विवाह शुभ होता है ।

एकादशे द्वितीये वा पञ्चमे सप्तमेपि वा ।
नवमे च सुराचार्ये कन्यायाः शुभकारकः ॥

टीका- यदि कन्या की राशि से बृहस्पति ११ । २ । ५ । ७ । ९ हो तो विवाह शुभदायक होता है ।

उच्चादि गुरु फल देखना

स्वोच्चे गुरुः स्वमैत्रे वा स्वांशे वर्गोत्तमेऽपि वा ।
रिस्फाष्टतूर्यगोपीष्टो नीचारिस्थः शुभोऽप्यसत् ॥

टीका- जो उच्च का बृहस्पति हो या अपने घर का हो या वर्गोत्तम का हो या मित्र के घर का हो या नवांशक में हो तो ४ । ८ । १२ स्थान में होने का दोष नहीं माना जाता ।

गुरु-बल चक्रम्

११	२	५	७	९	शुभ होता है ।
६	१	३	१०	गुरु	पूजा का है ।
४	८	१२	- - -	बृहस्पति	अशुभ होता है ।

झषचापकुलीरस्थो जीवो पाप्यशुभो वरः ।
अति शोभान्तथा दद्याद्विवाहोपनयनादिषु ।।

टीका- विवाह और यज्ञोपवीत में मीन, धनु और कर्क-राशियों का बृहस्पति अशुभ हो, तो भी उसे शुभ जानें ।

विवाह में कन्या की संज्ञा देखना

अष्टवर्षा भवेद्गौरी नववर्षा च रोहिणी ।
दशवर्षा भवेत् कन्या अतः ऊर्ध्वं रजस्वला ।।

टीका- आठ वर्ष तक गौरी, नौ वर्ष तक रोहिणी, दश वर्ष तक कन्या और इसके उपरान्त स्त्री की रजस्वला संज्ञा समझनी चाहिए ।

रजस्वला दोष देखना

संप्राप्तैकादशे वर्षे कन्या या न विवाहिता ।
मासे मासे पिता भ्राता तस्याः पिबति शोणितम् ।।

टीका- यदि ग्यारहवें वर्ष में कन्या का विवाह न हो तो उसके महीने-महीने रजस्वला होने पर उसके पिता और बड़ा भाई दोष के भागी होते हैं । ऐसा प्राचीन शास्त्रों का कथन है ।

द्वादशैकादशे वर्षे तस्याः शुद्धिर्न जायते ।
पूजाभिः शकुनैर्वापि तस्या लग्नं प्रदापयेत् ।।

टीका- यदि ग्यारह वर्ष की कन्या हो जाय तो बृहस्पति का बल न देखें और लग्न का विचार कर, पूजा-दान करके विवाह कर दे ।

माता चैव पिता चैव ज्येष्ठ भ्राता तथैव च ।
त्रयश्च नरकं यान्ति दृष्ट्वा कन्यां रजस्वलाम् ॥

टीका- यदि रजस्वला-कन्या को माता, पिता या बड़ा भाई देखे तो वे नरक के अधिकारी होते हैं ।

गुर्विन्द्वर्कबला गौरी गुर्विन्दुबलरोहिणी ।
रवीन्दुबलजा कन्या प्रौढ़ा लग्नबलं स्मृता ॥

टीका- गौरी के लिए बृहस्पति, चन्द्रमा और सूर्य– इन तीनों का बल देखे तो शुभ है । रोहिणी के लिए गुरु और चन्द्रमा का बल देखे । कन्या के लिए सूर्य और चन्द्रमा का बल देखे । प्रौढ़ा के लिए केवल लग्न-बल का ही विचार करना चाहिए ।

गौरीं ददन्नागलोके बैकुण्ठे रोहिणीं ददेत् ।
कन्यां ददन्मृत्युलोके रौरवंतु रजस्वलाम् ॥

टीका- गौरी का दान करे तो पाताल-लोक में सुख पावे । रोहिणी का दान करे तो बैकुण्ठ-लोक में सुख पावे । कन्या का दान करे तो मृत्यु-लोक में सुख प्राप्त हो । यदि रजस्वला का दान करे तो नरक प्राप्त होता है ।

जीवो जीवप्रदाता च द्रव्यदाता च चन्द्रमाः ।
तेजोदाता भवेत्सूर्यो भूमिदाता महीसुतः ॥
जीवहीना मृता कन्या सूर्यहीनो मृतो वरः ।
चन्द्रहीने गता लक्ष्मीः स्थानहानिः कुजं विना ॥

टीका- बृहस्पति जीव के दाता हैं । चन्द्रमा धन के दाता हैं । सूर्य तेज के दाता हैं । मंगल भूमि के दाता हैं । बृहस्पति हीन हो तो कन्या की मृत्यु हो । सूर्य हीन हो तो वर की मृत्यु हो । चन्द्रमा हीन हो तो लक्ष्मी की हानि हो और मंगल हीन हो तो घर की हानि करता है ।

दश दोष देखना

लत्ता पातो युतिर्वेधो यामित्रं बुधपञ्चकम् ।
एकार्गलोपग्रहौ च क्रांतिसाम्यं निगद्यते ॥

दग्धातिथिश्च विज्ञेया दशदोषा महाबलाः ।
एतान्दोषान् परित्यज्य लग्नं संशोधयेद् बुधः ॥

टीका- १ लत्ता, २ पात, ३ युति, ४ वेध, ५ यामित्र, ६ बुध पंचक, ७ एकार्गल, ८ उपग्रह, ९ क्रांतिसाम्य और १० दग्धा तिथि-ये दश दोष विवाह में बलवान् हैं । इन दोषों से बचा कर लग्न साधनी चाहिए ।

देश दोष मानना

लत्ता मालवके देशे पातं च कुरुजांगले ।
एकार्गलं च काश्मीरे वेधं सर्वत्र वर्जयेत् ॥

टीका- लत्ता दोष मालव देश में, पात दोष कुरु-जांगल देश में तथा एकार्गल दोष काश्मीर देश में माना जाता है । वेध-दोष सब जगह वर्जित है ।

यामित्रं चामरे देशे युतिदोषः कलिङ्गके ।
उपग्रहे च कैलाशे दग्धा विद्रुम देशके ॥

टीका- यामित्र दोष अमर देश में, युति दोष कलिंग देश में, उपग्रह दोष कैलाश देश में और दग्धा दोष विद्रुम देश में माना जाता है । शेष दोष सब जगह वर्जत हैं ।

टिप्पणी- वेध, बुधपंचक, दग्धा, तिथि, क्रांतिसाम्य, और युति-ये पांच दोष जरूर देखने चाहिए । और दोष अन्य देशों में माने जाते हैं ।

युति-दोष देखना

यत्रग्रहे भवेच्चन्द्रो ग्रहस्तत्र यदा भवेत् ।
युतिदोषस्तदा ज्ञेयो विना शुक्रं शुभाशुभम् ॥

टीका- जिस नक्षत्र का चन्द्रमा हो, उसी नक्षत्र में यदि कोई ग्रह भी हो तो युति दोष होता है । परन्तु शुक्र के बिना संयुक्त हो तो शुभ, अन्यथा अशुभ होता है ।

युति-दोष फलम्

रविणां संयुतो हानिर्भौमेन निधनं शशि ।
करोति मूलनाशं च राहुकेतु शनैश्चरः ॥

टीका- यदि सूर्य, चन्द्रमा के साथ हो तो हानि करे, भौम हो तो मृत्यु दे और राहु, केतु, शनिश्चर हो तो मूल का नाश करें ।

वर्गोत्तमगतश्चन्द्रः स्वोच्चे वा मित्रराशिगः ।
युतिदोषस्य च भवेद्दम्पत्योः श्रेयसी सदा ॥

टीका- यदि चन्द्रमा श्रेष्ठ वर्ग का हो अथवा उच्च का हो या मित्र राशि का हो तो युति-दोष का नाश करता है और स्त्री-पुरुष दोनों सुखी रहते हैं ।

वेध दोष देखना

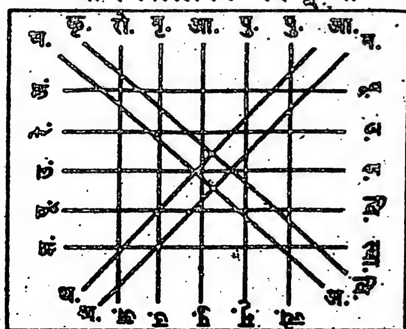
एकरेखास्थितिर्वेधो दिननाथादिभिर्ग्रहैः ।
विवाहे तत्र मासंतु जीवति न कदाचन ॥

टीका- जिस नक्षत्र का लग्न हो, उसी नक्षत्र की रेखा से जो नक्षत्र विंधा हो और उसी नक्षत्र पर सूर्य आदि कोई ग्रह हो (उसको वेध कहते हैं), तो वह विवाह के एक महीने पीछे ही मृत्यु देता है।

अश्विनी पूर्वफाल्गुन्या भरणी चानुराधया ।
अभिजिच्चापि रोहिण्या कृत्तिका च विशाखया ॥
मृगश्चोत्तरषाढेन पूर्वाषाढा तथार्द्रया ।
पुनर्वसुश्च मूलेन तथा पुष्यश्च ज्येष्ठया ॥
धनिष्ठया तथाश्लेषा मघापि श्रवणेन च ।
रेवत्युत्तरफाल्गुन्या हस्तेनोत्तरभाद्रपात् ॥
स्वात्या शतभिषा विद्धा चित्रया पूर्वभाद्रपात् ।
विद्धान्येतानि वर्ज्यानि विवाहे भानि कोविदैः ॥

टीका- अश्विनी से और पूर्वाफाल्गुनी से एक रेखा, ऐसे जो दोनों स्थानों पर एक रेखा हो तो वेध होता है । वेध पंचशलाका चक्र में देखकर समझें ।

॥ पंचशलाका चक्रम् ॥



वेध चक्रम् फलम्

रविवेधे च वैधव्यं कुजवेधे कुलक्षयम् । बुधवेधे भवेद्वन्ध्या प्रव्रज्या गुरुवेधतः । अपुत्रा शुक्रवेधे च सौरे चन्द्रे च दुःखिता । पुरुषान्यरता राहोः केतोः स्वच्छन्दचारिणी ॥

टीका- यदि सूर्य का वेध लगे तो स्त्री विधवा हो, मंगल का वेध लगे तो कुलक्षिणी हो, शुक्र का वेध लगे तो वन्ध्या हो, गुरु का वेध लगे तो सन्यासिनी हो, शनिश्चर या चन्द्रमा का वेध लगे तो दुःखी हो, राहु का वेध लगे तो पर-पुरुषगामिनी हो और केतु का वेध लगे को स्वच्छन्दचारिणी हो ।

शनिराहुकुआदित्या यदा जन्मर्क्षसंस्थिताः ।
विवाहिता च या कन्या सा कन्या विधवा भवेत् ॥

टीका- शनि, राहु भौम, सूर्य- इनमें से कोई भी ग्रह विवाह के समय यदि जन्म-नक्षत्र पर हो तो कन्या विधवा हो ।

अथ यामित्र दोष विचार

चतुर्दशं च नक्षत्रं यामित्रं लग्नभात्स्मृतम् ।
शुभयुक्तां तदिच्छन्ति पापयुक्तं च वर्जयेत् ॥

टीका- यदि लग्न के नक्षत्र से चौदहवें नक्षत्र पर कोई ग्रह हो तो यामित्र-दोष होता है । यदि सौम्य-ग्रह हो तो शुभदायक, पाप-ग्रह हो तो उसे वर्जित करे ।

यामित्र फलम्

चन्द्रश्चान्द्रिर्भृगुर्जीवो यामित्रे शुभकारकाः ।
स्वर्भानुर्भानुमंदारा यामित्रे न शुभप्रदाः ॥

टीका- यदि चन्द्रमा, बुध, बृहस्पति और शुक्र-ये ग्रह जन्म के नक्षत्र से चौदहवें यामित्र पर हों तो शुभदायक हैं और जो शनि, राहु, केतु, सूर्य तथा भौम चौदहवें यामित्र पर हों तो अशुभ होते हैं ।

चन्द्राद्वा लग्नतो वापि ग्रहा वर्ज्याश्च सप्तमे ।
तत्र स्थिता ग्रहाः भूत व्याधिवैधव्यकारकाः ॥

टीका- चन्द्रमा से या विवाह लग्न की राशि से सातवें कोई ग्रह हो तो वह व्याधि और वैधव्य कारक होता है ।

अथ मृत्यु पंचक देखना

धार्य्या तिथिर्मास दशाष्ट वेदाः १५ । १२ । १० । ८ । ४
संक्रान्तितो यातदिनैश्च योज्याः । ग्रहैर्विभक्ताः यदि पञ्चशेषो
रोगस्तथाग्निर्नृपचौरमृत्युः ।

टीका- पंचक देखने की यह रीति है- तिथि १५, मास १२, १०, अष्ट ८, वेद ४ तथा संक्रान्ति के जितने दिन गये हों, उनको मिला कर ९ का भाग दें। जो ५ बचे तो पंचक जानिये। ऐसे ही पाँचों अंकों को विचार के देखें। १५ जोड़ कर ९ का भाग देकर ५ बचें तो रोग-पंचक। १२ जोड़ कर ९ का भाग देकर ५ बचें तो अग्नि-पंचक। १० जोड़ कर ९ का भाग देकर ५ बचें तो राज-पंचक। ८ जोड़ कर ९ का भाग देकर ५ बचें तो चोर-पंचक। ४ जोड़ कर ९ का भाग देकर ५ बचें तो मृत्यु-पंचक जानना चाहिए।

पंचक देखने की दूसरी रीति

१। १०, १९। २८ में मृत्यु-पंचक होते हैं। संक्रान्ति के जितने दिन गये हों, उनको गिनके उनमें ४ और जोड़ दें। फिर उसमें ९ का भाग दें। ५ बचें तो मृत्यु-पंचक जानिये। जैसे संक्रान्ति का एक दिन गया, उसमें ४ और जोड़े तो पांच हो गये तो मृत्यु-पंचक जानिये और जो दस अंश गये हों तो उसमें ४ और जोड़ें तो १४ हुए, उनमें ९ का भाग दिया तो ५ बचे, तो मृत्यु-पंचक जानो। जो १९ दिन गये ४ और जोड़े तो २३ हुए, उनमें ९ का भाग दिया, ९ दूनी १८ तो ५ बचे, मृत्यु-पंचक जानो। जो २८ अंश गये, ४ और जोड़े ३२ हुए ९ का भाग दिया, ९ तिये २७ गये, ५ बचे तो मृत्यु-पंचक जानो। रोग-पंचक देखना हो तो १५ और जोड़ कर ९ का भाग देकर ५ बचें तो रोग-पंचक जानो। अग्नि-पंचक देखना हो तो १२ जोड़कर ९ का भाग दें। राज-पंचक देखना हो तो १० जोड़कर ९ का भाग दें। चोर-पंचक देखना हो तो ८ जोड़कर ९ का भाग दें। ऐसे ही १२ राशियों पर जानो।

एके मृत्युर्द्वयोर्वह्निश्चतुर्थे राज पंचकम्।
षष्ठे चौराऽष्टमे रोग वाणमेवं विचारयेत्॥

टीका- संक्रान्ति का एक अंश जाने पर मृत्यु-बाण होता है। दूसरे पर अग्नि। चौथे पर राज। छठे पर चौर और आठवें पर रोग वाण होता है।

पंचक चक्रम्

रोग	अग्नि	राजा	चोर	मृत्यु	५ बाण
सूर्य	मंगल	शनिश्चर	शुक्र	बुध	वार
रात्रि	दिन	दिन	रात्रि	संध्या	समय
उपनयन यज्ञोपवीत	भवन निर्माण	राजसेवा	यात्रा	विवाह	वर्जित

पंचक वर्जित देखना

यद्यर्कवारे किल रोगपंचकं सोमे च राज्यं क्षितिजे च वह्निः ।
सौरे च मृत्युर्धिषणे च चौरो विवाहकाले परिवर्जनीयाः ॥

टीका- जो रविवार को रोग-पंचक लगे, सोम को राज्य-पंचक, मंगल को अग्नि-पंचक, शनिवार को मृत्यु-पंचक और भृगु को चोर-पंचक तो यो पंचक विवाह में वर्जित हैं ।

रोगं चौरं त्येजदात्रौ दिने राज्याग्निपंचकम् ।
उभयः संध्ययोर्मृत्युरन्यकाले न निन्दिता ॥

टीका- रोग तथा चोर-पंचक रात्रि को अशुभ हैं और राज्य तथा अग्नि-पंचक दिन में वर्जित हैं । रात्रि और दिन की सन्धि में मृत्यु-पंचक निन्दित है । अन्य समय में वर्जित नहीं है ।

क्रांतिसाम्य देखना

कुं० ११ मीन १२ मेष १
वृष २
मि० ३
कर्क ४
तुला ७ कन्या ६ सिंह ५
८ वृ०
९ धनु
१० म०

ऊर्ध्वास्तिस्रस्तिरास्तिस्त्रो मध्ये मीनं लिखेद् बुधः। सूर्याचन्द्रमसौ दृष्टौ क्रांतिसाम्यं निगद्यते । मीनः कन्यकया युक्तो मेषः सिंहेन सङ्गतः। मकरेण वृषाः क्रान्तिश्चापोऽपि मिथुनेन च।। कर्केण वृश्चिको विद्धो वेधश्च तुलकुम्भयोः । क्रांतिसाम्ये कृतोद्वाहो न जीवति कदाचन ।

टीका- क्रांतिसाम्य देखने की यह रीति है कि सूर्य चन्द्रमा एक रेखा पर हों तो उसे क्रांतिसाम्य कहते हैं । जैसे- मीन राशि का तो सूर्य हो और कन्या का चन्द्रमा हो तो क्रांतिसाम्य होता है । मीन के सूर्य में जिस दिन कन्या का चन्द्रमा हो, उस रोज क्रांतिसाम्य होगा । इसी प्रकार १२ राशियों को आगे दिये चक्र के अनुसार समझ लें ।

क्रान्तिसाम्य चक्रम्

१२ सूर्य	७ सूर्य	४ सूर्य	३ सूर्य	१० सूर्य	१ सूर्य
६ चन्द्रमा	११ चन्द्रमा	८ चन्द्रमा	९ चन्द्रमा	२ चन्द्रमा	५ चन्द्रमा
क्रान्ति	क्रान्ति	क्रान्ति	क्रान्ति	क्रान्ति	क्रान्ति

क्रान्तिसाम्य फलम्

क्रान्तिसाम्ये च कन्यायां यदि पाणिग्रहो भवेत् ।
कन्या वैधव्यतां याति ईशस्य दुहिता यदि ।।

टीका- यदि क्रान्तिसाम्य में विवाह हो तो फिर महादेवजी की कन्या हो तो भी वह विधवा होती है अर्थात् क्रांतिसाम्य में विवाह वर्जित है ।

दग्धा-तिथि देखना

मीने चापे द्वितीया च चतुर्थी वृषकुम्भयोः ।
मेष कर्कटयोः षष्ठी कन्या युग्मेषु चाष्टमी ।।
दशमी वृश्चिके सिंहे द्वादशी मकरे तुले ।
एतास्तु तिथयो दग्धा शुभे कर्मणि वर्जिताः ।।
यः कश्चित्तिथयो दग्धा मुनिभिः कथितास्फुटाः ।
तिथिदग्धां कृष्णपक्षे शुक्ले चन्द्रेण रक्षति ।।

दग्धा-तिथि चक्रम्

मीन के सूर्य में	वृष के सूर्य	मेष के सूर्य	कन्या के सूर्य	वृश्चिक के सूर्य	मकर के सूर्य
धनु के सूर्य में	कुम्भ के सूर्य	कर्क के सूर्य	मिथुन के सूर्य	सिंह के सूर्य	तुला के सूर्य
२	४	६	८	१०	१२ दग्धा तिथि

टीका- ये दग्धा-तिथि शुभ कार्यो में वर्जित हैं अर्थात् त्याज्य हैं । कुछ विद्वानों के अनुसार ये दग्धातिथि कृष्ण-पक्ष में वर्जित और शुक्ल-पक्ष में शुभ हैं।

लग्न-शुद्धि देखना

केन्द्र सप्त महीने च द्वित्रिकोणे शुभाशुभम् ।
क्षने शुभप्रदश्चन्द्रः पापाः षष्ठे च शोभना ॥
तृतीयैकादशे सर्वे सौम्यायां च फलप्रदा ।
ते सर्वे सप्तमस्थाने मृत्युदा वर-कन्ययोः ॥

टीका- केन्द्र स्थान अर्थात् १ । ४ । ७ । १० और त्रिकोण ५ । ९ इन स्थानों में यदि शुभ ग्रह हो तो श्रेष्ठ है । अन्य स्थान में चन्द्रमा शुभ होता है । छठे स्थान में पाप-ग्रह शुभ होता है । ३ । ११ स्थान में सब ग्रह शुभ होते हैं तथा सातवें स्थान में सभी ग्रह अशुभ होते हैं । शुक्ल पक्ष की पंचमी से कृष्ण पक्ष की पंचमी पर्यन्त का चन्द्रमा श्रेष्ठ बली होता है । कृष्ण पक्ष की छठ से ३० अमावस तक का चन्द्रमा अशुभ होता है ।

ग्रहों का फल देखना

शनिः सूर्यश्च सप्तस्थे चन्द्रो लग्नेऽष्टमे रिपौ ।
कुजौ लग्नेऽष्टमे चास्ते शुक्रो द्यूनेऽष्टमेरिपौ ॥
गुरुर्मृत्यौ सैंहिकेयो लग्ने तुर्ये च सप्तमे ।
बुधोऽष्टमे च यामित्रे विवाहे प्राणनाशकः ॥
क्रूरयोरंतरं लग्नं चन्द्रं च परिवर्जयेत् ।
वरं हन्ति ध्रुवं लग्नं शीतरश्मिश्च कन्यकाम् ॥

टीका- यदि शनि, सूर्य लग्न से सातवें हों, चन्द्रमा १ । ६ । ८, भौम १ । ८ । ७, शुक्र ७ । ८ । ६, बृहस्पति ८, राहु १ । ७ । ४ और बुध ८ । ७ हो तो ये ग्रह इन स्थानों में विवाह-समय प्राण-नाश करने वाले हैं । यदि क्रूर ग्रहों के मध्य में चन्द्रमा अथवा लग्न हो तो वर्जनीय हैं । वे वर की शीघ्र मृत्यु के कारण हैं । चन्द्रमा कन्या की मृत्यु करता है ।

लग्नादेकादशे सर्वे लग्नपुष्टिकरा ग्रहाः ।
तृतीये चाष्टमे सूर्यः सूर्यपुत्रश्च शोभनः ॥

चन्द्रो धने तृतीये च कुजः षष्ठे तृतीयके ।
बुधेज्यौ नवषड्द्वित्रिः चतुः पंचदशे स्थितौ ॥
शुक्रोद्वित्रिचतुः पंच धर्म कर्म तनुस्थितः ।
राहुर्दशाष्टषट् पंचत्रिनवद्वादशे शुभः ॥

टीका- लग्न से ग्यारहवें स्थान में सभी ग्रह शुभ हैं । सूर्य और शनि ८ । ३ और चन्द्रमा २ । ३ और भौम ३ । ६, बुध और बृहस्पति ६ । ६ । २ । ३ । ४ । ५ । १० और शुक्र २ । ३ । ४ । ५ । ६ । १० । १- इन स्थानों में शुभ हैं और राहु, केतु ये १० । ८ । ६ । ५ । ३ । ६ । १२ इन स्थानों में शुभदायक हैं । १२ वे स्थान में मार्गी ग्रह और दूसरे स्थान में वक्री-ग्रह हों तो लग्न पर 'कर्त्तरी दोष' होता है । ऐसा ही सब स्थानों पर जानें।

अथ गोधूलि देखना

यदा नास्तंगतो भानुर्गोधूल्यां पूरितं नभः ।
सर्वमङ्गलकार्येषु गोधूलिश्च प्रशस्यते ॥

टीका- जब तक सूर्य अस्त न हो और गायों के खुरों की धूलि आकाश में पूरित हो तो वह गोधूलि सभी उत्तम कार्यों में मंगल की दाता है ।

यत्र चैकादशश्चन्द्रो द्वितीयो वा तृतीयकः ।
गोधूलिकः स विज्ञेयः शेषाः धूलिमुखाः स्मृताः ॥

टीका- जो ग्यारहवें स्थान में चन्द्रमा हो अथवा दूसरे-तीसरे हो तो उत्तम गोधूलि है । बाकी स्थान में चन्द्रमा होने पर उसे धूलि-मुख कहते हैं ।

कुलिकः क्रान्तिसाम्यं च लग्ने षष्ठाष्टमे शशी ।
तदा गोधूलिकास्त्याज्यः पंचदोषैश्च दूषितः ॥

टीका- कुलिक योग, क्रान्तिसाम्य, लग्न में, ६ और ८ में चन्द्रमा हो तो गोधूलि-लग्न में भी विवाह नहीं करना चाहिए और लग्न पांच दोष से दूषित हो । और यदि लग्न में ७ वें, ८ वें मंगल हो तो गोधूलि का शुभत्व भंग हो जाता है। इसमें विवाह करने से वर की हानि होती है ।

अंशस्य पतिरंशे च तन्मित्रं वा शुभेऽपि वा ।
पश्यतो वा शुभो ज्ञेयः सर्वे दोषाश्च निष्फलाः ॥

टीका- अंश का पति अर्थात् नवांश का स्वामी अपने नवांशक में हो अथवा नवांश के स्वामी का मित्र और शुभ ग्रह हो अथवा इनकी दृष्टि लग्न पर हो तो वह अन्य दोषों को निष्फल कर देता है ।

किं कुर्वन्ति ग्रहाः सर्वे यस्य केन्द्रे बृहस्पतिः ।
मत्तमातंगयूथानां शतं हन्ति च केसरी ॥

टीका- जो केन्द्र १ । ४ । ७ । १०- इन स्थानों में बृहस्पति अकेला हो और सब ग्रह अनिष्टकारक हों तो भी वे क्या कर सकते हैं ? जैसे अकेला सिंह सैकड़ों हाथियों को मार डालता है, ऐसे ही बृहस्पति सभी दोष दूर कर देता है ।

अथ त्रिबल विशेष मास फलम्

रविशशिविबुधेज्ये उच्चभे चाष्टवर्गे ।
अधिकसुहृदभेषु नूनमाहुर्मुनीन्द्राः ॥
यदि रविवसुसंस्थे तूर्यगेहः स्वरास्यात् ।
हरति सकलदोषान् पाणिपीडे विशेषः ॥

टीका- अब रवि, गुरु, चन्द्रमा, बुध का विशेष फल कहते हैं- यदि सूर्य, गुरु या चन्द्रमा उच्च के हों या अपनी राशि के हों या मित्रक्षेत्री हों तो १२ । ८ । ४ में भी विवाह के सभी दोषों को हरते हैं ।

स्वोच्चे स्वभे स्वमैत्रे नवांशे वर्गोत्तमे गुरुः ।
रास्फाष्टतूर्यगोपीष्टां नीचरिस्थः शुभोप्यसत् ॥

टीका- यदि बृहस्पति उच्च का या अपनी राशि का हो या मित्र की राशि का या अपने नवांश का हो या वर्गोतमी हो तो १२ । ८ । ४ भी शुभदायक हैं और नीच का शत्रु-क्षेत्री हो तो शुभ भी अशुभ होता है ।

अथ कन्यादान का लग्न देखना

दिने सदान्धा वृषमेषसिंहा रात्रौ च कन्या मिथुनं कुलीरः ।
मृगस्तुलालीवधिरोपराह्ले संध्या सुकुब्जा घटधन्विमीनाः ॥

टीका- वृष, मेष और सिंह- ये लग्न दिन में अन्धे हैं और कन्या, मिथुन तथा कर्क-ये रात्रि में अन्धे हैं । मकर, तुला, वृश्चिक-ये अपराह्न में बहरे हैं और धनु, मीन तथा कुम्भ-ये संध्या में कुबड़े हैं ।

लग्न-फल देखना

दिवान्धो वरहन्ता च रात्र्यन्धो धननाशकः ।
दुःखदा बधिरो लग्नः कुब्जो वंशविनाशकः ॥

टीका- दिन के अन्धे-लग्न में कन्या-दान हो तो वर की हानि हो और रात्रि के अंधे लग्न में फेरे हों तो धन की हानि हो । बहरे-लग्न में पाणिग्रहण हो तो दुःख हो और कुबड़े-लग्न में विवाह हो तो वंश का नाश हो ।

अथ योग वर्जित लिख्यते

परिघार्द्धं व्यतीपातं वैधृतिं सकलं त्यज्येत् ।
विष्कुम्भे घटिकाः पंच शूले सप्त प्रकीर्तिताः ॥
षट् गण्डे चातिगण्डे च नव व्याघातवज्रयोः ।
एते तु नवयोगाश्च वर्ज्या लग्ने सदां बुधैः ॥

टीका- ये नव योग सिद्ध हैं । इनकी घड़ी विद्वानों ने वर्जित की हैं । परिघ की ३० घड़ी, व्यतीपात और वैधृति सम्पूर्ण त्याज्य हैं । विष्कुम्भ की ५, शूल की ७, गण्ड-अतिगण्ड की ६, व्याघात की ९ और वज्र की ९ घड़ी मुहूर्त कार्य में वर्जित कर दें ।

योग फल देखना

व्यतीपातें भवेन्मृत्युर्गण्डान्ते मरणं ध्रुवम् ।
अग्निदग्धो भवेद्वज्रे रुजश्चैवापि गण्डके ॥
वैधव्यं वैधृती चैव विष्कुम्भे कामचरिणी ।
वीर्यहीनोऽतिगण्डे च व्याघाते मृतवत्सका ॥
परिघे च भवेद्दासी मंद्यमांसरता सदा ।

टीका- व्यतीपात में विवाह करे तो वर की मृत्यु तथा गण्डान्त-शूल में करे तो दोनों की मृत्यु हो । वज्र में करे तो आग लगे । गण्ड में करे तो रोग हो । वैधृति में विधवा हो, विष्कुम्भ में कामातुर हो, अतिगण्ड में धातुक्षय हो और व्याघात में मृतवत्सा हो, बालक मर जाँय । परिघ में पराई दासी और मांस, मदिरा का सेवन करने वाली हो । ये निषिद्ध योग हैं, इन्हें विवाह में वर्जित कर दे ।

कन्यादान का शुद्ध लग्न देखना

व्यय १२ शनिःखे १०ऽवनिजस्तृतीये ३ भृगुस्तनौ १ चन्द्रस्खला न शस्ताः । लग्ने कविर्लेशश्च रिपौ मृतौ ग्लौर्लग्नेः शुभाराश्च मदे च सर्वे ॥

टीका- जिस लग्न में विवाह करना अभीष्ट हो, उस लग्न से बारहवें स्थान में शनि, दशवें स्थान में मंगल, तीसरे स्थान में शुक्र नहीं होना चाहिए । विवाह लग्न में चन्द्रमा और पाप ग्रहों का होना अशुभ है । विवाह-लग्नेश, शुक्र और चन्द्रमा छठे स्थान में निषिद्ध होते हैं । चन्द्रमा, विवाह-लग्नेश, शुभ-ग्रह और मंगल का आठवें भाव में होना अशुभ है । विवाह लग्न में अर्थात् सप्तम स्थान में ग्रहों का न होना श्रेष्ठ है तथा सातवें स्थान में शुभ-ग्रह शुभ और पाप-ग्रह अशुभ माने गये हैं ।

विवाह की चिट्ठी लिखना

नोट- विवाह-पत्रिका में ब्राह्मण के यहाँ पंडित या मिश्र करके, क्षत्रिय के यहाँ सिंह करके, वैश्य के यहाँ लाला करके और शूद्र के यहाँ चौधरी करके लिखें।

स्वस्ति श्रीसर्वोपमायोग्य सकलगुण निधान गङ्गाजल निर्मल यमुनाजल शीतल, परम पवित्र शुभचरित्र षट्कर्म सावधान शुभस्थान मीरांपुर को श्रीमान् लाला हेतराम व लाला हरसहाय जी व समस्त बाल गोपालन को मेरठ से एतान् योग्य लिखितं लाला नैनसुखमल जी व समस्त बाल गोपालन की राम-राम बंचना । अत्र कुशलं तत्रास्तु ! अग्रे वृत्तान्तं वाच्यं वर नाम चिरंजीव लाला हीरालाल जी राशि कर्क सूर्यबल ११ चन्द्रबल ७, कन्या की राशि धनु ६, गुरुबल २, चन्द्रबल ११ अग्रे संवत् १९६० वैशाख सुदी ११ रविवार को विवाह श्रेष्ठ है, सो आप प्रमाण करना । शुभम् ।

जब पीली चिट्ठी चली जाए, फिर ७ । ९ । ११ । १५ दिनकी लग्न-पत्रिका भेजनी चाहिए । शुभ वार शुभ तिथि को देखकर लग्न लिखनी चाहिए ।

अथ लग्न लिखना

श्रीगणेशाय नमः । ॐ यं ब्रह्म वेदान्तविदो वदन्ति परं प्रधानं पुरुषं तथाऽन्ये । विश्वोद्गतेः कारणमीश्वरं वा तस्मै नमो विघ्नविनाशनाय ।। जननी जन्मसौख्यानां वर्द्धिनी कुलसम्पदाम्। पदवी पूर्व पुण्यानां लिख्यते लग्नपत्रिका ।।

अथ शुभ सम्वत्सरेऽस्मिन् श्री नृपतिविक्रमादित्यराज्ये सम्वत् १९६० शाके शालिवाहनस्य १८२५ मासानां मासोत्तमे मासे उत्तमे वैशाख मासे शुभे शुक्लपक्षे शुभतिथौ ११ एकादश्यां गुरुवासरे ३४ घड़ी २८ पल हस्तनाम नक्षत्रे ५५। १३ व्याघातनाम योगे १२ । २४ ववनाम करणे ७। २१ तत्र दिनमानं ३२। ५७ रात्रिमान् २८।०३ अहोरात्रयोरैक्यम् ६०।०० तत्र मेषाऽर्क गतांशाः २३ शेषांशा ७ तत्रेऽष्टम् ४।२० तत् समये वृषलग्नोदये एवं पंचांगशुद्धौ वर नाम चिरंजीव हीरालालजी राशि कर्क सूर्यबल २ चन्द्रबल ३ कन्या की राशि धनु १० गुरुबल १०, चन्द्रबल ६ सूर्यबल चन्द्रबल गुरुबल त्रिबल सहितं लत्तादि दशदोषरहितं पाणिग्रहण शुभम् मंगलं ददातु । कन्या के बान समौड़े ६ पहला बान वैशाख शुदि ६ सोमवार से होगा । वर के बान समौड़े ११ पहला बान वैशाख शुदि ४ शनिवार से करना । इति शुभम् । बुध शनि सोमवार से तेल आरम्भ करें ।

लग्न कुण्डली



लग्न शुद्धिचक्र



बान देखना

कोदण्डकण्ठीवृषकुम्भपंच कन्याघटे मेषझषे च सप्त ।
मृगालियुग्मे नवतैल कर्कमन्यत्रतैलं पतिनाशनं च ॥

टीका- कोदण्ड अर्थात् धन कण्ठी कहिये सिंह, वृष, कुम्भ- इनके ५ बान होते हैं । कन्या, अर्थात् तुला, मेष,मीन इनके ७ बान होते हैं । मृग अर्थात् मकर, अलि अर्थात् वृश्चिक, मिथुन और कर्क इनके ६ बान होते हैं । तेरह बान नहीं होते । दिन का विचार कर कन्या की राशि से बान देख, उससे दो बान वर के ज्यादा बढ़ा कर लिख दे । जिस दिन बान करे, वह दिन देख ले कि कौन से वार को बान करना अच्छा है ।

तैल चढ़ाने के दिन

तैलाभ्यंगे रवौ तापः सोमे शोभा कुजें मृतिः ।
बुधे धन गुरौ हानिः शुक्रे दुःखं शनौ सुखम् ॥

टीका- रविवार को तैल चढ़ावे तो ताप चढ़े, सोमवार को अच्छा, मंगल को कष्ट, बुध को धन का लाभ, गुरु को धन की हानि, शुक्र को दुःख एवं शनि वार को सुख हो ।

तैल-दोष दूर करने के उपाय

अर्के पुष्पं गुरौ दूर्वा भूमिपुत्रे रजस्तथा ।
भार्गवे गोमयं दद्यात् तैलाभ्यंगो न दूषितः ॥

टीका- रविवार को तैल चढ़ावे तो तैल में फूल डाल लें, गुरुवार को दूर्वा, भौम को रज और शुक्र को गोबर- इनके मिलाने से तैल का दोष दूर हो जाता है।

अथ कर्त्तरी दोष वर्जित

लग्नाच्चंद्राद् द्वयोद्विस्थः पापखेटो यदा भवेत् ।
कर्त्तरी वर्जनीयास्तु विवाहोपनयनादिषु ॥
न कर्तरी यदा दोषः सौम्यः सूर्यादि जायते ।
शुभग्रहयुतो लग्नः क्रूरस्थो नास्ति कर्त्तरी ॥

टीका- चन्द्रमा से १२ वें स्थान तथा दूसरे स्थान में यदि पाप-ग्रह हो तो कर्तरी-दोष होता है, जो विवाह और यज्ञोपवीत में वर्जित है । इन स्थानों में सौम्य-ग्रह हो तो दोष नहीं और क्रूर-ग्रह हो तो भी दोष नहीं माने ।

अथ होलाष्टक देखना

शुक्लाष्टमी समारभ्य फाल्गुनस्य दिनाष्टकम् ।
पूर्णिमामवधिं कृत्वा त्याज्यं होलाष्टकं बुधैः ॥
शतरुद्रा विपाशायामैरावत्यां त्रिपुष्करे ।
होलाष्टकं विवाहादौ त्याज्यमन्यत्र शोभनम् ॥

टीका- फाल्गुन शुक्ला ८ से पूर्णमासी तक होलाष्टक होते हैं । ये शतरुद्रा, विपाशा, इरावती और त्रिपुष्कर नदी के तीर वाले देशों में विवाहादि शुभ-कार्यों में वर्जित हैं । अन्य देशों में वर्जित नहीं है ।

चन्द्रमा देखना

अर्केन्दुश्च वरे श्रेष्ठः कन्यायां न कदाचन ।
वरस्य शुभदो नित्यं कन्यकाः पतिनाशनम् ॥

टीका- किसी-किसी आचार्य का मत है कि विवाह में १२ वाँ चन्द्रमा वर को हो तो श्रेष्ठ है, कन्या को नहीं । वर को तो वह शुभ है, परन्तु कन्या को १२वाँ चन्द्रमा हो तो उसके पति का नाश करता है ।

सास-श्वसुर का सुख देखना

श्वश्रू सितोऽर्कः श्वसुरस्तनुर्जामित्रस्य यः स्याद्दयितो मनः शशि ।
एतद्बलं संप्रति भावयंतांस्तेषां सुखं संप्रयदेद्विवाहतः ॥

टीका- शुक्र सास और सूर्य ससुर, लग्नेश शरीर, सप्तमेश भर्ता, और चन्द्रमा मन है । विवाह-लग्न में जो ग्रह बलिष्ठ होगा, उसकी तरफ से सुख होगा । जैसे- शुक्र बलवान् हो तो सास को सुख रहे और सूर्य बलवान् हो तो ससुर को सुख रहे- इत्यादि कहना चाहिए ।

अथ गौना सुझाना

धातृयुग्मं हयोमैत्रं श्रुतियुग्मं करत्रयम् ।
पुनर्वसुद्वयं पूषा मूलं चाप्युत्तरात्रयम् ॥

विषमे वत्सरे मासे मार्गे मेषे च फाल्गुने ।
मकरे मिथुने मीने लग्ने कन्या तुला धनुः ॥
भौमार्किवर्जिताः वारा गृह्यन्ते च द्विरागमे ।
षष्ठी रिक्ता द्वादशी च अमावास्या च वर्जिता ॥

द्विरागमन चक्रम्

रो.	मृग.	अश्विनी	अनु.	श्रवण	०	ये नक्षत्र गौने में शुभ हैं ।
धनिष्ठा	हस्त	चित्रा	स्वाति	पुनर्वसु	०	ये भी नक्षत्र शुभ हैं ।
पुष्य	रेवती	मूल	उ. ३	तीनों	०	ये भी नक्षत्र शुभ हैं ।
मार्ग.	वैशाख	फाल्गुन	०	०	०	ये महीने शुभ हैं ।
१०	३	१२	६	७	६	ये लग्न शुभ हैं ।
६	४	१४	९	१२	३०	ये तिथि त्याज्य हैं ।
मंगल	शनि	०	०	०	०	ये वार वर्जित हैं ।

दोहा- इष्ट घड़ी छः गुनी कर सूरज अंश मिलाय ।
भाग तीस का देय के गई लग्न मिल जाय ।।

अर्थ- पहले इष्ट निकाल कर रख ले । फिर इष्ट की घड़ी को ६ से गुणा करे । जितने अंश गये हों, वे मिला कर ३० का भाग दे । जितना आवे, उसे जिस राशि का सूर्य हो, उससे गिन ले । जो लग्न आवे, वह बीत गया जाने ।

।। इति विवाह प्रकरणम् ।।

अथ ज्योतिष सर्व संग्रह
तृतीय भाग
(मुहूर्त्त प्रकरण)

चन्द्रमा-वास फल देखना

आद्यः चन्द्रः श्रियं कुर्यात् मनस्तोषं द्वितीयके । तृतीये धन सम्पत्तिः चतुर्थे कलहागमः ।। पंचमे ज्ञानवृद्धिश्च षष्ठे सम्पत्तिरुत्तमाम् । सप्तमे राज्य सम्मान मरणम् चाष्टमे तथा ।।नवमे धर्मलाभं च दशमे मानसेप्सितम् । एकादशे सर्व लाभं द्वादशे हानिमेव च ।।

टीका- अब कन्या और वर दोनों को चन्द्रबल कहा है, सो इस चक्र में पण्डित जन भली प्रकार से समझ लें ।

१	लक्ष्मी-प्राप्ति
२	मन-सन्तोष
३	धन-सम्पत्ति
४	कलहागम
५	ज्ञान-वृद्धि
६	उत्तम-सम्पत्ति
७	राज-सम्मान
८	मृत्यु-भय
९	धर्म-भय
१०	मनवांछित-फल
११	सर्व-लाभ
१२	हानि-कारक

गोधूलि मास निर्णय

पिंडोभूतोदिनकृति हेमन्तर्तौ स्यादर्घास्ते । तपनसमये गोधूलिः । सम्पूर्णास्ते जलधरमालाकाले त्रेधा योज्या सकलशुभे कार्यादौ ।।

टीका- हेमन्त काल के चार महीनो में जब सूर्य अस्त समय में गोलाकार हो, तब गोधूलि लग्न होता है और तपन समय में चार मास अर्धास्त सूर्य के समय गोधूलि जानो । जलधर माला काल अर्थात् वर्षा के चार मास में सम्पूर्ण सूर्य के अस्त समय में गोधूलि जानो । यह सब कामों में शुभ है ।

चन्द्रमा मिलाना

कार्तिकाद् द्विगुणा मासा गताश्च तिथि संयुताः ।
सप्तविंशतिभिर्न्यूना विनता एकसंयुताः ।।

टीका- जिस दिन चन्द्रमा देखना हो कि आज किसका चन्द्रमा है तो कार्तिक के महीने से उस महीने तक गिने, जिस महीने में चन्द्रमा देखना हो । जितने महीने गये हों उनका दुगुना करे और पड़वा से गिनके, एक तिथि उस रोज की जोड़े, जिस रोज का चन्द्रमा देखे । हर महीने १ तिथि जोड़ के २७ का भाग दे । बाकी जो अङ्क शेष बचें, उसमें एक और मिलावे । फिर अश्विनी से गिने । गिनती में जो अङ्क आवे वह नक्षत्र जानो, उसी नक्षत्र से चन्द्रमा देखे ।

जन्म का चन्द्रमा देखना

जन्मर्क्षस्थे शशांके तु पंच कर्माणि वर्जयेत् ।
यात्रा युद्धं गृहारम्भे विवाहे क्षौरकर्मणि ॥

टीका- जन्म के चन्द्रमा में इतने काम वर्जित हैं- यात्रा, युद्ध, विवाह, हजामत बनवाना और नये घर में प्रवेश करना ।

अथ चन्द्रमा वास फलम्

मेषे च सिंहे धनु पूर्वभागे वृषे च कन्या मकरे च याम्ये ।
मिथुने तुलाकुम्भ सुपश्चिमायां कर्कालिमीने दिशि चोत्तरस्याम् ॥

टीका- १ । ५ । ९ के चन्द्रमा का वास पूर्व में, २ । ६ । १० का दक्षिण में, ३ । ७ । ११ का पश्चिम में तथा ४ । ८ । १२ का उत्तर दिशा में रहता है ।

सन्मुखे अर्थलाभाय पृष्ठे चन्द्रे धनक्षयः ।
दक्षिणे सुखसम्पत्तिर्वामे तु मरणं भवेत् ॥

टीका- सम्मुख के चन्द्रमा में लाभ, पीठ पीछे के चन्द्रमा में धन की हानि, दाहिना चन्द्रमा सुख-सम्पति करे तथा बाँया चन्द्रमा मृत्यु करता है ।

तीनों लोकों में चन्द्रमा वास फलम्

तिथिश्च त्रिगुणीकृत्य एकं च परमे लभेत् ।
शिवनेत्रैर्हरेद्भागं शेषं चन्द्रं विधीयते ॥

टीका- तिथियों को तिगुनी करके उनमे एक और मिलावे, फिर शिव-नेत्र अर्थात् तीन से उनका भाग दे, फिर चन्द्रमा का वास देखे ।

एकस्मिन् वसते स्वर्गे युग्मे पातालमेव च ।
शून्ये हि मृत्युलोके तु चन्द्रवासः प्रकीर्तिता ॥

टीका- एक बचे तो स्वर्ग में चन्द्रमा का वास जाने, दो बचें तो पाताल में और शून्य बचे तो मृत्यु लोक में ।

पाताले चैव चन्द्रे च पंच कर्माणि वर्जयेत् ।
तड़ागेकूपवारिं च अन्न नास्ति च मेदिनी ॥
यात्रायां कुशलं नास्ति पठने नास्ति अक्षरः ।

टीका- जो पाताल में चन्द्रमा का वास हो तो इतने काम न करे- तालाब और कुआं खोदने में जल नहीं हो । खेती लगाने में अन्न नहीं हो । यात्रा करने में कुशल नहीं हो और पढ़ने में अक्षर नहीं आवे ।

यात्राकार्यं प्रवेशे च गृहारम्भे च कारयेत् ।
कूपादौ तु विशेषेण सर्वकार्येषु शिक्षयेत् ॥

टीका- यात्रा में, मकान बनाने में, कूप-बावड़ी खोदने में, बाग लगाने में और जितने भी शुभदायक काम हैं, सब में चन्द्रमा का बल अवश्य देखे ।

चन्द्रमा का रंग-वाहन देखना

मेषे च वृश्चिके सिंह रक्तकुंजरवाहनम् ।
मिथुने युग्मे धनौ पीतं वाहनं तुरगं भवेत् ॥
वृषे तुले कर्कटे च वाहनं वृषभस्भृतम् ।
मकरे कुम्भे कन्यायां कृष्णं महिष वाहनम् ॥

चन्द्रमा का रंग-वाहन चक्रम्

मेष	वृश्चिक	सिंह	लाल रंग	वाहन हाथी
मिथुन	मीन	धनु	पीला रंग	वाहन घोड़ा
वृष	तुला	कर्क	श्वेत रंग	वाहन बैल
मकर	कुम्भ	कन्या	काला रंग	वाहन भैंसा

घात-चन्द्रमा देखना

मेषे आदि वृषे पंच मिथुने नवमस्तथा ।
कर्के द्वयरसः सिंहे कन्यायां दश वर्जिताः ॥
तुला त्रीणि अलौ सप्त धन वेदा मृगे वसुः ।
कुम्भ रुद्रो रविर्मीने घात चन्द्रः प्रकीर्तितः ॥

अथ घात-चन्द्र चक्रम्

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृ.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	चन्द्र
१	५	९	२	६	१०	३	७	४	८	११	१२	घात

घात-चन्द्रमा वर्जित

प्रयाणकाले युद्धे च कृषि वाणिज्यसंग्रहे ।
वादे चैव गृहारम्भे वर्जयेत् घातचन्द्रकम् ॥

टीका- यात्रा में, युद्ध में, खेती में, वाणिज्य में और घर बनाने मे घात चन्द्रमा वर्जित है ।

घात- चन्द्रमा फलम्

रोगे मृत्यु युद्धे भंगो यात्राकाले च बन्धनम् ।
विवाहे विधवा नारी घातचन्द्रफलं स्मृतम् ॥

टीका- घात चन्द्रमा में बीमार हो तो मृत्यु हो, युद्ध करे तो भंग हो, यात्रा करे तो बन्धन हो और विवाह करे तो स्त्री विधवा हो । ये घात-चन्द्र का फल है ।

सम्मुख चन्द्रमा फलम्

करणभगणदोषं वार संक्रान्तिदोषम् ।
कुतिथि कुलिकदोषं यामयामार्द्धदोषम् ॥
कुज शनि रवि दोषं राहुकेत्वादि दोषम् ।
हरति सकलदोषं चन्द्रमा सम्मुखस्थः ॥

टीका- करण, नक्षत्र, वार, संक्रांति, योग, यामार्द्ध, मंगल, शनि, रवि और राहु-केतु- इतने दोषों को सम्मुख-चन्द्रमा दूर कर देता है ।

पुष्य नक्षत्र फलम्

न योगयोगं न च लग्नलग्नम् न तारका चन्द्र बलं गुरुश्च ।
न योगिनी राहु बलिष्ठकालः एतानि विघ्नानि हरंति पुष्यः ॥

टीका- योगिनी अच्छी न हो, चन्द्रमा भी अच्छा न हो, तारा अच्छा न हो, गुरु-बल अच्छा न हो, चन्द्र-बल भी अच्छा न और भद्रा, राहु ये भी अच्छे न हों, परन्तु उस दिन पुष्य नक्षत्र हो तो वह इन सब दोषों को दूर कर देता है ।

सिंहो यथा सर्वचतुष्पदानां तथैव पुष्यो बलवानुडूनां ।
चन्द्रे विरुद्धेऽप्यथ गोचरेऽपि सिद्ध्यन्ति कार्याणि कृतानि पुष्ये ॥

टीका- जैसे सिंह चौपायों में बलवान् होता है, ऐसे ही नक्षत्रों में पुष्य नक्षत्र बलवान् है । चन्द्रमा भी विरोधी हो और गोचर भी विरुद्ध हो तो भी पुष्य नक्षत्र में कार्य नहीं बिगड़ता । पुष्य-नक्षत्र में किया काम सिद्ध होता है ।

समस्तकर्मोचितकालपुष्यो दुष्टो विवाहे मद मूर्छितत्वात् ।
सहस्रपुत्रप्रसवे न तस्मादिहाति मुक्तो मुनि लोकसंघैः ॥

टीका- सभी कार्यों में पुष्य नक्षत्र शुभ है, परन्तु विवाह में अशुभ है, क्योंकि ब्रह्मा ने अपनी पुत्री का विवाह पुष्य-नक्षत्र में ही किया था, सो पुत्री को देख कर ही उनका वीर्य स्खलित हो गया । इस वास्ते ब्रह्मा ने पुष्य को श्राप दिया । ये वार्ता वहीं की है, जहाँ साठ हजार बाल खिल्य ऋषि पैदा हुए थे ।

सिद्धियोग देखना

शुक्रे नन्दा बुधे भद्रा शनौ रिक्ता कुजे जया ।
गुरौ पूर्णा तिथिर्ज्ञेया सिद्धियोगः प्रकीर्तितः ॥

सिद्धियोग चक्रम्

शुक्र	बुध	शनि	भौम	गुरु	सिद्ध
१-६-११	२-७-१२	४-९-१४	३-८-१३	५-१०-१५	तिथि
नन्दा	भद्रा	रिक्ता	जया	पूर्णा	योग

मृत्यु-योग देखना

नन्दा सूर्ये मंगले च भद्रा भार्गवचन्द्रयोः ।
बुधे जया गुरौ रिक्ता शनौ पूर्णा च मृत्युदा ॥

मृत्यु-योग चक्रम्

र.मं.	चं.शु.	बुध	बृ.	श.
नन्दा	भद्रा	जया	रिक्ता	पूर्णा
१-६-११	२-७-१२	३-८-१३	४-९-१३	५-१०-१५

पंचक देखना

धनिष्ठा पंचके त्याज्यं तृणकाष्ठदिसंग्रहे ।
त्याज्या दक्षिणदिग्यात्रा गृहाणां छादनं तथा ॥

टीका- धनिष्ठा आधे को आदि लेकर, धनिष्ठा, शतभिषा, पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद, रेवती– ये पांच नक्षत्र पंचक के हैं, इनमें तृण, काष्ठ आदि नहीं ग्रहण करना । दक्षिण को यात्रा नहीं करना । घर नहीं छावना तथा छत नहीं गेरना चाहिए ।

शुक्र डूबने का फल देखना

इसमें कौन काम वर्जित है । शुक्र-अस्त का समय पत्रे में लिखा रहता है।

वापीकूपतड़ागयज्ञगमनं क्षौरं प्रतिष्ठाव्रतम् ।
विद्यामंदिर कर्णविधन महादानं गुरौः सेवनम् ॥
तीर्थस्थान विवाह वेद हवनं मन्त्रोपदेशा शुभः ।
दूरेणैव जिजीविषुः परिहरेदस्ते गुरौ भार्गवे ॥

टीका- बावड़ी, कुआँ, तालाब, बाग-यज्ञ, मकान, गमन, क्षौर, देवालय, मकान की प्रतिष्ठा, कान बिंधवाना, महादान अर्थात् सुवर्ण का दान, गुरु-सेवा, तीर्थ-यात्रा, विवाह, देवता का हवन, नया व्रत करना, मंदिर बनाना, मुण्डन, जनेऊ, विद्यारम्भ और जो अन्य शुभ कार्य हैं, सो शुक्र के और बृहस्पति के अस्त होने में नहीं करने चाहिए । यदि इच्छा करे भी तो इन्हें दूर से ही त्याग दे ।

शुक्र-दोष परिहार देखना

एकग्रामे पुरे वापि दुर्भिक्षे राजविग्रहे ।
विवाहे तीर्थयात्रायां शुक्रदोषो न विद्यते ।।

टीका- गाँव के गाँव में या शहर के शहर में, दुर्भिक्ष में, राज-विग्रह में, विवाह में और तीर्थ-यात्रा में, सम्मुख शुक्र का दोष नहीं मानना चाहिए ।

पितृगृहे चेत्कुचपुष्पसंभवस्त्रीणां न दोषः प्रति शुक्रसम्भवः ।
भृग्वंगिरोवत्सवशिष्ठकश्यपात्रीणां भरद्वाज मुनेः कुले तथा ।।

टीका- जो पिता के घर स्त्री कुच-पुष्प अर्थात् रजस्वला हो तो शुक्र के अस्त व शुक्र के उदय व सम्मुख आने-जाने का दोष नहीं है । जो स्त्रियाँ भृगु, अंगिरा, वत्स, वशिष्ठ, कश्यप, अत्रि तथा भरद्वाज– इन ऋषियों के गोत्र वाली हैं, उनको शुक्रास्त में भी आने-जाने का दोष नहीं है ।

चीज बेचने-खरीदने का मुहूर्त

पूर्वा विशाखा भरणीषु कृत्तिका श्लेषासु वै विक्रयणं शुभे दिने ।
चित्रांतिमः स्वातिशताशिवासव श्रुतौ न वस्तुक्रयणं नरैं भवेत् ।

टीका- तीनों पूर्वा, विशाखा, भरणी, कृत्तिका इन नक्षत्रों में तथा शुभ दिन-शुक्र, गुरु, चन्द्र, बुध– इन वारों में वस्तु बेचना तथा चित्रा, रेवती, स्वाति, शतभिषा, अश्विनी, धनिष्ठा और श्रवण– इन नक्षत्रों में तथा बृहस्पति, शुक्र, सोम, बुध– इन वारों में वस्तु खरीदना शुभ है ।

अथ चन्द्र ग्रहण देखना

भानोः पंचदशे ऋक्षे चन्द्रमा यदि तिष्ठति ।
पौर्णमास्यां निशाशेषे चन्द्रग्रहणमादिशेत् ।।

टीका- सूर्य के नक्षत्र से चन्द्रमा १५वें नक्षत्र पर हो तो पूर्णमासी को चन्द्र-ग्रहण होता है और केतु तथा चन्द्रमा एक राशि पर हों तो चन्द्र-ग्रहण होता है ।

सूर्य-ग्रहण देखना

ग्रासो न ग्रस्तनक्षत्रात् षोडशं यदि सूर्यभम् ।
अमावास्या दिवाशेषे सूर्यग्रहणमादिशेत् ॥

टीका- अमावस के दिन सूर्य-चन्द्रमा एक राशि पर हों और अमावस के दिन सूर्य-चन्द्र नक्षत्र एक हो तो पड़वा की सन्धि में सूर्य-ग्रहण होता है । सूर्य-नक्षत्र से चन्द्र-नक्षत्र तक गिनें । उसमें ११ निकाल दें । शेष १६ नक्षत्र बचें तो निश्चय ही सूर्य ग्रहण होता है ।

दोहा- चन्द्र से रवि सातवें, रवि राहु एकन्त ।
पूनों में पड़वा मिले, निश्चय ग्रहण पड़न्त ।।
रवि से राहु सातवें, शशि रवि हो एकन्त ।
मावस में पड़वा मिले, निश्चय ग्रहण पड़न्त ।।

ग्रहण का सूतक देखना

सूर्यग्रहे तु नाश्नीयात् पूर्वं याम चतुष्टयम् ।
चन्द्रग्रहे तु यामत्रीन् बालवृद्धाऽतुरैर्विना ॥

टीका- सूर्य ग्रहण से चार प्रहर पहिले और चन्द्र ग्रहण से तीन प्रहर पहले सूतक लग जाता है । उस समय बालक, वृद्ध और रोगी-इनके अतिरिक्त और को भोजन नहीं करना चाहिए ।

शुभ-कर्मों में सूतक-पातक देखना

एकविंशति यज्ञेषु विवाहे दश वासरान् ।
श्राद्धे पाक परिक्रिया न दोषो मनुरब्रवीत् ॥

टीका- यज्ञ में २१ दिन पहले, विवाह में १० दिन पहले और श्राद्ध में पकवान तैयार हो जाने पर कोई दोष नहीं लगता, परन्तु घर के मनुष्य अलग रहें।

ग्रहण कौनसी राशि को ग्रसता है ।

ग्रासस्तृतीयोष्टमगश्चतुर्थस्तथायसंस्थः शुभदः सुनित्यम् ।
त्रिकोणगो मध्यफलश्चचन्द्रमात्प्रोक्ताः सुनिष्टश्च बुधैस्तु शेषाः ॥

टीका- जिस राशि पर सूर्य हो, उससे अपनी राशि तक गिने । जो ३, ८, ४, ११ हो तो उत्तम; ५, ९, ६ हो तो मध्यम और १२, ७, १०, १- ये अधम। जैसी राशि हो, वैसा फल जानो । ग्रहण होने के दिन से ३ दिन पहले के और ३ दिन पीछे के तथा शुक्र डूबने के भी ३ दिन पहले के और उदय से ३ पीछे के सब कार्यों में वर्जित हैं ।

चन्द्रमा का निकलना-छिपना

तिथि गुणितं रजनी परिमाणं यम रहितं सित कृष्ण विमिश्रम् ।
वाण शशांक विभाजित लब्धं प्रति दिवसं चन्द्रोदयमस्तम् ।।

टीका- जिस तिथि को चन्द्रमा का निकलना व छिपना देखना हो, उस तिथि को जितनी रात्रि हो, उसी तिथि के अंकों से गुणा करे । जो गुणनफल आये, उसमें कृष्ण पक्ष में २ जमा कर दे और शुक्ल पक्ष में २ घटा दें । फिर उसे १५ से भाग दे । जो लब्धि मिले, कृष्ण-पक्ष में उतनी ही रात्रि गये चन्द्रमा छिपेगा।

द्विपंचमे नवमे शुक्ले श्रेष्ठश्चन्द्रो हि उच्यते ।
अष्टमे द्वादशे कृष्णे चतुर्थे श्रेष्ठ उच्यते ।।

टीका- किसी-किसी आचार्य का मत है कि २, ५, ९ शुक्ल-पक्ष के चन्द्रमा उत्तम हैं तथा ४, ८, १२ कृष्ण-पक्ष के चन्द्रमा उत्तम हैं ।

औषध करने का मुहूर्त

पौष्णद्वये चादितिभद्वये च हस्तत्रये च श्रवणत्रये च ।
मैत्रे च मूले च मृगे च शस्त भैषज्यकर्म प्रवदंति संतः ।।

टीका- रेवती, अश्विनी, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाति, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, अनुराधा, मूल, मृगशिरा-इन नक्षत्रों में दवा करने से रोग जल्दी जाता है ।

घात प्रकार देखना

घातः तिथिर्घातवारं घात नक्षत्र लग्नकम् ।
यात्रायां वर्जयेत् प्राज्ञैरन्यकर्म सुशोभितम् ।।

टीका- घात-तिथि, घात-वार, घात-नक्षत्र, घात-लग्न और घात-चन्द्रमा- इनको यात्रा में तथा अन्य शुभ-कार्यों में वर्जित कर दे ।

यात्रा-मुहूर्त देखना

यात्रायां दक्षिणो राहुर्योगिनी वामतः शुभौ ।
पृष्ठतो द्वयमाख्यातम् चन्द्रमाः सम्मुखे शुभः ॥

टीका- राहु दाहिनी ओर, योगिनी बांई ओर, भद्रा पीठ पीछे तथा चन्द्रमा सम्मुख शुभदायक हैं ।

सर्वदिग्गमने हस्तः पूषाश्वौ श्रवणो मृगः ।
सर्वसिद्धिकरः पुष्यो विद्यायां च गुरुर्यथा ॥

टीका- अब सभी दिशाओं की यात्रा के नक्षत्र कहते हैं- हस्त, रेवती, अश्विनी, श्रवण, मृगशिरा और पुष्य-ये नक्षत्र सर्व-सुख देने वाले हैं । पुष्य अति शुभ है, जैसे कि विद्या विषय में बृहस्पति शुभ है । इनके अलावा और नक्षत्र वर्जित हैं।

अथ हवन करने का मुहूर्त

सैका तिथिर्वारयुता कृताप्ताः शेषे गुणेऽभ्रे भुवि वह्निवासः ।
सौख्याय होमे शशियुग्मशेषे प्राणार्थनाशौ दिवि भूतले च ॥

टीका- तिथि, वार को एक जगह करके एक और मिलादे और ४ का भाग दे । ३ या शून्य बचे तो अग्नि का वास पृथ्वी में होता है, जो सुख देने वाला है। और १, २ बचे तो अग्नि का वास पाताल में होता है जो प्राण और धन का नाशक है ।

अथ ग्रह के मुख में आहुति जाना

तरणिविद्भृगु भास्करि चन्द्रमाः कुजसुरे ज्यविधुन्तुदकेतवः ।
रविमतोदिग्रहे भगणेत्तथा प्रतिखगं तृतियं तृतियंन्यसेत ॥

टीका- सूर्य के नक्षत्र से उस दिन के नक्षत्र तक गिने, जिस दिन हवन करना हो । तीन-तीन नक्षत्रों पर एक-एक ग्रह को बाँटे । जो शुभ ग्रह के मुख में आहुति जाय तो शुभ और पाप ग्रह के मुख में जाय तो अशुभ जानना । क्रम है कि ३ नक्षत्र सूर्य के, ३ बुध के, ३ शुक्र के, ३ शनि के, ३ चन्द्रमा के, ३ मंगल के, ३ बृहस्पति के, ३ राहु के और ३ केतु के होते हैं ।

योगिनी देखना

प्रतिपत्सु नवम्यां च पूर्वस्यां दिशि योगिनी ।
अग्निकोणे तृतीयायामेकादश्यां तु सा स्मृता ॥
त्रयोदश्यां च पञ्चम्यां दक्षिणस्यां शिवप्रिया ।
द्वादश्यां च चतुर्थ्यां च नैर्ऋत्यकोणगामिनी ॥
चतुर्दश्यां च षष्ठ्यां च पश्चिमायां च योगिनी ।
पूर्णिमायां च सप्तम्यां वायुकोणे तु पार्वती ॥
दशम्यां च द्वितीयायामुत्तरस्यां शिवा भवेत् ।
ईशान्यां दिशि चाष्टम्यां योगिनी समुदाहृता ॥

टीका- पड़वा और नवमी को योगिनी पूर्व में वास करती है । अग्निकोण में ३ । ११, दक्षिण में ५ । १३, नैर्ऋत्य में १२ । ४, पश्चिम में १४ । ६, वायव्य में १५ । ७, उत्तर में १० । २ तथा ईशान में ३० । ८—ऐसे योगिनी का वास जानें।

योगिनी फल

योगिनी सुखदा वामे पृष्ठे वांछितदायिनी ।
दक्षिणे धनहन्त्री च सम्मुखे मरणप्रदा ॥
मासस्य प्रतिपत् श्रेष्ठा द्वितीया कामकारिणी ।
आरोग्यदा तृतीया च चतुर्थी कलहप्रदा ॥
पंचमी च श्रियायुक्ता षष्ठी कलहकारिणी ।
भक्ष्यपानसमायुक्ता सप्तमी सुखदां मुदा ॥
अष्टमी व्याधिदा नित्यं नवमी मृत्युदा स्मृता ।
दशमी भूरिलाभास्याद्येकादशी च हेमदा ॥
द्वादशी प्राणसंदेहो सर्वसिद्धा त्रयोदशी ।
शुक्ला वा यदि वा कृष्णा वर्जनीया चतुर्दशीं ॥
पौर्णिमायाममायां च प्रस्थानं नैव कारयेत् ।
तिथिक्षये च मासान्ते ग्रहणान्ते दिनत्रयम् ॥

टीका- यात्रा में बाँये योगिनी सुखदायक है । पीछे की मनोकामना देने वाली है । दाहिने हानिकारक है । सम्मुख की मृत्यु करती है । महीने के आरंभ की पड़वा श्रेष्ठ है । २ काम काज में श्रेष्ठ है । ३ आरोग्यप्रद । ४ क्लेश देने वाली। ५ लक्ष्मीप्रदा । ६ कलहप्रिय । ७ भोजनप्रद । ८ व्याधिप्रद । ९ मृत्युप्रद । १० लाभप्रद । ११ स्वर्गप्रद । १२ प्राण संदेह । १३ सर्व सिद्धिप्रद। १४ अवश्य ही त्याज्य है । १५, ३० और तिथि घटने के दिन और मासान्त में कहीं बाहरी गाँव को भूल के भी न जाये । ग्रहणान्त के अन्त के तीन दिन भी त्याग कर जाना चाहिए ।

अथ योगिनी चक्रम्

ईशान कोण		पूर्व		अग्नि कोण
	८।३०	१।९	३।११	
उ.	२।१०	योगिनी	५।१३	द.
	१५।७	६।१४	४।१२	
वायव्य कोण		पश्चिम		नैर्ऋत्य कोण

काल-विचार

आदित्य उत्तरे कालं सौमे वायव्यमेव च ।
भौमे च पश्चिमे कालं बुधे नैर्ऋत्यमेव च ॥
गुरुश्च दक्षिणे कालं शुक्रो हानिस्तथैव च ।
शनौ पूर्वे तथा कालं एवं कालाः प्रकीर्त्तिताः ॥

काल-चक्र-विचार

र.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.
उत्तर	वायव्य	पश्चिम	नैर्ऋत्य	दक्षिण	अग्नि	पूर्व

इन-इन वारों में काल का वासा इन-इन दिशाओं में रहता है, इनमें कहीं को न जाय ।

यात्रा-वार फलम्

ताम्बूलं रविवारे च सोमे ओदनमेव च ।
भौमे धात्रिफलं भक्ष्यं बुधे मिष्टान्न भोजनम् ।।
गुरौ तु दधिसंयुक्तं शुक्रे तु तीक्ष्णमेव च ।
माषंच शनिवारे तु कृत्वा यात्रां व्रजेन्नरः ।।

यात्रा-वार चक्रम्

रविवार	चन्द्रवार	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनिवार
पान	भात चावल	आँवला	मीठा	दही	चरपरा	उड़द

जिस वार में यात्रा की जाय, उक्त चीजें खा कर जाये तो शुभ है ।

दिशाशूल-परिहार

सूर्यवारे घृतं पीत्वा गच्छेत्सोमे पयस्तथा ।
गुड़ मंगलवारे च बुधवारे तिलानपि ।।
गुरुवारे दधिर्ज्ञेयं शुक्रवारे यवानपि ।
माषान् भुक्त्वा शनैर्वार शूलदोषोप्रशांतये ।।

टीका- रविवार को जाय तो घी पीकर और चन्द्र को दूध, मंगल को गुड़, बुध को तिल, गुरु को दही, शुक्र को जौ और शनिश्चरे को उड़द खाकर यात्रा करे तो दिशाशूल का दोष नहीं होता ।

अथ राहु विचार

रविवार च नैर्ऋत्यां सोमे उत्तरमेव च ।
आग्नेया मङ्गलं चैव बुधे पश्चिममेव च ।।

गुरौ ईशानकं प्रोक्तं शुक्रे दक्षिणमेव च ।
शनौ वायव्यकोणेषु एवं राहुः प्रकीर्तितः ॥

राहु-चक्र विचार

रविवार	चन्द्रवार	मंगल	बुधवार	बृहस्पति	शुक्र	शनिवार
नैर्ऋत्य	उत्तर	अग्नि	पश्चिम	ईशान	दक्षिण	वायव्य

रवि-विचार

यामे युग्मे रात्रौ च यामे पूर्वादिगोरविः ।
यात्रास्मिन्दक्षिणे वामे प्रवेशे पृष्ठके द्वयम् ॥

टीका- एक प्रहर रात्रि रहे तथा एक प्रहर दिन चढ़े तक सूर्य नारायण पूर्व में वास करते हैं । फिर दो प्रहर दक्षिण में । फिर एक प्रहर दिन रहे से एक प्रहर रात्रि गये तक पश्चिम में । फिर दो प्रहर गये उत्तर में । सो यात्रा के लिए दाँये-बायें शुभ हैं । गृह-प्रवेश में सम्मुख और पीठ पीछे शुभ हैं ।

अथ गर्भाधान मुहूर्त्त

शुभे त्रिकोणे केन्द्रस्थे पापे षष्ठे त्रिलाभगे ।
पुत्रकामः स्त्रियं गच्छेन्नरो युग्मासु रात्रिषु ॥

टीका- जो त्रिकोण- ५ । ९, केन्द्र- १ । ४ । १०- इन स्थानों में सौम्य-ग्रह हो और ३ । ६ । ११- इनमें पाप ग्रह हो तो ऐसे लग्न में और रजोधर्म से अर्थात् ६ । ८ । १० । १२ । १४ । १६ युग्मरात्रि में पुत्रेच्छा वाली स्त्री प्रसंग करे।

नाम धरने का मुहूर्त्त

पुनर्वसुद्वये हस्तत्रये मैत्रद्वये मृगे ।
मूलोत्तराधनिष्ठास्यु द्वादशैकादशे दिने ॥
अन्यत्रापि शुभे योगे वारे बुधशशांकयोः ।
भानोर्गुरोः स्थिरे लग्ने बालनाम कृतं शुभम् ॥

टीका- पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाति, अनुराधा, ज्येष्ठा, मृगशिरा, मूल, तीनों उत्तरा और धनिष्ठा-ये नक्षत्र और ११ । १२ तिथि; बुध, चन्द्रमा, रवि, गुरु- इन वारों में और २ । ५ । ८ । ११ इन लग्नों में बालक का नाम रक्खें।

प्रसूति-स्नान वर्जित मुहूर्त्त

पुनर्वसुद्वयं चित्रा विशाखा भरणीद्वयम् ।
मूलमार्द्रा मघा हेया श्रवणो दशमस्तथा ।।
सोमः शुक्रो बुधो नारीप्रसूतिस्नानकर्मणि ।
हेया प्रतिपदा षष्ठी नवमी च तिथिक्षयम् ।।

टीका- पुनर्वसु, पुष्य, चित्रा, विशाखा, भरणी, कृत्तिका, मूल, आर्द्रा, मघा और श्रवण- ये नक्षत्र प्रसुति-स्नान मे वर्जित हैं । सोम, शुक, बुध- ये बार वर्जित हैं । १।५।६।९।३० -ये तिथि भी वर्जित हैं । इनमें प्रसूति-स्नान न करे ।

प्रसूति-स्नान शुभ मुहूर्त्त

रोहिण्युत्तररेवत्यो मूलं स्वात्यऽनुराधयोः ।
धनिष्ठा च त्रयः पूर्वा ज्येष्ठायां मृगशीर्षके ।।
एतास्त्याज्याः सदा भानां प्रसूतिस्नानकोविदैः ।
वारे भौमार्कयोः जीवे स्नान मुक्तं सदैव हि ।।

टीका- रोहिणी, तीनों उत्तरा, रेवती, मूल, स्वाति, अनुराधा, धनिष्ठा, तीनों पूर्वा, ज्येष्ठा और मूल-ये चौदह नक्षत्र त्याग के जितने और नक्षत्र रहें, उन्हें लीजे और मंगल, गुरु, रवि- ये वार प्रसुति-स्नान के लिए शुभ हैं । ६ । ८ । १२ । ५ । ९ । १४ ये तिथियाँ न हों ।

कुआँ-पूजन का मुहूर्त्त

मूलादितो द्वयं ग्राह्यं श्रवणश्च मृगः करः ।
जलवाप्यर्चने ज्ञेयाः शुक्रमंदार्कभूमिजाः ।।

टीका- मूल, पुनर्वसु, पुष्य, श्रवण, मृगशिरा और हस्त- ये शुभ हैं । शुक्र शनि, रवि, भौम- ये वार कूप, जलाशय के पूजन को उत्तम है और शुभ तिथि होनी चाहिए ।

स्त्री नवीन-वस्त्र धारणम्

हस्तादिपंचकेऽश्विन्यां धनिष्ठायां च रेवती ।
गुरौ शुक्रौ बुधे वारे धार्यं स्त्रीभिर्नवाम्बरम् ॥

टीका- हस्त, चित्रा, स्वाति, विशाखा, अनुराधा, अश्विनी, धनिष्ठा, रेवती- नक्षत्र और गुरु, शुक्र बुध- इन वारों में स्त्रियों को नये कपड़े पहनना उचित है।

पुरुष नवीन-वस्त्र धारणम्

लग्ने मीने च कन्यायां मिथुने च वृषे शुभः ।
पूषा पुनर्वसुद्वन्द्वे रोहिण्युत्तरभेषु च ॥

टीका- मीन, कन्या, मिथुन और वृष- इन लग्नों में और रेवती, पुनर्वसु, पुष्य, रोहिणी, तीनों उत्तरा- इन नक्षत्रों में पुरुष नवीन-वस्त्र पहने तो शुभ है ।

नवान्न-भोजन व वस्त्र का मुहूर्त

नवान्नभोजनं ग्राह्यं वस्त्रे प्रोक्तामशेषतः ।
वाराधिकौ सूर्यसोमौ नक्षत्रं श्रवणो मृगः ॥

टीका- नवीन अन्न का भोजन और नवीन वस्त्र धारण करने के लिए सोम और रवि-ये वार तथा श्रवण और मृगशिरा-यह नक्षत्र उत्तम हैं ।

अन्न-प्राशन मुहूर्त

आद्र्यान्नप्राशने पूर्वा सर्पार्द्रा वरुणो यमः ।
नक्षत्राणि परित्यज्य वारौ भौमार्कनन्दनौ ॥
द्वादशी सप्तमी रिक्ता पर्व नन्दास्तु वर्जिताः ।
लग्नेषु च झषो ग्राह्यो वृषः कन्या च मन्मथः ॥
शुक्लपक्षे शुभे योगे संग्राह्यः शुभचन्द्रमाः ।
मासे षष्ठाष्टमे पुंसां स्त्रियोमासे च पंचमे ॥

टीका- बालक के अन्न-प्राशन विषय में इतने नक्षत्र वर्जित हैं- तीनों पूर्वा, आश्लेषा, आर्द्रा, शतभिषा, भरणी और रेवती। भौम और शनि- वार तथा १२।

७ । ४ । ९ । १४ । ३० । १५ । १ । ६ । ११ -ये तिथि वर्जित हैं। मीन, वृष, मिथुन, कन्या- ये लग्न शुभ हैं । शुक्ल पक्ष के उत्तम शुभ योग में अन्न-प्राशन करें । शुभ चन्द्रमा हो, छठा और आठवाँ मास पुत्र के अन्न-प्राशन में श्रेष्ठ है । कन्या को पाँचवें मास में अन्न-प्राशन करावें ।

अथ चूड़ा-कर्म मुहूर्त्त

पुनर्वसुद्वयं ज्येष्ठा मृगश्च श्रवणद्वयम् ।
हस्तत्रये च रेवत्यां शुक्लपक्षोत्तरायणे ॥
लग्नं गोस्त्रीधनं कुम्भं मकरो मन्मथस्तथा ।
सौम्यवारे शुभे योगे चूड़ाकर्म स्मृतं बुधैः ॥

टीका- पुनर्वसु, पुष्य, ज्येष्ठा, मृगशिरा, श्रवण, धनिष्ठा, हस्त, चित्रा, स्वाति और रेवती- ये नक्षत्र । शुक्ल पक्ष, उत्तरायण सूर्य और वृष, कन्या, कुम्भ, धनु, मकर, मिथुन -ये लग्न । चन्द्र, बुध, शुक्र- ये वार, शुभ योग सर्वांग श्रेष्ठ हैं । जन्म-मास और रिक्ता-तिथि- ये चूड़ाकर्म और आभूषण-धारण में वर्जित हैं ।

अथ मुण्डन मुहूर्त

हस्तत्रये हरिद्वन्द्वे पूर्वाश्च मृगपंचमे ।
मूले पौष्णे च नक्षत्रे बुधाऽर्के गुरुशुक्रयोः ॥

टीका- हस्त, चित्रा, स्वाति, श्रवण, धनिष्ठा, तीनों पूर्वा, मृगशिरा, अश्विनी, पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा, मूल और रेवती-ये नक्षत्र और रवि, बुध, शुक्र तथा गुरु-ये वार मुण्डन के लिए शुभदायक हैं ।

विद्यारम्भ का मुहूर्त

देवोत्थाने कृष्णेने चापे लग्ने वर्षे च पंचमे ।
विद्यारंभात्र वर्ज्यश्च षष्ठ्यनध्यायारिक्तकाः ॥
रिक्तायां च अमावास्यां प्रतिपच्च विवर्जयेत् ।
बुधेन्दुवासरे मूर्खः शनिर्भौमो मृतिप्रदः ॥
विद्यारम्भे गुरुः श्रेष्ठो मध्यमौ भृगुभास्करौ ।
बुधे सोमोपविद्यायां शनिर्भौमो परित्यजेत् ॥

टीका- देवोत्यान कार्तिक शुक्ला ११ से आषाढ़ शुक्ला ११ तक और मीन, धनु-ये लग्न तथा पांचवें वर्ष में विद्या पढ़ना आरम्भ करना चाहिए। अमावास्या, १।८।६।१४।४- ये तिथियाँ वर्जित हैं। बुध या चन्द्रवार में विद्या आरम्भ करे तो मूर्ख हो, गुरुवार श्रेष्ठ है, शुक्र-रवि मध्यम हैं। बुध, सोम उप-विद्या के लिए हैं। शनि, भौम सर्वत्र त्याज्य हैं। हस्त, चित्रा, स्वाति, श्रवण, धनिष्ठा, तीनों पूर्वा, अश्विनी, मृगशिरा, आर्द्रा, पुष्य, पुनर्वसु, आश्लेषा, मूल और रेवती-ये नक्षत्र शुभ हैं।

अथ यज्ञोपवीत मुहूर्त्त

पूर्वाषाढाश्विनी हस्तत्रये च श्रवणत्रये ।
ज्येष्ठा पूर्वे मृगे पुष्ये रेवत्यां चोत्तरायणे ॥
द्वितीयायां तृतीयायां पंचम्यां दशमीत्रये ।
सूर्ये शुक्रे गुरौः चन्द्रे बुधे पक्षे तथा सिते ॥
लग्ने वृषे धनुः सिंहे कन्यामिथुनयोरपि ।
व्रतबन्धे शुभे योगे ब्रह्मक्षत्रिविशांपते ॥
पापो भौमः शनिः केतुः क्रूर राहु रविः त्यजेत् ।
सौम्यसोमौ बुधश्चैव गुरु शुक्रौ तथा शुभौ ॥

टीका- पूर्वाषाढ़, अश्विनी, हस्त, स्वाति, श्रवण, शतभिषा, ज्येष्ठा, पूर्वाफाल्गुनी, मृगशिरा, पुष्य और रेवती, उत्तरायण सूर्य; २।३।५।१०।११।१२।१३- ये तिथि; रवि, शुक्र, गुरु, बुध, चन्द्र- ये वार; शुक्ल पक्ष और वृष, धनु, सिंह, कन्या, मिथुन- ये लग्न और भौम शनि, केतु, राहु- ये ६।८।१२ हों, बुध, चन्द्र, शुक्र गुरु- ये शुभ स्थान में हों तो इन शुभ योगों में जनेऊ ले। तीनों वर्ण के अलग-अलग भेद कहे हैं।

ब्राह्मण को गर्भ से पांचवें या आठवें वर्ष में यज्ञोपवीत धारण करना चाहिए। इसी प्रकार क्षत्रिय को छठे या ग्यारहवें वर्ष में और वैश्य को आठवें या बारहवें वर्ष में यज्ञोपवीत धारण करना चाहिए। अगर किसी कारण से यह समय व्यतीत हो जाए तो फिर १६ वें वर्ष में ब्राह्मण को और २२वें वर्ष में क्षत्रिय को तथा २४वें वर्ष में वैश्य को यज्ञोपवीत लेना लिखा है। इन वर्षों के बीत जाने पर मनुष्य गायत्री का अधिकारी नहीं रहता।

कर्ण-छेदन मुहूर्त्त

श्रुतित्रयेऽदितिद्वन्द्वे मैत्रे हस्तत्रयोत्तरे ।
मृगे विधि युगे मूले पूषाश्वे सौम्यवासरे ॥

द्विस्वभावे घटे लग्ने कर्णवेधः प्रशस्यते ।
चैत्रपौषौ हरिस्वापं वर्षे च युगलं त्यजेत् ॥

टीका- श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, पुष्य, पुनर्वसु, अनुराधा, हस्त, तीनों उत्तरा, पूर्वा फाल्गुनी, रोहिणी, मृगशिरा, मूल, रेवती और अश्विनी-ये नक्षत्रः चन्द्रमा, बुध, गुरु, शुक्र-ये वार; मिथुन, धनु, कन्या, मीन, कुम्भ-ये लग्न; वैशाख, फाल्गुन, मार्गशीर्ष, माघ, ज्येष्ठ तथा आषाढ़-ये महीने और १, ३, ५, ७-ये वर्ष शुभ हैं । चैत्र, पौष, आषाढ़ शुक्ला ११ से कार्तिक शुक्ला ११ तक और सम वर्ष २, ४, ६ तथा ८ त्याज्य हैं । जन्म दिन से १२वें या १६वें दिन अथवा ६, ७, ८ वें महीने एवं विषम-वर्ष अति शुभ हैं ।

नींव धरने का मुहूर्त

पूर्वाषाढादितिद्वन्द्वं विधियुग्मे हरित्रयम् ।
उत्तराफाल्गुनी हस्तत्रये मूले च रेवती ॥
मैत्राश्विनी च लग्नानि सिंह कन्याघटोवृषः ।
मिथुनोमकरो ग्राह्यो वास्तुकर्मणि कोविदैः ॥
श्रावणश्चैव वैशाखः कार्तिकंफाल्गुनस्तथा ।
मासेषु मार्गशीर्षश्च वास्तुकर्मणि शस्यते ॥
वज्रव्याघातशूलानि व्यतीपातश्च गण्डके ।
विष्कुम्भे परिघो वर्ज्यो वारे भौमे च भास्करे ॥

टीका- पूर्वाषाढ, पुनर्वसु, पुष्य, मृगशिरा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, उत्तरा फाल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाति, मूल, रेवती, अनुराधा और अश्विनी-ये सब नक्षत्रः सिंह, कन्या, कुम्भ, वृष, मिथुन, मकर-ये लग्न; चन्द्र, बुध, गुरु-ये वार तथा श्रावण, वैशाख, कार्तिक, फाल्गुन, मार्गशीर्ष-ये महीने शुभ हैं । वज्र, व्याघात, शुक्ल, व्यतिपात, गण्ड, विष्कुम्भ और परिघ-ये योग तथा मंगल, रवि-ये वार त्याग कर घर की नींव धरें और बाग लगायें ।

वापी, कूप, देव-प्रतिष्ठा मुहूर्त

आर्द्रा शतभिषाऽश्लेषा विशाखा भरणी द्वयम् ।
त्याज्या च द्वादशीरिक्ता षष्ठीचेदुक्षयाऽष्टमी ॥

प्रतिपद्यतिथिर्वारो त्याज्यौ शनिकुजौ तथा ।
देवमूर्तिप्रतिष्ठायां स्थिरे लग्नोत्तरायणे ।।

टीका- बावड़ी, कुआँ, तालाब और देवता-इनकी प्रतिष्ठा भी ऐसे ही जानिए। आर्द्रा, शतभिषा, भरणी, कृत्तिका-ये नक्षत्र; १, १२, ३०, ८, ६, ९, १४- ये तिथि और शनि, मंगल-ये वार त्याग दे । शेष शुभ हैं । वृष, सिंह, वृश्चिक, कुम्भ-ये लग्न शुभ हैं । उत्तरायण सूर्य हो और चन्द्रमा बली हो तो रवि, चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र-ये वार भी शुभ हैं ।

गृह-प्रवेश मुहूर्त्त

विशाखा भरणी हेयोऽश्लेषाख्या च मघा तथा ।
अमावास्या च रिक्ता च वारे भौमे रवौ तथा ।।
गृहप्रवेशो वैशाखे श्रावणे फाल्गुने तथा ।
आश्विने च स्थिरे लग्न ग्राह्यः पक्षो बुधैः स्मृतः ।।

टीका- विशाखा, भरणी, आश्लेषा, मघा-ये नक्षत्र: ३०, ४, ९, १५-ये तिथि; भौम, रवि-ये वार गृह-प्रवेश में वर्जित हैं । वैशाख, श्रावण, फाल्गुन और आश्विन-ये मास; वृष, सिंह, वृश्चिक, कुम्भ-ये स्थिर लग्न और शुक्ल पक्ष, चन्द्रमा, शुक्र, बुध और शनि-ये वार इनमें गृह-प्रवेश उत्तम है ।

अथ क्षौर-कर्म मुहूर्त्त

पुनर्वसुद्वयं क्षौरे श्रुतियुग्मं करत्रयम् ।
रेवतीद्वितियं ज्येष्ठा मृगशीर्ष च गृह्यते ।।
क्षौर प्राणहरास्त्याज्या मघा मैत्रे च रोहिणी ।
उत्तरा कृत्तिका वारा भानुर्भौमशनैश्चराः ।।
रिक्ता षष्ठ्यष्टमी हेया क्षौरे चन्द्रक्षयानिशि ।
संध्याविष्टश्च गण्डान्ते भोजनांते च गोगृहे ।।

टीका- पुनर्वसु, पुष्य, श्रवण, धनिष्ठा, हस्त, चित्रा, स्वाति, रेवती, अश्विनी ज्येष्ठा व मृगशिरा-ये नक्षत्र शुभ हैं और बाकी प्राणहर्ता हैं । मघा, अनुराधा रोहिणी, तीनों उत्तरा, कृत्तिका-ये नक्षत्र और भौम, शनि, रवि-ये वार; ४, ६, ८ १४, ३०-ये तिथि: रात्रि और संध्या का समय और गण्डात नाम मूल आदि नक्ष और भद्रा में तथा भोजन करके और गोशाला में भी क्षौर-कर्म न करे ।

हल द्वारा बीज- वपन मुहूर्त्त

षष्ठी चैवाष्टमीं रिक्तां त्यक्त्वार्कशनिमङ्गलान् ।
मूलद्वीशमघाक्षिप्रचरध्रुवमृदूडुषु ॥
मीनयुग्मालिगोकन्याधनुर्लग्ने हलक्रिया ।
बीजोप्तिश्च शुभैतेषु द्वीशश्रुत्यम्बुपान् विना ॥
बीजोप्तितिथिवारर्क्षलग्नेष्वेव शुभं स्मृतम् ।
रोपणं सर्वसस्यानां छेदनं प्रथमं तथा ॥

टीका- षष्ठी, अष्टमी, रिक्ता तिथि तथा रवि, शनि, मंगलवार-इन सबको छोड़ कर अन्य तिथि और दिन में; मूल, विशाखा, मघा, क्षिप्र, चर, ध्रुव, मृदु संज्ञक नक्षत्रों में; मिथुन, वृश्चिक, वृष, कन्या और धनु लग्न में हल क्रिया शुभ है । विशाखा, श्रवण और शतभिषा-इन नक्षत्रों को छोड़ कर उपरोक्त मुहूर्तों में सब प्रकार के बीज बोना, धान्य-रोपण और छेदन शुभ है ।

अथ हल चलाने का मुहूर्त्त

अनुराधा चतुष्कं च मघादितियुगे करे ।
स्वातिश्रुतिविधिद्वन्द्वे रेवत्यामुत्तरात्रयम् ॥
गोस्त्री झषे हलंकार्यम् हेयाः सूर्यः शनिः कुजः ।
षष्ठी रिक्ता द्वादशी च द्वितीयाद्यय पूर्व च ॥
त्रिभिस्त्रिभिः स्त्रिभिः पंच त्रिभिः पंच त्रिभिर्द्वयम् ।
सूर्यभाद्दिनभं यावद्धानिर्वृद्धिर्हले क्रमात् ॥

टीका- अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, पूर्वाषाढ,मघा, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, स्वाति, श्रवण, रोहिणी, मीन-ये लग्न और रवि, शनि, मंगल-ये वार; ६, ४, १४, ९, १२, २, १५, ३०-ये तिथि तथा व्यतीपात योग त्याज्य हैं । सूर्य के नक्षत्र से उस दिन के नक्षत्र तक गिनिये । प्रथम तीन में हानि, फिर दूसरे तीन में वृद्धि, फिर हानि, फिर वृद्धि- इस प्रकार से हल-चक्र में समझ लीजिए ।

हल चक्र

अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू. षा.	मघा	पुन.	पुष्य	हस्त	हल ५
स्वाति	श्रवण	रो.	मृ.	उ. ३	रेवती	नक्षत्र	शुभ	३- -३
२	६	१२	लग्न	उत्तम	चं.	बुध	बृ.	-५
शु.	वार	१।३	५	७।८	१०	११	तिथि	५- -३
३	५	३	५	३	५	३	२	३ २
अ.	वृ.	हा.	वृ.	हा.	वृ.	हा.	वृ.	

सब चीजों का मुहूर्त्त

तिथि वारं च नक्षत्रं नामाक्षरसमन्वितम् ।
द्वित्रिचतुर्भिर्गुणितं ससप्ताष्टश्च भाजितम् ॥
आदि शून्ये भवेद्धानिर्मध्यशून्ये रिपोर्भयम् ।
अन्त्यशून्ये भवेन्मृत्युः सर्वांके विजयी भवेत् ॥

टीका- तिथि, वार, नक्षत्र और नाम के अक्षर– सबको जोड़े । फिर उनको दुगुने करके ६ का भाग दें । फिर तिगुना करके ७ का भाग दें । फिर उनको चौगुना करके ८ का भाग दीजिए । जो प्रथम जगह में शून्य आवे तो हानि हो। मध्य में शून्य हो तो शत्रु का भय । अन्त में शून्य हो तो मृत्यु हो और जो तीनों में अंक शेष बचे तो विजय हो ।

अथ स्वर-विचार देखना

शशिप्रवाहे गमनंप्रशस्तं सूर्यप्रवाहे न हि किंचनापि ।
प्रश्नसुषुम्नात् बहुमानभागे रिक्ते च भागे विफलं समस्तम् ।
दक्षिणे दुःख शुक्रश्च सम्मुखे हन्ति लोचनम् ।
वामे पृष्ठे शुभो नित्यं रौद्रयेच्चास्तगः शुभम् ॥

टीका- जो चन्द्र-स्वर (बायाँ) चले तो यात्रा कीजे और सूर्य-स्वर (दाहिना) चले तो अशुम है । यदि बताने वाले का और पूछने वाले का एक स्वर चलता

होय तो सब काम सिद्ध हों । यदि सुषुम्ना कहिए एक का सीधा और दूसरे का उल्टा चले तो सब काम निष्फल हों । दक्षिण स्वर से यात्रा में यदि शुक्र दाहिने हो तो दुःख हो । सम्मुख नेत्र-पीड़ा करे और बायें या पीछे पड़े तो शुभ है ।

अथ पशु-विक्रय मुहूर्त्त

अमावस्याष्टमी त्याज्या पूर्णिमा च चतुर्दशी ।
रविवारे वर्जनीयः पशूनां च विनिर्गमः ॥
चित्रोत्तरा रोहिणी च श्रवणेपि विवर्जितः ।
एतेषु पशुजातीनामशुभो निर्गमो भवेत् ॥

टीका- ३०, ८, १५, १४ ये तिथि; रविवार और तीनों उत्तरा, श्रवण, चित्रा, रोहिणी -ये नक्षत्र पशु को बेचने में वर्जित है । इनसे अन्य में बेचना चाहिए ।

पशु बेचने व खरीदने का मुहूर्त्त

पुष्यं भाद्रपदायुग्मं मैत्रं श्रवणमश्विनः ।
हस्तोत्तरामृगस्वातिस्तथा श्लेषा च रेवती ॥
ग्राह्याणी भानि चैतानि क्रयविक्रयणे बुधैः ।
चन्द्रभार्गवजीवे च वारे शकुनमुत्तमम् ॥

टीका- पुष्य, पूर्वा भाद्रपद, उत्तरा भाद्रपद, अनुराधा, अश्विनी, हस्त, तीनों उत्तरा, मृगशिरा, स्वाति, आश्लेषा और रेवती- ये नक्षत्र पशु खरीदने-बेचने में शुभ हैं और चन्द्रमा, शुक्र तथा गुरु-ये वार और शुभ शकुन देखें तब गाय, भैंस, घोड़ा आदि पशु खरीदें और बेचें ।

मन्त्र-उपदेश करने का मुहूर्त्त

मन्त्रस्वकरणं चैत्रे बहुदुःखफलप्रदम् ।
वैशाखे रत्नलाभश्च ज्येष्ठे च मरणं ध्रुवम् ॥
आषाढ़े बन्धुनाशः स्यात् श्रावणे तु शुभावहम् ।
प्रजाहानिर्भाद्रपदे सर्वत्र सुखमाश्विने ॥

टीका- अब मन्त्र-दीक्षा लेने का शुभाशुभ कहते हैं । यदि चैत्र मास में दीक्षा ले तो बहुत दुःख पावे, वैशाख में ले तो रत्न-लाभ, ज्येष्ठ में ले तो मृत्यु हो, आषाढ़ में भाई का नाश, श्रावण में ले तो शुभ हो, भाद्रपद में ले तो सन्तान का नाश

और आश्विन मास में मन्त्र-दीक्षा ले तो अनन्त-सुख प्राप्त होता है ।

कार्तिके धन वृद्धिः स्यान्मार्गशीर्षे शुभप्रदः ।
पौषे तज्ज्ञानहानिः स्यान्माघे मेधाविवर्धनम् ॥
फाल्गुने सुखसौभाग्यं सर्वत्र परिकीर्तितम् ।
दीक्षाकर्मफलं मासे श्वेतेषु च शुभाशुभम् ॥

टीका- कार्तिक मास में मन्त्र-दीक्षा लें तो धन की वृद्धि हो । मार्गशीर्ष में ले तो शुभ हो । पौष में ज्ञान-हानि हो । माघ में ज्ञान की वृद्धि हो तथा फाल्गुन में मन्त्र-दीक्षा ले तो सौभाग्य और यश बढ़े ।

गाँव में या नगर में रहने का मुहूर्त्त

ग्रामनाम्नो भवेदृक्षं तदाद्याः सप्त मस्तके ।
पृष्ठे सप्त हृदे सप्त पादयोः सप्त तारकाः ॥
मस्तके च धनी मान्यः पृष्ठे हानिश्च निर्धनः ।
हृदये सुख सम्पत्तिः पादे पर्यटनं फलम् ॥

टीका- जिस गाँव या शहर में बसना चाहे, उस गाँव के नाम अक्षर से नक्षत्र जान लीजे । जो नक्षत्र गाँव का आवे, उसके पहले प्रथम नक्षत्र पर्यन्त अट्ठाईस जानिए । उसमें से गाँव का नक्षत्र आदि लेके ७ नक्षत्र गाँव के माथे पर दीजे, और ७ पीठ पर, ७ हृदय पर तथा ७ पाँवों पर, तब फिर अपने नक्षत्र से देखिए। जो माथे पर पड़े तो वंश में धनी हो और सम्मान पावे । पीठ पर पड़े तो हानि और हृदय पर पड़े तो सुख-सम्पत्ति और पाँवों पर गिरे तो पर्यटन करे ।

अथ रोगी- स्नान मुहूर्त्त

लग्ने चरे सूर्य कुजेज्यवारे रिक्तातिथौ चन्द्रबले च हीने ।
केन्द्रत्रिकोणायमते च पापे स्नानं हितं रोगविमुक्तिकानाम् ॥

टीका- १ । ४ । ७ । १०- ये लग्न हों; रवि, मंगल, बृहस्पति- ये वार हों और रिक्ता ४, ९, १४ तिथि और चन्द्रमा बल-हीन हो और १ । ४ । ७। १०- इन केन्द्र स्थानों में और त्रिकोण ९ । ५ और ११ वें पाप-ग्रह हों तो रोगी का रोग जाने पर स्नान करायें ।

मघोत्तराब्रह्म भुजङ्ग पौष्णेः पुनर्वसुस्वाति विहीन भेषु ।
रिक्ताभिः हीने हिमगौ च शुक्रे बुधे शुभेस्नानमरोगजन्तोः ॥

टीका- मघा, तीनों उत्तरा, रोहिणी, आश्लेषा, रेवती, पुनर्वसु और स्वाति-इनका त्याग करें। रिक्ता तिथि ४, ९, १४ इनका त्याग करें । चन्द्रमा, शुक्र, बुध ये वार त्याग करें तथा अन्य नक्षत्रों और वारों में रोगी को स्नान करायें।

यात्रा का मुहूर्त्त

उषः प्रशस्यते गर्गः शकुनं च बृहस्पतिः ।
अंगिरामनउत्साहो विप्रवाक्यम् जनार्दनः ॥

टीका- गर्ग मुनि का यह वाक्य है कि ५ घड़ी रात रहे यात्रा करे तो शुभ है । बृहस्पतिजी का यह वाक्य है कि शकुन देख कर यात्रा करे । अंगिरा ऋषि का यह वाक्य है कि मन में आनन्द हो तभी यात्रा करे । और जनार्दन का यह वाक्य है कि ब्राह्मण की आज्ञा लेकर यात्रा करे तो शुभ है।

प्रस्थान करना

यज्ञोपवीतकं शस्त्रं मधुं च स्थापयेत्फलम् ।
विप्रादिके तथा सर्व स्वर्णधान्यवरादिकम् ॥

टीका- प्रस्थान हेतु ब्राह्मण को जनेऊ रखना चाहिए । क्षत्रिय को शस्त्र, वैश्य को मीठा, शूद्र को फल तथा अन्य जातियों को अन्न या सोना रखना चाहिए। प्रस्थान उसे कहते हैं कि यात्रा करने के दिन नहीं जाना हो तो पहिले दिन कुछ चीज दूसरे के यहाँ धरदे ।

यात्रा के समय शुकुन देखना

इन्धनं च तथाङ्गारं गुड़ं सर्पिस्तथाऽशुभम् ।
अभक्तो मलिनोमन्दः तथा नग्नश्च ब्राह्मणः ॥

टीका- यात्रा में घर से निकलते ही लकड़ी, अग्नि, गुड़, तैल अभक्त मलिन तथा मन्द व्यक्ति और नग्न (नंगे सिर) ब्राह्मण मिले तो उन्हें अशुभ समझना चाहिए।

अच्छे शकुन देखना

श्रुति विप्रः निनादश्च नद्यावर्तः सकौतुकः ।
सुभगा स्त्री शुभः शब्दो गम्भीरः सुमनोहरः ॥

टीका- वेद पाठी ब्राह्मण, गाना गाती या नाचती हुई वेश्या, गौ, हाथी, धींवर, भरा हुआ जल का घड़ा या मशक भरी हुई, भंगी भरा हुआ टोकरा लिए, बाजा, घण्टा बजता हुआ, फूल और फूलों का हार लिए माली, मोतियों की या फूलों की माला पहने कन्या, सुहागिन स्त्री, गोद भरी हुई-ये शकुन यात्रा के लिए शुभ हैं ।

दिशा-शूल देखना

शनौ चन्द्रे त्यजेत्पूर्वां दक्षिणां च दिशं गुरौ ।
सूर्य शुक्रे पश्चिमाञ्च बुधे भौमे तथोत्तरे ॥

टीका- शनिश्चर और सोमवार को पूर्व में दिशाशूल जानो । बृहस्पति को दक्षिण में, रवि और शुक्र को पश्चिम में तथा बुध और मंगल को उत्तर में दिशाशूल जानिए । यात्रा के समय ये त्यागने चाहिए ।

अनुराधात्रयं हस्तो मृगाश्वो चादितिद्वयम् ।
यात्रायां रेवती शस्ता निन्द्यार्द्राः भरणीद्वयम् ॥
मघोत्तरा विशाखा च सर्पश्चान्ये च मध्यमाः ।
षष्ठी रिक्ता द्वादशी च पर्वाणि च विवर्जयेत् ॥
लग्नं कन्या मन्मथश्च मकरश्च तुलाधरः ।
यात्रा चन्द्रबले कार्या शकुनं च विचारयेत् ॥

टीका- अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, हस्त, मृगशिरा, अश्विनी, पुष्य, पुनर्वसु और रेवती-ये नक्षत्र शुभ हैं । आर्द्रा, भरणी, कृत्तिका, मघा, तीनों उत्तरा, विशाखा और आश्लेषा- ये अशुभ हैं । शेष नक्षत्र मध्यम हैं । ६, ४, ९, १२, १४, ३०, १५- ये तिथियाँ और व्यतीपात योग वर्जित हैं । कन्या, मिथुन, तुला और मकर- ये लग्न शुभ हैं । चन्द्रबल और शकुन विचार करके यात्रा कीजे ।

नित्य दशा देखना

तिथि वारं च नक्षत्रं नामाक्षर समन्वितम् ।
नवभिश्च हरेद्भागं शेषं दिनदशोच्यते ॥

रविश्चन्द्रो भौमराहुः गुरुमन्दज्ञके हितौ ।
क्रमेण सा दिशा ज्ञेया फलं पूर्वोक्तमेव हि ।।

टीका- तिथि, वार, नक्षत्र और अपने नाम के अक्षर– सबको इक्ट्ठा करके ६ से भाग दे । १ बचे तो सूर्य की दशा जानना । २ बचे तो चन्द्रमा की । ३ रहे तो भौम की । ४ रहे तो राहु की । ५ बचे तो गुरु की । ६ बचे तो शनि की । ७ बचे तो बुध की । ८ बचे तो केतु की । और शून्य बचे तो शुक्र की। इसका फल वैसा ही जानो, जैसा वर्ष में मुग्धा दशा का होता है ।

जन्म तारा चतुर्गुण्या तिथि वारसमन्वितम् ।
अष्टभिस्तु हरेद्भागं शेषांके च दशा स्मृताः ।।
रविचन्द्रकुजज्ञाश्च गुरुशुक्रशनिः क्रमात् ।
शून्यशेषे यदा जातो राहोरपि दशा स्मृताः ।।

टीका- जन्म-नक्षत्र को दिन-नक्षत्र तक गिने । फिर चौगुना कर, तिथि, वार मिलावे और आठ का भाग दे । जो १ बचे तो रवि, २ बचे तो चन्द्रमा, ३ बचे तो भौम, ४ बचे तो बुध, ५ बचे तो गुरु, ६ बचे तो शुक्र ७ बचे तो शनि और पूरा भाग लगे तो राहु और केतु की दशा जाननी चाहिए ।

चौखट लगाने का मुहूर्त

सूर्यर्क्षाद्युग्मैः शिरस्थ्य फलं लक्ष्मीस्ततः कोणभैः ।
नागैरुद्वसनं ततो गजमितैः शाखासु सौख्यं भवेत् ।।
देहल्यां गुणभैः मृतगृहपतेर्मध्यस्थितैः वेदभैः ।
सौख्यं चक्रमिदं विलोक्य सुधिया द्वारं विधेयं शुभम् ।।

टीका- सूर्य के नक्षत्र से ४ सिर के हैं, उनमें चौखट लगावे तो लक्ष्मी की प्राप्ति हो । और उससे अगले ८ कोण के हैं, ये उजाड़ करें । फिर अगले ८ शाखाओं को सुखकारी हैं । अगले ३ देहली को मृत्युकारक हैं। अगले ४ मध्य के तथा सौख्यकारक हैं ।

घर का दरवाजा लगाने का मुहूर्त

कर्के कुम्भे च सिंहे च मकरे च दिवाकरे ।
पूर्वे वा पश्चिमे वापि द्वारं कुर्याच्च वेश्मनः ।।

मेषे वृषे वृश्चिके च तुले चापे यदा रविः ।
गृहद्वारं तदा कुर्यादुत्तरं चापि दक्षिणम् ॥
धनुर्मिथुनकन्यायां मीने च यदि भानुमान् ।
कर्त्तव्यं वै तदा गेहं कृते दुःखमवाप्नुयात् ॥

टीका- कर्क, सिंह, मकर, कुम्भ के सूर्य में घर बनावे तो घर का द्वार पूर्व-पश्चिम में शुभ है । मेष, वृष, वृश्चिक, तुला– इनके सूर्य में उत्तर-दक्षिण घर का दरवाजा शुभ है । धनु, मिथुन, कर्क और मीन के सूर्य में घर निर्माण अशुभ है और दुःखप्रद है ।

भवेत्पूषणी मैत्रपुष्ये च शुक्राः करे हस्त चित्रा नले चादिते च। गुरो शुक्र चन्द्राऽर्क सौम्येषु वारे तिथौ नन्द पूर्णा जया द्वार शाखा ॥

टीका- रेवती, अनुराधा, पुष्य, ज्येष्ठा, हस्त, चित्रा, स्वाति, पुनर्वसु-ये नक्षत्र; गुरु, शुक्र चन्द्र, शनि– ये वार, १, ६, ११, ३,, १३, ८, ५, १०, १५- ये तिथियाँ तथा २ । ३ । ५ । ८ । ६ । १२ । ११- ये लग्न दरवाजा लगाने में शुभ हैं ।

कुआँ खोदने का मुहूर्त्त

हस्तास्तिस्रो वासव वारुणं च शर्व पित्र्यं त्रीणि चैवोत्तराणि ।
प्राजापत्यं चापि नक्षत्रमाहुः कूपारम्भे श्रेष्ठमाद्या मुनीन्द्राः ॥

टीका- हस्त, चित्रा, स्वाति, धनिष्ठा, शतभिषा, आर्द्रा, मघा, तीनों उत्तरा और रोहिणी-ये नक्षत्र, चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र-ये वार तथा २, ३, ५, ७, १० १३, १५- इन तिथियों में कुआँ बनवाना व खोदना शुभ है ।

पुनः द्वितीय क्रम देखना

कूपचक्रं प्रवक्ष्यामि यदुक्तं ब्रह्मयामले ।
रोहिण्यादि लिखेच्चक्रं यावत्तिष्ठति चन्द्रमाः ॥
एकमध्ये द्वयं पूर्वे तृतीयेरग्निमेव च ।
याम्ये बाणसंज्ञकश्च नैर्ऋते षष्ठमेव च ॥
पश्चिमे युग्मवायुश्च उत्तरे त्रयईरितः ।
ईशाने त्रय दातव्या वृद्धं रक्षादनुक्रमात् ॥

मध्यमे स्तुजलं स्वादु पूर्वो भूमौ च खण्डितम् ।
आग्नेयां च जलं प्रोक्तं याम्ये च निर्जलं भवेत् ।।
नैर्ऋत्या च जलं प्रोक्तं पश्चिमे क्षारमेव च ।
वायव्ये चैव पाषाणं उत्तरे च समुद्भवेत् ।।
ईशाने मनसा शुद्धिः वापी कूपस्य लक्षणम् ।
ध्रुवे करजलं मैत्रे वासवे पितृभेषु च ।।
रविमदने द्वितीया च पंचमी सप्तमीषु च ।
घटवृष हरिलग्ने जीव शुक्रार्क वारे ।।
मुनिवर कथितोऽयं कूपकारम्भ सिद्धः ।

टीका- रोहिणी से आरंभ कर २७ नक्षत्र तक इस प्रकार गिन कर धरे कि १ मध्य में, २ पूर्व में ३, अग्निकोण में, ५ दक्षिण में, ६ नैर्ऋत्य में, २ पश्चिम में, २ वायव्य में, ३ उत्तर में, ३ ईशान में रहें । अब रोहिणी से अन्तिम नक्षत्र तक जो संख्या आवे, उसके अनुसार चक्र देखकर फल कहे ।

३ ईशान शुन्दर जल	२ पूर्व में जल नहीं आये	३ अग्नि. जल हो
३ उत्तर सुन्दर जल	१ मध्य मीठा शीघ्र जल	५ दक्षिण में जल न आये
२ वायव्य पत्थर निकले	२ पश्चिम रेता खारी जल	३ नैर्ऋत्य जल

बाग लगाने की प्रतिष्ठा का मुहूर्त्त

गोसिंहालिग तेषु चोत्तरगते भानो बुधादित्रये ।
चन्द्रार्के च शुभौ बुधे अपि दयारामप्रतिष्ठांकुरुः ।।

टीका- वृष, सिंह, वृश्चिक- इन राशियों में, सूर्यउत्तरायण में तथा बुध, गुरु, रवि, चन्द्रमा-ये वार शुभ हैं । आश्लेषा, भरणी, कृत्तिका, शतभिषा, विशाखा-ये नक्षत्र तथा अमावास्या ४, १४, ६, २, ८, ६, १२– ये तिथियाँ अशुभ हैं ।

सगाई में लड़की के सिर में डोरें गेरना

विश्वस्वातिवैष्णव पूर्वात्रय मैत्र वस्वाग्रेयैर्वाकर पीड़ोचितित्रृक्षैः । वस्त्रालङ्कारादिसमेतः फलपुष्पैसन्तोष्यादौस्याद नुकन्यावरणं सत् ।।

टीका- उत्तराषाढ, स्वाति, श्रवण, तीनों पूर्वा, अनुराधा, कृत्तिका, विवाह-नक्षत्र-इतने नक्षत्रों में तथा चन्द्र, गुरु, शुक्र, बुध-इन वारों में कन्या के सिर में डोरे गेरें और अच्छे वस्त्र और आभूषण पहनावें ।

अथ कष्ट-योग देखना

शतभिषाकरआर्द्रा स्वातिमूलानि पूर्वा । भरणि सहितपुष्यो भौममंदार्कवाराः ।। प्रथमदिन चतुर्थी द्वादशी षष्ठिभूता । हरिहरविधि रक्षा रोगिणां काल मृत्युः ।।

टीका- शतभिषा, हस्त, आर्द्रा, स्वाति, तीनों पूर्वा, भरणी और पुष्य- ये नक्षत्र भौम, शनि और रवि- ये वार और १, ४, १२, ६, ३०,- ये तिथि, ऐसे योग में यदि कोई बीमार हो तो विष्णु आदि के रक्षा करने पर भी नहीं बचे ।

अथ ज्वालामुखी योग

पड़वा मूल पंचमी भरणी आठें कृत्तिका ।
नवमें रोहिणी दशमी श्लेषा ज्वालामुखी ।।
जन्मे तो जीवे नहीं, बसै तो ऊजड़ होय ।
कामनी पहरे चूड़ियाँ, निश्चय विधवा होय ।।
कुएँ नीर झाँके नहीं, खाट पड़ो न उठन्त ।
ज्योतिषी जो जाने नहीं ज्योतिष कहता ग्रन्थ ।।

टीका- पड़वा के दिन मूल, पंचमी के दिन भरणी, आठें को कृत्तिका, नौमी को रोहिणी, दशमी को आश्लेषा– ये नक्षत्र अग्निमुखी हैं । जो इनमें जन्म ले तो जीवे नहीं और घर में बसे तो ऊजड़ होय और स्त्री चूड़ी पहने तो विधवा होय। इनमें कुआं नहीं झांके, और जो बीमार होकर खाट मे पड़े तो उठे नहीं । ज्योतिष ग्रन्थ यह कहता है ।

सूतक-निर्णय देखना

महिष्योऽजास्तथा गावो ब्राह्मण्यादिस्त्रियस्तथा ।
दशरात्रेण शुध्यन्ति भूमिस्थं च नवोदकम् ।१।

टीका- भैंस, बकरी, गाय, दूध के पशु और ब्राह्मणी आदि स्त्रियाँ बच्चा होने पर तथा भूमि और मेघ का जल-ये दश रात्रि में शुद्ध होते हैं ।

माता-पिता की शुद्धि

दशाहाच्छुध्यते माता अवगाह्य पिता शुचिः ।२।

टीका- माता तो दश दिन में शुद्ध होती है और पिता स्नान करने से तुरन्त ही शुद्ध हो जाता है ।

मृतक-पातक निर्णय देखना

यदायदा भवेद्दाहः सूतकं मृतपूर्वकम् ।

टीका- निर्णय सिन्धु में लिखा है कि दाह तो किसी भी दिन हो, परन्तु पातक मृत्यु के ही दिन से मानना चाहिए और श्राद्ध भी उसी तिथि में होना चाहिए, जिसमें मृत्यु हुई हो ।

मरने में पातक देखना

सर्वेषां च दशाहं स्यात् सूतकीनां च संत्यजेत् ।
चतुर्थे दशरात्र स्यात् षट् रात्रिश्च पंचमे ॥
षष्ठे तु चतुरो ज्ञेया सप्तमे च दिनत्रयम् ।
अष्टमे दिनमेकन्तु नवमे प्रहरद्वयम् ॥
दशमे स्नानमात्रेण एवम् गोत्र प्रसूतकम् ।

टीका- मरने में चारों वर्णों का दस दिन का सूतक होता है, इस वास्ते सूतकियों का त्याग करे । परन्तु ये भी प्रमाण है कि जो चौथी पीढ़ी हो तो १० दिन तक सूतक माने और पांचवीं में ६ दिन का, छठी में ४ दिन का, सातवीं में ३ दिन का, आठवीं में १ दिन का, नवीं में दो प्रहर का तथा दशमी में स्नान करने मात्र से शुद्ध हो जाते हैं । यह गोत्र के अनुसार सूतक कहा जाता है ।

वर्जित त्रिपुष्कर योग

यमलादित्रिपुष्कर मूलमघा वसुवासवपंचक पंचयुता ।
भरणी नहिं कीजे प्रेतक्रिया क्षयजातकुटुम्बस्वयंत्रितया ।।

टीका- यमलादि त्रिपुष्कर योग और मूल, मघा, धनिष्ठा, शतभिषा, पूर्वा भाद्रपद, उत्तरा भाद्रपद, रेवती, भरणी-इन नक्षत्रों में प्रेत की क्रिया नहीं करे और जो करे तो कुटुम्ब वालों में या अपने घर में और भी दुःख प्राप्त हो ।

त्रिपुष्कर योग देखना

भद्रातिथौ रविजभूतनयार्कवारे दशार्थ चरणादिति वह्नि विश्वे । त्रैपुष्करौ भवति मृत्यु विनाशवृद्धौ त्रैगुण्यदो द्विगुणकृद्धसुतस्यचान्द्रः ।।

टीका- भद्रा तिथि में सो कोई भी तिथि हो; शनि, मंगल या रविवार– इन वारों में से कोई वार हो और विशाखा, उत्तरा फाल्गुनी, पूर्वा भाद्रपद नक्षत्र हों तो ऐसे योग को त्रिपुष्कर कहते हैं । इसमें मृत्यु (हानि) होवे तो तीन होंय और वृद्धि (जन्म) भी तन ही होंय । ये ही तिथि और ये ही वार और धनिष्ठा, चित्रा, मृगशिरा ये नक्षत्र हों तो ऐसे योग को द्विपुष्कर योग कहते हैं और इसमें भी वृद्धि तथा हानि होते हैं ।

नींव धरने में शेषनाग विचार

सिंहे कन्ये तुलायां भुजग पतिमुखं शम्भु कोणेऽग्नि खाते, वायव्ये शेषवक्त्रेअलिधन मकरे ईश खातं वदन्ति । कुम्भे मीने च मेषे नैर्ऋति दिशि मुखं खात वायव्य कोणे, उद्भे मिथुने कुलीरेऽग्निदिशि मुखं राक्षसी कोणखातम् ।।

टीका- सिंह, कन्या, तुलाके सूर्य में शेषनाग का मुख ईशान दिशा में रहता है, अतः अग्नि दिशा में खोदे और चिने । वृश्चिक, धनु, मकर के सूर्य में शेष का मुख वायव्य में रहता है, अतः ईशान में चिने ।कुम्भ, मीन, मेष के सूर्य में शेष का मुख नैर्ऋत्य में होता है, अतः वायव्य में चिने । वृष, मिथुन, कर्क के सूर्य में शेष का मुख अग्नि दिशा में रहता है, इसलिए नैर्ऋत्य में नींव चिने ।

शेषनाग का फन देखना

ऐन्द्र्यां शिरो भाद्रपदः त्रिमासे । याम्यां शिरो मार्गशिरस्त्रयं च ।। फाल्गुन्य मासाद् दिशि पश्चिमीयाम् । ज्येष्ठात् त्रिमासे च तिथोत्तरेषु ।।

टीका- भाद्रपद, आश्विन, कार्तिक-इन तीन महीनों में शेषनाग का सिर पूर्व दिशा में रहता है । मार्गशीर्ष, पौष, माघ-इन तीन मासों में दक्षिण दिशा में रहता है । फाल्गुन, चैत्र, वैशाख इन तीन मासों में पश्चिम में और ज्येष्ठ, आषाढ़ तथा श्रावण में उत्तर दिशा में रहता है ।

शिरः खनेत् मातृपित्रोश्च हन्ता पृष्ठं खनेत् भयरोगपीड़ा ।
पुच्छं खनेच्च त्रिषु गोत्रहीनः स्त्री पुत्र लाभो धन वामकुक्षौ ।

टीका- यदि शेषनाग के सिर पर खुदवाये तो माता-पिता की हानि होय और पीठ पर खुदवाये तो भय एवं रोग पीड़ा होय । पूँछ पर खुदवाये तो तीन गोत्र की हानि होवे और जो खाली जगह पर खुदवाये तो स्त्री, पुत्र, धन इत्यादि का लाभ होवे ।

पृथ्वी का सोना देखना

प्रद्योतनात् पञ्चरवांक सूर्य्योः नवेन्दुं षड्विंशमितानि भानि ।
सुप्ता मही नैव गृहं विधेयं तड़ागवापी खननं न शस्तम् ।।

टीका- सूर्य के नक्षत्र से ५वें, ७वें, ९वें, १२वें, १९वें, तथा २६वें- इन नक्षत्रों में पृथ्वी सोयी रहती है । सोती हुई पृथ्वी को तालाब, बावड़ी, कुआँ, हवेली इत्यादि के निमित्त नहीं खुदवाये ।

तिथि-निर्णय देखना

यां तिथिं समनुप्राप्य उदयं याति भास्करः ।
सा तिथिः सकला ज्ञेया दानाध्ययनकर्मसु ।।

टीका- जिस तिथि में सूर्य उदय होता है, वह तिथि दान करने में और विद्या के पढ़ने में पूरे दिन भर मानी जाती है ।

व्रत-निर्णय देखना

शिवं वा शिवदुर्गा च दीपिकां चाहुताशनीम् ।
जन्माष्टमी चन्द्रषष्ठी पूजयेत् प्रथमे दले ।१।

टीका- शिवजी का व्रत और दुर्गा का व्रत, दिवाली और होली, जन्माष्टमी, चन्दन षष्ठी एवं सत्यनारायण आदि व्रत तिथि के पहिले भाग में करने चाहिए ।

एकादशी यदा नष्टा परतो द्वादशी भवेत् ।
उपोष्या दशमी विद्धः मुनिरुद्दालकोऽब्रवीत् ।२।

टीका- यदि एकादशी की हानि हो तो द्वादशी छोड़ के दशमी बिद्ध एकादशी में व्रत कर ले- ऐसा उद्दालक मुनि ने कहा है ।

नवमी पलमेकन्तु दशम्याश्च तिथिक्षयः ।
तदा एकादशी त्याज्या द्वादश्यां व्रतमाचरेत् ।३।

टीका- नवमी १ पल हो, दशमी का क्षय हो अर्थात् बिल्कुल नहीं हो तो उस एकादशी को छोड़कर द्वादशी में व्रत करना चाहिए ।

हरि-वासर देखना

आभाका सित पक्षं तु मैत्रं श्रवण रेवती ।
संगमे नैव भोक्तव्यंद्वादशी द्वादशाहरेत् ।।

टीका- जो एकादशी व्रत किया हो और अगले दिन द्वादशी को अनुराधा नक्षत्र हो और महीना आषाढ़ का होवे और भाद्रपद में द्वादशी को श्रवण होवे और कार्तिक में द्वादशी को रेवती और चाँदनी रात होय तो इनमें जो भोजन करे तो बारह वर्ष किये हुए एकादशी व्रत का फल नष्ट होता है ।

मैत्रस्य प्रथमे पादे श्रवणे च द्वितीयके ।
रेवती अन्त्यपादेषु भोजनं च विवर्जयेत् ।।

टीका- अनुराधा के प्रथम चरण में, श्रवण के दूसरे चरण में तथा रेवती के चौथे चरण में भोजन नहीं करना चाहिए ।

सर्व प्रतिष्ठा-मुहूर्त देखना

जलाशयारामसुरप्रतिष्ठा सौम्यायने जीवशशांक शुक्रे ।
दृश्ये मृदुक्षिप्रचर ध्रुवे स्यात्पक्षेसितेस्वर्क्ष तिथिक्षणे वा ।।

टीका- कुआं आदि सर्व प्रतिष्ठा में उत्तरायण सूर्य हो और गुरु, चन्द्र, शुक्र का उदय हो और मृगशिरा, रेवती, चित्रा, अनुराधा, हस्त, अश्विनी, पुष्य,

अभिजित्, स्वाति, पुनर्वसु, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, रोहिणी, तीनों उत्तरा और शुक्ल पक्ष हो तो जिस देवता की प्रतिष्ठा करावे, उसी का नक्षत्र, तिथि मुहूर्त में ले । इस विधि से सब देवों की प्रतिष्ठा श्रेष्ठ है ।

रिक्तारवर्जे दिवसेषु शस्ताः शशांकपापैस्त्रिभवांग संस्थैः ।
व्यंत्याष्टगैः सत्खचरैर्मृगेन्द्रे सूर्योघटेकौयुवतौ च विष्णुः ।।

टीका- रिक्ता तिथि ४, ९, १४ और मंगलवार का त्याग कर दे और लग्न शुद्धि, चन्द्रमा, सूर्य, भौम, शनि, राहु, केतु ये ग्रह ३ । ६ । ११वें स्थान होवें और शुभ ग्रह बुध, गुरु, शुक्र १२ । ८ स्थान छोड़ कर २ । ४ । १ । ५ । ७ । ९ । १०वें स्थान में हो तो प्रतिष्ठा करे । सिंह लग्न में सूर्य की, कुम्भ में ब्रह्मा की तथा कन्या में विष्णु की स्थापना करनी चाहिए ।

शिवौनृयुग्मे द्वितनौ च देव्यः क्षुद्राश्चरे सर्वइमे स्थिरक्षे ।
पुष्ये ग्रहा विघ्नप यक्ष सर्प भूता दयोत्ये श्रवणे जिनश्च ।।

टीका- मिथुन लग्न में शिवजी की स्थापना । ३, ६, ९, १२ लग्नों में दुर्गा की । २, ५, ८, ११ इन लग्नों में क्षुद्रा देवी चौंसठ योगिनी की । पुष्य में नवग्रहों की । सूर्य की हस्त में । गणेश जी, यक्ष, शेष, भूतादि देवताओं की रेवती में और श्रवण में जिन्न देवताओं की स्थापना करना श्रेष्ठ है ।

बिटौड़े का मुहूर्त देखना

सूर्यः क्षाद्र सभै रधस्थलगतैः पाकोरसैः संयुतः ।
शीर्षयुग्मभिते शवस्य दहनं मध्ये युगे सर्प भीः ।।
प्रागाशादि सुवेद भैश्च सुहृद स्यात्संगमो रोग भीः ।
क्वाथादेः करणं सुखं च गदितं काष्ठादि संस्थापने ।।

टीका- सूर्य के नक्षत्र से अगले ६ नक्षत्रों में बिटौड़ा रक्खे तो उत्तम पाक बनें । अगले दो नक्षत्रों में धरे तो उन उपलों से मुर्दा फूँके । उनसे अगले चार नक्षत्रों में सर्प का भय रहे । उनसे अगले चार नक्षत्रों में मित्र का भोजन पके । उनसे अगले ४ में रोगी के लिए काढ़े पकें और उनसे अगले चार नक्षत्रों में शुभदायक रहे ।

गोद लेने का मुहूर्त

हस्तादि पंचक भिषग्वसु पुष्यभेषु सूर्यक्षमाज गुरु भार्गव वासरेषु । रिक्ता विवर्जित तिथिष्वलि कुम्भ लग्ने सिंहे वृषे भवति दत्त परिग्रहोयम् ।।

टीका- हस्त से पांच-हस्त, चित्रा, स्वाति, विशाखा, अनुराधा तथा अश्विनी, धनिष्ठा, पुष्य-ये नक्षत्र; सूर्य, मंगल, गुरु, शुक्र- ये वार; ४, ९, १४ तथा रिक्ता तिथि छोड़कर बाकी तिथियों में एवं वृश्चिक, कुम्भ, सिंह तथा वृष-इन लग्नों में पुत्र गोद लेना शुभ है ।

पशु ब्याने के वर्जित मास

माघे बुधे च महिषी श्रावणे पड़वा दिवा ।
सिंहे गावः प्रसूयन्ते स्वामिनो मृत्युदायकाः ।।

टीका- माघ के महीने में बुध के दिन भैंस, श्रावण में पड़वा के दिन घोड़ी और सिंह के सूर्य में गौ ब्यावे तो स्वामी को मृत्युदायक होती है । उसको तत्काल दान करके शान्ति करे ।

वधू-प्रवेश मुहूर्त्त

ध्रुवः क्षिप्र मृदुः श्रोत्र वसु मूल मघानिले ।
वधूः प्रवेशो सन्नेष्टो रिक्तारार्क बुधेपरे ।।

टीका- तीनों उत्तरा, रोहिणी, हस्त, अश्विनी, पुष्य, अभिजित्, मृगशिरा, रेवती, चित्रा, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा, मूल, मघा, स्वाति-ये नक्षत्र; ४, ९, १४-ये तिथि तथा मंगल, रवि, बुध-ये वार छोड़ कर नव-वधू का घर में प्रवेश शुभ है।

बाग लगाने का मुहूर्त्त

लतागुल्मवृक्षारोपो हस्त पुष्याश्विनी ध्रुवैः ।
विशाखा मृदु मूला हि वारुणोश्च प्रशस्यते ।।
गुरौ केन्द्रे विपापेखे विधौ वारि विधूदये ।
शुभे युक्ते क्षिते वन्धौ सद्वारे च शुभोदये ।।

टीका- पेड़, बेल, गुच्छे इनके लगाने में हस्त, पुष्य, अश्विनी, तीनों उत्तरा, रोहिणी, विशाखा, मृगशिरा, रेवती, चित्रा, अनुराधा, मूल, श्लेषा, शतभिषा-ये नक्षत्र; वृष, कर्क, कन्या, तुला, धनु-ये लग्न; केन्द्र १ । ४ । ७ । १० इन स्थानों में गुरु और लग्न में या १०वें चन्द्रमा २, ५, १०, १३-ये तिथि; चन्द्र बुध, गुरु, शुक्र-ये वार शुभ हैं । केन्द्र में पाप-ग्रह न हों और चौथा स्थान शुभ ग्रहों से युक्त हो तो इनमें बाग लगावे और जब पेड़ रोपे तो यह मन्त्र पढ़े—

वसुधेति च शीतेति पुण्यदेति धरेति च ।
नमस्ते शुभगे देवी द्रुमोयं वृद्धतामिति ।।

मुख्य-द्वार का मुहूर्त्त

कर्के कुम्भे च सिंहे च मकरे च दिवाकरः ।
पूर्वे वा पश्चिमे वापि द्वारं कुर्याच्च वेश्मनः ।।
मेषे वृषे वृश्चिके च तुले चापि यदा रविः ।
गृहद्वारं तदा कुर्यादुत्तरं वापि दक्षिणे ।।
धनुर्मिथुनकन्यायां मीने च यदि भानुमान् ।
न कर्त्तव्यं तदा गेहं कृते दुःखमवाप्नुयात् ।।

टीका- कर्क, कुम्भ, सिंह, मकर के सूर्य में घर बनावे तो घर का दरवाजा पूर्व अथवा पश्चिम की ओर करना चाहिए । मेष, वृष, वृश्चिक और तुला के सूर्य में उत्तर अथवा दक्षिण को घर का द्वार शुभ है । धनु, मिथुन, कन्या और मीन के सूर्य हों तो घर का बनाना अशुभ और दुःखप्रद है ।

साद पहरने का और पुंसवन का मुहूर्त्त	पुनर्वसु, पुष्य, मूल, रेवती, पूर्वा भाद्रपद, उत्तरा भाद्रपद, पूर्वाषाढा, उत्तराषाढा, श्रवण, मृग, हस्त- ये नक्षत्र; गुरु भौम, रवि- ये वार; २, ३, ५, ७, ८, १०, ११ से १३-ये तिथि है, १, २, ३ मास तथा ६, २, ५, ८, ११- ये लग्न होने चाहिए । सीमन्तोन्नयन-कर्म ८वें महीने में करना चाहिए ।
दुकान करने का मुहूर्त्त	अनुराधा, तीनों उत्तरा, रोहिणी, अश्विनी, पुष्य, पुनर्वसु, शतभिषा, हस्त- ये नक्षत्र; २, ३, ५, ७, ८, १०, ११, १३- ये तिथि; गुरु, शुक्र, बुध, चन्द्र- ये वार तथा २, ५, ८- ये लग्न शुभ हैं ।
राजा के देखने का मुहूर्त्त	तीनों उत्तरा, श्र. श. ध. मृ. पु. अनु. रो. रे. पुष्य, अश्वि, ह, चि- ये नक्षत्र; शुभ तिथि तथा शुभ वार हो ।

नौकरी करने का मुहूर्त	ह. चि. अनु. रे. अश्वि. मृ. पुष्य- ये नक्षत्र; बुध गुरु, शुक्र- ये वार ; शुभ तिथि, योनि, राशि, गण, वर्ग मिलावे।
नाव बनाने का मुहूर्त	तीनों पूर्वा, आश्ले. म. अ. पु. श. मृ- ये नक्षत्र; शुभ वार; २, ३, ५, ७, ८, १०, ११, १३- ये तिथि शुभ हैं ।
दाँय चलाने का मुहूर्त	तीनों पूर्वा, तीनों उत्तरा, म. आश्ले. ज्ये. आर्द्रा. धनि. श्र. कृ. भ. अनु.- ये नक्षत्र; शुभ तिथि तथा शुभ वार हों ।
बीज बोने का मुहूर्त	ह. चि. स्वा. म. पुष्य, तीनों उत्तरा, रो. मृ. ध. रेवती, अ. मू. अनु- ये नक्षत्र; शुभ तिथि; शुभ वार हों ।
जच्चा को बाहर निकालने का मुहूर्त	ज्ये. अनु. पु. पुष्य, श्ले, मृ. ह. रे. उत्तराषाढ, श्र. ध.- ये नक्षत्र; र. चं. गुरु. शुक्र- ये वार; ५, ६, ७, १०- ये लग्न तथा २, ३, ५, ७, ८, १०, १३ ये तिथि शुभ हैं ।
युद्ध करने का मुहूर्त	आर्द्रा, भ. तीनों पूर्वा, मूल, श्लेषा, मृ.- ये नक्षत्र; ३, १३, ८, ५, १०, १५- ये तिथि; बु. चं. गु.- ये वार और ५, ३, ७, ११- ये लग्न शुभ हैं ।
पुल बनाने का मुहूर्त	तीनों उत्तरा, रो. स्वा. मृ.– ये नक्षत्र; मं. र. गु.- ये वार; शुभ लग्न; २, ३, ५, ७, ८, १०, ११, १३- ये तिथि शुभ हैं ।

॥ इति मुहूर्त प्रकरणम् ॥

अथ ज्योतिष सर्व संग्रह

चतुर्थ भाग
(प्रश्न प्रकरण)

प्रश्न करते समय अंग-स्पर्श का फल

यदि कोई अपना प्रश्न पूछे तो पण्डित उससे यों कहे कि तुम अपना हाथ अपने शरीर पर धरो, जहाँ वह अपना हाथ धरे, वहाँ का फल इस प्रकार कहे-

शिरो मुखं कर्णनेत्रे स्पृष्ट्वा पृच्छति यो नरः ।
सुवर्णधनधान्यानां लाभस्तत्र न संशयः ॥
स्कन्धग्रीवाकण्ठहस्तस्पर्शे लाभो हि दुःखितः ।
कुक्षिनाभिसमालंभे भक्ष्यपानादि सिध्यति ॥
जंघा लिंग कटिस्पर्शे कन्यालाभः सुतोद्भवः ।
जानुगुल्फपदस्पर्शे महाक्लेशः प्रजायते ॥
केशस्पर्शे भवेन्मृत्युः फलस्पर्शे शुभं भवेत् ।
तृणाङ्गारकसंस्पर्शे कार्यसिद्धिर्न जायते ॥
काष्ठपङ्कपटस्पर्शे ग्रहपीड़ा भयं भवेत् ।
सुगन्धमद्यभाण्डादिस्पर्शे सिद्धिः प्रजायते ॥
शून्यालये श्मशाने च शुष्ककाष्ठक्षते तरौ ।
गुल्फभस्माधमस्थाने प्रश्ने क्लेशः प्रजायते ॥
देवस्थाननदीतीरे दिव्यस्थाने शुभं भवेत् ।
शुभं दिक्ष्वीरितं सिद्धिर्विदिक्षु च न जायते ॥

टीका- माथा, मुख, कान, नेत्र- इन पर हाथ धरे तो लाभ हो । कंधा, गला, हाथ, कल्ले छुवे तो कष्ट से लाभ हो । कोख, नाभि को छुवे तों अच्छा भोजन पावे । जांघ, लिंग, कमर स्पर्श करे तो कन्या या पुत्र का लाभ हो । घोंटू, कोहनी अथवा पैरों को छुवे तो क्लेश हो और यदि केश छुवे तो मृत्यु या उसके बराबर कष्ट हो । फल स्पर्श कर पूछे तो शुभ है । तृण, अग्नि स्पर्श से

कार्य सिद्ध न हो । काष्ठ, कीच या वस्त्र छूकर पूछे तो ग्रहजन्य पीड़ा हो । सुगन्ध या मदिरा पात्र स्पर्श कर पूछे तो कार्य-सिद्ध हो । सूने घर में, श्मशान में, सूखे काठ या टूटे वृक्ष के नीचे बैठ के पूछे तो क्लेश हो । देव-स्थान, नदी के तट, पवित्र या शुभ स्थान और शुभ दिशा में पूछे तो शुभ तथा विदिशा में पूछे तो सिद्धि न हो ।

कन्या होगी या पुत्र देखना

नामाक्षराणि त्रिगुणीकृतानि, तुरङ्गदेशे तिथिमिश्रितानि ।
अष्टौ च भागो लभते च शेषे समे च कन्या विषमे कुमारः ।

टीका- गर्भिणी के नाम के जितने अक्षर हों, उसके तिगुने कर, उसमें घोड़ा के अक्षर, देश के अक्षर और वर्तमान तिथि मिलावे । फिर आठ का भाग दे, शेष सम २, ४, ६ इस प्रकार बचे तो कन्या और १, ३, ५ बचे तो पुत्र हो ।

गर्भिणी-प्रश्न देखना

तत्प्रश्नलग्ने रविजीवभौमास्तृतीय सप्ते नव पंचमे वा ।
गर्भे पुमान्वै ऋषिभिः प्रणीतश्चान्यैर्ग्रहैः स्त्री विबुधैः प्रणीता ॥

टीका- जो कोई पूछे मेरे पुत्र होगा या कन्या, उस वक्त का लग्न देख के धरे। लग्न से तीसरे ७ । ६ । ५– जो इन स्थानों में सूर्य, बृहस्पति, मंगल– ये ग्रह हों तो पुत्र हो । इनमें यदि और ग्रह हों तो पुत्री जानो ।

नखद्वयं गर्भिणि नामधेयम् तिथिप्रयुक्तम् शर संयुतं च ।
एकेन हीनं नव भागधेयं समे च कन्या विषमे कुमारः ॥

टीका- नख अर्थात् बीस में गर्भिणी स्त्री के नाम के अक्षर और उस दिन की तिथि जोड़ के पांच और मिलावे । उनमें से एक घटा के नौ का भाग दे । यदि १, ३, ५, ७ बचे तो पुत्र हो और यदि २, ४, ६, ८ बचे तो कन्या हो ।

मुट्ठी का प्रश्न देखना

मेषे रक्तं वृषे पीतं मिथुने नीलवर्णकम् ।
कर्के च पाण्डुरी ज्ञेयः सिंहे धूम्रं प्रकीर्तितम् ॥
कन्यायां नील वर्णं स्यात् श्वेतवर्णं तथा तुले ।
वृश्चिके ताम्रमिश्रं च चापे पीतं विनिर्दिशेत् ।
मके कुम्भे कृष्णवर्णम् मीने पीतं वदेत्सुधीः ।

टीका- जो कोई कहे मेरी मुट्ठी में क्या है ? तो मेष लग्न हो तो लाल रंग की वस्तु कहे । वृष में पीला, मिथुन में नीला, कर्क में सफेद, सिंह में धुएँ का रंग कहे । कन्या में नीला, तुला में सफेद, वृश्चिक में लाल, धनु में पीला, मकर में काला, कुम्भ में भी काला और मीन में पीला रंग कहे ।

कार्य-प्रश्न देखना

दिशाप्रहरसंयुक्ता तारका वारमिश्रिता ।
अष्टभिस्तु हरेद्भागं शेषं प्रश्नस्य लक्षणम् ॥
पंचकेत्वरिता सिद्धिः षट् तुर्ये च दिनत्रयं ।
त्रिसप्तके विलम्बश्च द्वौ चाष्टौ नहि सिद्धिदौ ॥

टीका- जो कोई पूछे मेरा काम कब तक होगा ? पूछने वाले का जिस दिशा में मुँह हो, उस दिशा, प्रहर, नक्षत्र और वार सब को एक ही जगह करके ८ का भाग दे । १ या ५ बचे तो जल्दी काम सिद्ध हो । ६, ४ बचे तो तीन दिन में हो । ३, ७ बचे तो देर में होगा । २ या शून्य बचे तो होगा ही नहीं ।

पथा-प्रश्न देखना

तिथिप्रहरसंयुक्ता तारका वार मिश्रिता ।
सप्तभिस्तु हरेगद्भागं शेषं तु फलमादिशेत् ॥
एकेन गमने सिद्धिर्द्वाभ्यां मार्गश्च एव च ।
तृतीये चार्धमार्गे वै चतुर्थे ग्राम आदिशेत् ॥
पंचमे पुनरावृत्तिः षष्ठे क्लेशः प्रजायते ।
सप्तमे शून्यता वृत्तिरिति ज्ञेयं विचक्षणैः ॥

टीका- यदि कोई पूछे- हमारा आदमी परदेश से कब आयेगा, तो उस दिन की तिथि, वार, प्रहर जोड़ कर ७ का भाग दे । १ बचे तो घर पर कहना । २ बचे तो रास्ते में । ३ बचे तो अर्ध मार्ग में फंस गया । ४ बचे तो गाँव के पास आ गया है- ऐसा कहे । ५ बचे तो रास्ते में से फिर गया । ६ बचे तो कष्ट हो गया और शून्य बचे तो मर गया जानो ।

धनसहजगतौ गुरुभार्गवौ कथयतोऽन्यगमनंप्रवासिपुंसां ।
तनुहिबुकगताविभौ च तद्वज्झटिति नृणां कुरुते गृहप्रवेशम् ।

टीका- पूछने के समय लग्न से दूसरे स्थान में गुरु और तीसरे स्थान में शुक्र हो तो जल्दी आवे। पहले स्थान में शुक्र और चौथे स्थान में गुरु हो तो जानो आ गया।

रोगी-बाधा प्रश्न देखना

तिथिवारं च नक्षत्रं लग्नं प्रहरमेव च ।
अष्टभिस्तु हरेद् भागं शेषं तु फलमादिशेत् ।।
हयाग्नौ देवताबाधा पैत्री वै नेत्रदंतिषु ।
षट् चतुर्षु भूतबाधा न बाधा एक पंचके ।।

टीका- यदि रोगी पूछे– क्या दोष है ? कब आराम होगा ? तो तिथि, वार, नक्षत्र, प्रहर, लग्न सबको जोड़कर ८ का भाग दे । जो ७, ३ बचे तो देवता की बाधा कहे और २ अथवा शून्य बचे तो पितरों की । ६,-४ बचे तो भूत-बाधा कहे और १, ५ बचे तो रोग वा ग्रहों का दोष कहना चाहिए।

अथ जौ देखना

पितृदोषो भवेन्मेषे क्षुधाहानिर्विवर्णता ।
वृषे गगनदेव्यास्तु ज्वरदुःस्वप्ननेत्ररुक् ।।
मिथुने च महामायादोषो वेलाज्वरोऽनिलः ।
कर्के च शाकिनीदोषो हास्यरोदनमौनता ।।
सिंहे जले प्रेतदोषो दिवाशीते ज्वरोरुचिः ।
ग्रहदोषश्च कन्यायां क्रोधालस्यारुचिर्व्यथा ।।
क्षेत्रपालभवो दोषस्तुले संतानपीडनम् ।
वृश्चिके नागदोषश्च ज्वालादेहे कुबुद्धिता ।।
चापे देहे भवेद्दोषो ज्वरः शोकोदरव्यथा ।
मकरेचण्डिकादोषो देहभंगो ज्वरोनिलः ।।
मलिनप्रेतदोषश्च कुम्भे देहस्य पीडनम् ।
मीने चाण्डालिनीदोषो ज्वरोजंजालदर्शनम् ।।

टीका- जब कोई जौ दिखाने आवे तो उन जौ को बारह-बारह करके गिनें। १ बचे तो मेष लग्न, २ बचे तो वृष । इसी प्रकार जितने जौ बचें, बारह २ से गिनती कर वोही लग्न जानना । फिर उसका फल कहे । १ मेष में पितरों का

दोष कहना । पितर गायत्री जपो । उसे भूख नहीं लगती । २ में देवी का दोष, हल्का बुखार रहे । ३ में महामाया का दोष । ४ में शाकिनी देवी की पूजा करे । ५ में जल के प्रेत का दोष, जो इसने खाया है वह चीज दरिया के किनारे धर दो। ६ ग्रहों का दोष, ग्रहों का दान करो । ७ में सन्तान का दोष, ब्राह्मण के लड़के को कपड़े पहनाओ और क्षेत्रपाल का दोष, चौमुखा तेल का दीवा बाल के सिंदूर, उड़द, स्याही, दही उसमें धर, उसके सिर पर से उतार कर चौराहे पर रक्खो । ८ में देवता का दोष, देही में आग सी लगी रहे, देवता का पूजन करो। ९ बचे तो अंग रोग, अनुभवी वैद्य से चिकित्सा कराओ । १० में चण्डी देवी का दोष, चण्डी की जात दो या कन्या जिमाओ । ११ में प्रेत का दोष, प्रेत का उतारा उतार करके धरो या गायत्री का जप करवाओ । १२ में चाण्डालिनी का दोष,देवी या माता का उठावना धरो ।

पाप-ग्रह का फल देखना

व्यये धने तृतीये च षष्ठे पापो यदा भवेत् ।
हते जले कुजे दोषो तस्य दोषः कुलोद्भवः ।।
शनौजले कुजे शस्त्रे गरे सूर्यश्च वैस्वतः ।
राहुश्च विक्रतो नष्टः शान्तिपूजा द्विजार्चना ।।

टीका- १२ । २ । ३ । ६ इन स्थानों में पाप ग्रह हों तो जल से डूब के मरे हुए या जहर से मरे हुए का दोष जानो । जो शनि हो तो जल में डूबे हुए का दोष । मंगल हो तो शस्त्र से मरे हुए का दोष । सूर्य हो तो कोठे से गिरे हुए या विष खा कर मरे का दोष । राहु हो तो जो कोई कुमति से मरा हो, उसका दोष । ऐसा दोष हो तो पीपल की पूजा या शिवजी की पूजा या ब्राह्मण जिमावे तो दोष दूर होता है ।

खोई वस्तु पाने का प्रश्न

अन्धश्च चिपिटाक्षश्च काणाक्षो दिव्यलोचनः ।
गणयेद्रोहिणी पूर्वं सप्तवारमनुक्रमात् ।।

टीका- अन्ध, चिपट, काण और सुलोचन- ये चार प्रकार के नक्षत्र हैं । रोहिणी से ७ बार तक गिने, फिर उसका फल आगे लिखे चक्र के अनुसार कहे।

रोहिणी	पुष्य	उ. फा.	विशाखा	पू. षा.	धनिष्ठा	रेवती	यह नक्षत्र अन्धे हैं
मृग.	आश्ले.	हस्त	अनुराधा	उ. षा.	शतभिषा	अश्विनी	ये नक्षत्र चिपटे हैं
आर्द्रा	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा	अभिजित	पू. भा.	भरणी	यह नक्षत्र काणे हैं
पुन.	पू. फा.	स्वाति	मूल	श्रवण	उ. भा.	कृत्तिका	यह नक्षत्र सुलोचन हैं ।

अन्धे च लभते शीघ्रं मन्दे चैव दिनत्रयम् ।
काणाक्षे मासमेकं तु सुनेत्रे नैव दृश्यते ॥

टीका- अन्धे लग्न में जाय तो जल्दी मिले, चिपटे में जाय तो तीन दिन में मिले, काणे में एक महीने में मिले तथा सुलोचन में जाय तो न मिले ।

तिथिवारं च नक्षत्रं प्रहरेण समन्वितम् ।
दिक् संख्यया हते चैव सप्ताकैर्विभजेत्पुनः ।
एकेन भूतले द्रव्यं द्वयं चेद्भाण्डसंस्थितम् ।
तृतीये जलमध्यस्थमंतरिक्षे चतुर्थके ॥
तुषस्थं पंचमे तु स्यात् षष्ठे गोमयमध्यगम् ।
सप्तमे भस्म मध्यस्थमित्येतत्प्रश्नलक्षणम् ॥

टीका- जो कोई कहे- 'मेरी चीज जाती रही है' तो उस दिन की तिथि, वार, नक्षत्र, प्रहर सबको जोड़कर १० से गुणा करके, फिर ७ का भाग दे । १ बचे तो पृथ्वी में कहे, २ बचे तो बर्तन में, ३ बचे तो जल में, ४ बचे तो छत में, ५ बचे तो भूसे में, ६ बचे तो गोबर में और ७ बचे तो भस्म में कहे ।

खोये पशु का प्रश्न

शुभगिमाक्षकमेषु वनस्थितस्तदनुषट्सु च कर्णपथे स्थितः ।
अचलमेव गतोऽपिचिरेगृहम् द्वयगते गत एव मृतं त्रिषु ॥

टीका- सूर्य नक्षत्र से ९वाँ नक्षत्र हो तो पशु वन में गया । ६ में नजदीक रास्ते में है । ७ में जल्दी घर आ जाय । २ में नहीं मिले । ३ में जानो मर गया ।

वर्षा- नक्षत्रों की संज्ञा देखना

दशार्द्राद्या स्त्रियस्तारा विशाखाद्यान्पुंसकाः ।
तिस्रस्त्रियश्च मूलाद्या पुरुषाश्च चतुर्दशः ।।
स्त्रीपुंसयोर्महावृष्टिस्त्रिन्पुंसकयोः क्वचित् ।
स्त्री स्त्री शीतलच्छाया योगे पुरुषयोनि च ।।

टीका- आर्द्रा से लेकर दस नक्षत्र स्त्री हैं । विशाखा से ३ नक्षत्र नपुंसक हैं। मूल से चौदह नक्षत्र पुरुष हैं । जो स्त्री चन्द्र नक्षत्र पर हो और सूर्य पुरुष में आवे तो वर्षा हो । स्त्री नपुँसक में वर्षा थोड़ी हो । जो सूर्य और चन्द्रमा दोनों स्त्री नक्षत्रों पर हों तो मेघ छाये रहें, परन्तु वर्षा नहीं हो । यदि दोनों पुरुष नक्षत्रों पर हों तो भी वर्षा नहीं हो ।

वर्षा के अन्य योग

उदयास्तं गतः शुक्रो बुधश्च वृष्टिकारकः ।
जलराशिस्थिते चन्द्रे पक्षान्ते संक्रमे तथा ।।

टीका- शुक्र, बुध के उदय अस्त में वर्षा होती है और चन्द्रमा जलराशि में हो तो पक्ष के अंत तक या संक्रांति तक वर्षा हो ।

बुधः शुक्रः समीपस्थः करोत्येकार्णवां महीम् ।
तयोरन्तर्गतो भानुः समुद्रमपि शोषयेत् ।।

टीका- जो बुध, शुक्र एक राशि पर हों तो सारी पृथ्वी में जल बरसे और इनके बीच में सूर्य आ पड़े तो समुद्र के जल को भी सोख जाय ।

चलत्यङ्गारके वृष्टिः स्निग्धा वृष्टिः शनैश्चरे ।
वारिपूर्णां महीं कृत्वा पश्चात्संचरते गुरुः ।।

टीका- जो मंगल चले तो वर्षा हो, शनिश्चर के चलने में जहाँ-तहाँ वर्षा हो, इनके पीछे गुरु हो तो सारी पृथ्वी में जल बरसे ।

भानोरग्रे महीपुत्रो जलशोषः प्रजायते ।
भानोः पश्चात् धरासूनुः वृष्टिर्भवति भूयसी ।।

टीका- जो सूर्य के आगे मंगल होय तो प्रजा के जल को सोख जाय और पीछे होय तो वर्षा अधिक हो ।

ग्रहण का फल देखना

यदैकमासे ग्रहणं जायते शशिसूर्ययोः ।
शत्रुकोपैः क्षयं यांति तदा भय परस्परम् ॥
ग्रस्तोदितौ च ग्रस्तास्तौ धान्यभूपालनाशकौ ।
सर्वग्रस्तौ चन्द्रसूर्यौ दुर्भिक्ष मरणप्रदौ ॥

टीका- जो एक महीने में सूर्य, चन्द्र दोनों ग्रहण पड़ें तो राजाओं में युद्ध हो, शत्रु कोपे और नाश हो । जो सूर्य, चन्द्रमा ग्रहण लगे हुये उदय हों या अस्त हों तो अन्न का नाश और राजा का नाश हो । सर्वग्रहण हो तो दुर्भिक्ष और मरण हो ।

ग्रहण आदि दोष देखना

ग्रह कृत्वा सुवृष्टिश्च हानिश्च भयकारकः ।
विद्युत्पातोऽग्निदाहोऽथ परीवेषश्च रोगकृत् ॥
दिगदाहेग्निभयं कुर्याग्निर्घातः नृपपीडनम् ।
द्वन्दायुश्चण्डशब्दश्च चौरभीतिप्रदायकौ ॥
गृहयुद्धे राजयुद्धे केतुदृष्टे तथैव च ।
ग्रहणांते महावृष्टि सर्वदोष विनाशिनी ॥

टीका- जो बिना वायु आकाश से धूलि बरसे, बिना मेघ बिजली चमके, सूर्य का मण्डल लाल हो जाय और सूर्य छिपने पर आकाश लाल, पीला दीखे; बिना बादल गरजे तो चोर-भय हो, राजाओं में युद्ध तथा बीमारी का भय हो और जो धूमकेतु उदय होय तो युद्ध हो । जो ग्रहण के पीछे वर्षा हो तो सारा दोष दूर हो ।

अथ पवन-परीक्षा

आषाढ़े पूर्णिमायां च नैर्ऋते यदि मारुतः ।
अनावृष्टिर्धान्यनाशो जलं कूपे न दृश्यते ॥
आषाढ़े पूर्णिमायां तु वायव्येयदि मारुतः ।
धर्मसिद्धस्तदा लोके धनधान्यं गृहे गृहे ॥

आषाढ़े पूर्णिमायां तु वायव्येयदि मारुतः ।
धर्मसिद्धस्तदालोके धन धान्यं गृहे गहे ॥
आषाढ़े पूर्णिमायां ततु ईशान्ये वापि मारुतः ।
सुखिनो हि तदा लोके गीतवाद्यपरायणाः ॥
वह्निकोणे वह्निभीतिः पश्चिमे च जलद्भयम् ।
अन्यत्र यदि वायुः स्यात् सुभिक्षं जायते तदा ॥

टीका- जो आषाढ़ की पूर्णिमा को सूर्य के अस्त समय नैर्ऋत्य की वायु चले तो वर्षा थोड़ी हो, अन्न का नाश हो, कुएं भी सूख जाँय । वायव्य की वायु चले तो लोक में धर्मशीलता रहे, धन-धान्य की वृद्धि हो । जो ईशान की चले तो लोक में सुख आनन्द रहे । अग्निकोण की चले तो आग बहुत लगे । पश्चिम की चले तो जल का भय हो । और दिशा की चले तो सुभिक्ष हो । उत्तर की या पूर्व की या दक्षिण की चले तो आनन्द हो ।

पूर्णिमा का फल देखना

सर्वमासेपूर्णिमायां भूमिकम्पो यदा भवेत् ।
उल्कातारं वज्रपातैर्ग्रस्तास्तौ शशिसूर्य्यकौ ॥
धूम्रकेतुः शुक्रचापः ग्रहणो बहुधा यदा ।
तदासौ सर्ववस्तूनां जायते च महर्घता ॥

टीका- पूर्णिमा को भूमि काँपे, उल्कापात हो, दिन में तारा टूटे, वज्रपात हो, बिजली गिरे; चन्द्र-सूर्य ग्रसे हुए अस्त हों या धूम्रकेतु का उदय हो या इन्द्रधनुष निकले तो सब वस्तुएँ महँगी हों ।

ग्रह-वक्री फलम्

भौमे वक्रे अनावृष्टिः बुधे वक्रे रसक्षयः ।
गुरौ वक्रे समर्घः स्याच्छुक्रे वक्रे प्रजासुखम् ॥
शनौ वक्रे महाघोरं क्षयं याति महीपतिः ।
यदा वक्री पंचखेटाः राजराटविनाशदाः ॥

टीका- जो भौम यानी मंगल वक्री हो तो वर्षा नहीं हो । बुध वक्री हो तो रस महंगे हों । गुरु वक्री हो तो पृथ्वी पर अन्न मन्दा हो । शुक्र वक्री हो तो

प्रजा को सुख हो । शनि वक्री हो तो महाघोर युद्ध हो और किसी राजा का क्षय हो । और जो पाँच ग्रह वक्री हों तो राजाओं के राजा की मृत्यु हो ।

ज्येष्ठ- अमावास्या फलम्

रविवारेण संयुक्ता यदा स्यान्माघज्येष्ठयोः ।
अमावास्या तदा पृथ्वी रुण्डा मुण्डा च जायते ॥

टीका- माघ या ज्येष्ठ की अमावास्या को जो रविवार पड़े तो शीश कट-कट कर पृथ्वी पर पड़ें ।

तेरह तिथि फलम्

एकपक्षे यदा यान्ति तिथयश्च त्रयोदशः ।
त्रयस्तत्र क्षयं यान्ति वाजिनो मनुजा गजाः ॥

टीका- यदि एक पक्ष में १३ तिथि हों तो मनुष्यों और घोड़ों का नाश हो तथा हाथियों का क्षय हो । तेरह तिथियों का पक्ष तीनों योनियों को हानिप्रद है।

अथ होली-धूम्र फलम्

पूर्वे वायुर्होलिकायां प्रजाभूपालयोः सुखम् ।
पलायनं च दुर्भिक्षं दक्षिणे जायते ध्रुवम् ॥
पश्चिमे तृणसंपत्तिरुत्तरे धान्यसंभवः ।
यद खे च शिखावृद्धिः राज्ञो दुर्गस्य संक्षयः ॥

टीका- यदि होली को पूर्व की हवा चले तो राजा-प्रजा को सुख हो और दक्षिण की पवन चले तो देश भंग और दुर्भिक्ष करे । पछुवा चले तो तृण-सम्पत्ति बढ़े । उत्तर से पवन चले तो धान्य की वृद्धि हो और यदि होली का धुआं आकाश को सीधा जाय तो राजा का गढ़ छूट जाय ।

द्वादश राशि शनि-चक्र फलम्

शनिचक्रं नराकारं लिखेद्यत्र शनिर्भवेत् ।
तन्नक्षत्रं मुखे दत्वा यावन्नाम नरस्य च ॥
तावद्विचारयेत्तत्र ज्ञेयं तत्र शुभाशुभम् ।
एकं मुखे च नक्षत्रं चत्वारि दक्षिणे करे ॥

त्रयं त्रयं पादयोश्च वामहस्ते चतुष्टयम् ।
ललाटे द्वितियं नेत्रे हृदि पंच गुदे द्वयम् ।।
एकैकं दक्षिणे कुक्षौ नक्षत्राणि क्रमेण च ।
हानिर्मुखे दक्षहस्ते लाभो वामे च रोगिता ।।
हृदि श्रीर्मस्तके राज्यं पादे पर्यटनं फलम् ।
नेत्रे सुखं गुदे मृत्युः कुक्षौ शोकं विचिंतयेत् ।।
जपादिपूजनार्चाभिः कल्याणं जायते सदा ।
अन्यान्येवं विचार्याणि वाहनादि बहूनि च ।।

टीका- अब शनि-चक्र का विचार कहते हैं । शनि-चक्र आदमी की सूरत का लिखे । जिस नक्षत्र का शनि हो उससे जन्म-नक्षत्र तक गिने । फिर शनि-नक्षत्र के अंगों में सब नक्षत्रों को स्थापित करे ।

जिस अङ्ग में जन्म नक्षत्र पड़े, उसका फल जानिये । १ नक्षत्र मुख में धरे, ४ दाहिने हाथ में, ३ दक्षिण पाँव में, ३ बाँयें पाँव में, ४ बाँयें हाथ में, २ ललाट में, २ नेत्र में, ५ हृदय में, २ गुदा में तथा १ दाहिनी कोख में– इसी प्रकार सब नक्षत्र धरे । जो मुख में नक्षत्र पड़े तो हानि करे, बाँये हाथ में रोग, हृदय में लक्ष्मी, ललाट में राजपद, दक्षिण हाथ में लाभ, दाहिने पाँव में भ्रमावे, नेत्र में सुख, गुदा में मृत्यु, कोख में शोक करे, उसके लिए जप, दान, पूजा, ब्राह्मण– भोजनादि से कल्याण सुख होय । अनेक वाहनादि विचार के भी फल होते हैं सो अन्य ग्रन्थों का विषय है ।

शनि-राशि फलम्

मेषे शनौ गुर्जरेषु प्रभासे चार्बुदे वृषे ।
मिथुने जायते पीड़ा स्थले मूलस्थलेषु च ।।
कर्के काश्मीरके बाधा शक्रप्रस्थो मृगाधिपे ।
शनैश्चरे च कन्यायां मालवाख्ये च संक्षयम् ।।
तुलावृश्चिकचापेषु यदि याति शनैश्चरः ।
न वर्षन्ति तदा मेघाः पृथ्वी दुर्भिक्षपीडिता ।।
सुभिक्ष मकरे कुम्भे जायते बहुधा शनौ ।
मीने च सर्वलोकानां दुर्भिक्षन्तु क्षयो भवेत् ।।

टीका- मेष का शनि हो तो गुजरात देश में पीड़ा करे, वृष का प्रभास क्षेत्र और अर्बुद देश में, मिथुन का मूलस्थली देश में, कर्क का काश्मीर और काशी देश में, सिंह का इन्द्रप्रस्थ देश में और कन्या का मालवा देश में । तुला, वृश्चिक, धनु का हो तो मेघ थोड़ा बरसे, पृथ्वी दुर्भिक्ष से दुःखी हो । कुम्भ, मकर का हो तो अन्न का सुकाल करे । मीन का हो तो सर्वत्र अकाल पड़े ।

गुरु-राशि फलम्

मेषे गुरौ सुभिक्षं च सुवृष्टिश्च सुखी नरः ।
वृषे गुरौ स्वल्पवृष्टि प्रजापीडा च विग्रहः ॥
अनावृष्टि प्रजानाशो वैरं च मिथुने गुरौ ।
कर्के गुरौ महावृष्टिर्देशभंगो महर्घता ॥
सिंहे गुरौ सुभिक्षं च सुवृष्टिश्च प्रजासुखम् ।
कन्यागुरौ रोगपीडा सुभिक्षं शस्यजन्म च ॥
तुले गुरौ शस्यनाशो बहुक्षीरं प्रजायते ।
अलौ जीवे च दुर्भिक्षं सर्पचौराद्रुजो भयम् ॥
चापे गुरौ शुभा वृष्टिः शुभं शस्यमहर्घता ।
दुर्भिक्षं मकरे जीवे राजयुद्धं पशुक्षयः ॥
कुम्भे गुरौ च दुर्भिक्षं धातुमूलं महर्घता ।
दुर्भिक्षं दक्षिणे देशे झषे जीवे च चान्यगे ॥

टीका- जब मेष राशि का बृहस्पति आवे तब सुभिक्ष हो, वर्षा अधिक हो, मनुष्य सुखी रहें । जब वृष राशि का बृहस्पति हो तो वर्षा थोड़ी हो, प्रजा में पीड़ा हो, विग्रह फैले । मिथुन का हो तो वर्षा अच्छी हो, वैर बढ़े, प्रजा को पीड़ा हो । कर्क में उच्च स्थान का हो तो वर्षा बहुत हो और कोई देश भंग होय, अन्न महंगा हो । सिंह का हो तो सुभिक्ष करे, वर्षा अधिक हो, प्रजा सुखी रहे। कन्या का गुरु हो तो रोग, पीड़ा, धान्योत्पत्ति हो और अन्न सस्ता हो । तुला का गुरु हो तो खेती का नाश करे, दूध बहुत होय । वृश्चिक के गुरु में राज्य में चोर, सर्प-भय, दुर्भिक्ष करे । धन के गुरु में वर्षा अच्छी हो, खेती बहुत करे, रस महंगा करे । मकर के गुरु में महा दुर्भिक्ष, धातु महंगी करे । मीन का गुरु हो तो दक्षिण देश में दुर्भिक्ष करे, अन्य देशों में नहीं ।

अथ संवत्सरनामानि

प्रभवो विभवः शुक्लः प्रमोदोऽथ प्रजापतिः ।
अङ्गिरा श्रीमुखो भावो युवा धाता तथेश्वरः ॥
बहुधान्यः प्रमाथी च विक्रमो वृषभस्तथा ।
चित्रभानुः सुभानुश्च तारणः पार्थिवो व्ययः ॥
ब्रह्मविंशतिरित्येका सृष्टिस्तत्र प्रजायते ।
सर्वजित् सर्वधारी च विरोधी विकृतिस्तथा ॥
खरो नन्दननामा च विजयश्च जयोऽपरः ।
मन्मथो दुर्मुखश्चैव हेमलंबि विलम्बको ॥
विकारी शार्वरी चाथ प्लवङ्गः शुभकृत्तथा ।
शोभनश्च तथा क्रोधी विश्वावसुस्तथापरः ॥
पराभवाख्यो ह्यपरो विष्णुरित्येष विंशतिः ।
प्लवङ्गः कीलकः सौम्यस्तथा साधारणैव च ॥
विरोधकृत्समाख्यातः परिधावी प्रमादकृत् ।
आनन्दो राक्षसश्चाथ नलश्च पिङ्गलस्तथा ॥
कालः सिद्धार्थ रौद्रो च दुर्मतिर्दुन्दुभिस्तथा ।
अपरो रुधिरोद्गारी रक्ताक्षी क्रोधनस्तथा ॥
क्षयकृत्परतश्चान्यो रुद्रस्यापि तु विंशतिः ।
वत्सराः षष्टिराख्याता नामतुल्यफलप्रदाः ॥

टीका- प्रभव १, विभव २, शुक्ल ३, प्रमोद ४, प्रजापति ५, अंगिरा ६, श्रीमुख ७, भाव ८, युवा ९, धाता १०, ईश्वर ११, बहुधान्य १२, प्रमाथी १३, विक्रम १४, वृषभ १५, चित्रभानु १६, सुभानु १७, तारण १८, पार्थिव १९, व्यय २०, इति ब्रह्मविंशतिः । सर्वजित् १, सर्वधारी २, विरोधी ३, विकृति ४, खर ५, नन्दन ६, विजय, ७, जय ८, मन्मथ ९, दुर्मुख १०, हेमलम्बी ११, विलम्बी १२, विकारी १३, शार्वरी १४, प्लवंग १५, शुभकृत् १६, शोभन १७, क्रोधी १८, विश्वावसु १९ तथा पराभव २०, इति विष्णुविंशतिः । प्लवंग १, कीलक २, सौम्य ३, साधारण ४, विरोधकृत् ५, परिधावी ६, प्रमादी ७, आनन्द

८, राक्षस ६, नल १०, पिंगल ११, काल १२, सिद्धार्थ १३, रौद्र १४, दुर्मति १५, दुन्दुभि १६, रुधिरोद्गारी १७, रक्ताक्षी १८, क्रोधन १९ तथा क्षय २०, इति रुद्रविंशतिः ।। ये ६० संवत्सर हैं । जैसा नाम है, वैसा ही इनका फल है।

दीपमालिका-फलम्

भानुभौमार्किवारेषु कार्तिकेन्दुक्षयो भवेत् ।
आयुष्मान् स्वाति संयुक्तौ नृपनाशः पशुक्षयः ।।

टीका- जो कार्तिक मास में दिवाली रवि, भौम, शनिवार की हो और स्वाति नक्षत्र, आयुष्मान् योग हो तो राजाओं में युद्ध और पशुओं का नाश हो ।

कितना दिन चढ़ा या रहा देखना

छाया पादै रसोपेतैरेकविंशशतं भजेत् ।
लब्धांके घटिका ज्ञेयाः शेषांके च पलाः स्मृताः ।।

टीका- अपने शरीर की छाया अपने पाँव से नापना । जितने पाँव छाया हो उसमें ६ और मिलावें । फिर १२१ में भाग दें । जितनी बार भाग लगे सो घड़ी दिन जानो और चढ़ता हो तो चढ़ता जानो और उतरता हो तो बाकी दिन रहा जानो । और जो भाग देकर शेष बचे, सोई पल जानिए ।

रात्रि देखना

सूर्यभान्मध्यनक्षत्रं सप्त संख्याविशोधितम् ।
विंशतिघ्नं नवहृतं गता रात्रिः स्फुटा भवेत् ।।

टीका- जो आधी रात का नक्षत्र हो उससे सूर्य नक्षत्र तक गिने । फिर उसमें से सात घटावे । जो बाकी रहे, उसको २० से गुणा करे । फिर ९ का भाग दे। जो अंक शेष बचे, उतनी रात गई समझना चाहिए ।

छिपकली-दोष दूर करना

पिनाकिनं नमस्कृत्यं जपेन्मन्त्रं षडक्षरम् ।
शतं सहस्रमथवा सर्वदोषनिवारणम् ।।
शिवालये प्रदद्याच्च दीपं दोषप्रशान्तये ।

टीका- जिस किसी के शरीर पर छिपकली गिर जाय या चढ़ जाय तो सारे वस्त्र धोये, गंगाजल से स्नान करे । घी, सांभर, तैल का दान करे । 'ॐ नमः शिवाय' मंत्र १०० या १०.. बार जपे, शिवालय में दीपक बाले तो शुभ है ।

छींक-विचार देखना

पूर्वेछिक्का भवेन्मृत्युराग्नेयां शोक एव च ।
हानिश्च दक्षिणे भागे नैर्ऋते प्रियदर्शनम् ॥
पश्चिमे मिष्टभोज्यं च वायव्ये धनलाभदा ।
उत्तरे कलहश्चैव ईशाने च शुभा स्मृता ॥
दिशाष्टकं विचार्यैव एवं ज्ञेयं विचक्षणैः ।

टीका- पूर्व की छींक हो तो मृत्यु करे । अग्निकोण की हो तो शोक हो । दक्षिण की हो तो हानि करे । नैर्ऋत्य की में लाभ । पश्चिम की शुभ । वायव्य की शुभ । उत्तर की कलह । ईशान की शुभ । इसी प्रकार आठों दिशाओं का फल देखे । सोते और उठते में छींक का होना शुभ नहीं है । यदि भोजन के अन्त में छींक हो तो अगले दिन अच्छे पदार्थ का लाभ हो । किसी कार्य के करने का विचार करते छींक हो तो वह काम नहीं बनता । उस काम को करने के लिए थोड़ी देर तक अवश्य ठहर जाना चाहिए । यात्रा के समय पीछे की या बाँई तरफ की छींक अच्छी होती है, सामने और दाहिनी तरफ की बुरी होती है ।

चरु-प्रमाण देखना

एकद्वित्रिचतुर्भाग व्रीहिर्घृत यवास्तथा ।
तिलाः क्रमेण योऽस्त्व्या यथाश्रद्धा च शर्करा ॥

टीका- चावल एक हिस्सा, घृत दो हिस्से, जौ तीन हिस्से, तिल चार हिस्से और शुद्ध शर्करा (खांड) जैसी श्रद्धा हो, उतनी मिलावे । यह चरु का प्रमाण है।

चूल्हा बनाने का विचार

रवि शनि मंगल को हरो और वार लो जोड़ ।
[illegible] [illegible] जोड़ के [illegible] को दी ठौर ॥

अंक-प्रश्न फल विचार

अष्टोत्तरशताङ्केषु पृच्छा त्वेकं वदेल्लिखेत् ।
तस्मिन् द्वादशभिर्भक्ते शेषं चैव शुभाऽशुभम् ॥
एके दुर्गासप्तके वै विलम्बं नागे तुर्ये दिक्षु भूतेषु नाशः ।
रुद्रेसिद्धिर्युग्मके वृद्धिरुक्ता शीघ्रं कार्यं स्यात्त्रिषड्द्वादशेषु ॥

टीका- जब कोई प्रश्न पूछने आये तो उससे एक सौ आठ अंकों में से एक अंक का नाम लिखावे या कहलावे । जो भी अंक हो, उसमें बारह का भाग दे। जो शेष बचे, उससे इस प्रकार फल कहे- १, ७, ९ बचने से कार्य देर में होगा। ८, ४, १० ५ बचने से नाश; ११ बचे तो कार्य सिद्धि; २ बचे तो वृद्धि; ३, ६, १२ बचने से कार्य शीघ्र होगा– ऐसा कहे ।

स्त्री को संग में रखने का विचार

युद्धेषु पृष्ठतः कुर्यात् मार्गे अग्रेतु निःसरेत् ।
ऋतुकाले तु वामांगी पुण्यकाले तु दक्षिणा ॥

टीका- युद्ध में स्त्री को पीठ पीछे, रास्ते मे अगाड़ी रक्खे । ऋतुकाल के समय बाँई तरफ रक्खे । पुण्य-काल में स्त्री को दाहिनी तरफ रखना चाहिए ।

नक्षत्र-संज्ञा चक्रम्

ध्रुव, स्थिर	उत्तरा तीनों, रोहिणी, रविवार
चर, चल	स्वाति, पुनर्वसु, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, चन्द्रवार
उग्र, क्रूर	तीनों पूर्वा, भरणी, मघा, मंगलवार
मिश्र, साधारण	विशाखा, कृत्तिका, बुधवार
क्षिप्र, लघु	हस्त, अश्विनी, पुष्य, अभिजित्, गुरुवार
मृदु, मैत्र	मृगशिर, रेवती, चित्रा, अनुराधा, भृगुवार
तीक्ष्ण, दारुण	मूल, ज्येष्ठा, आर्द्रा, आश्लेषा, शनिवार

नौतनी के श्लोक दोनों-पक्षों के

मयूराणां मेघः कुवलयकदम्बो मधुलिहाम् ।
सरोजानां भानुः कुसुम समयः काननभुवाम् ॥
चकोराणां चन्द्रः प्रथयति यथा चेतसि सुखम् ।
तथास्माकं प्रीतिम् जनयति तवालोकनमिदम् ।१।

अन्वय- मेघः यथा मयूराणांचेतसि सुखं प्रथयति । कुवलयकदम्बो यथा मधुलिहां चेतसि सुखं प्रथयति ॥ भानुः यथा सरोजानां चेतसि सुखं प्रथयति । कुसुम समयः यथा कानन भुवाम् चेतसि सुखं प्रथयति । चन्द्रः यथा चकोराणां चेतसि सुखं प्रथयति। तथा इदम् तव आलोक नमस्माकं चेतसि प्रीतिं जनयति ।१।

टीका- जैसे बादल के गरजने से मोरों के चित्त में सुख प्राप्त होता है, जैसे कमल का पुष्प भौंरो के चित्त में सुख देता है, जैसे सूर्य नारायण तालाबों के फूलों को सुख देते हैं, जैसे वसन्त ऋतु वन में रहने वालों को सुख देती है और चन्द्रमा चकोर पक्षी के चित्त को सुख देता है, वैसे ही आपका दर्शन हमारे चित्त में प्रीति को उत्पन्न करता है ।

नागो भाति मदेन कंजलरुहैः पूर्णेन्दुना शर्वरी ।
शीलेन प्रमदा जवेन तुरगो नित्योत्सवैर्मन्दिरम् ॥
वाणी व्याकरणेन हंसमिथुनैर्नद्यः सभा पंडितैः ।
सत्पुत्रेण कुलं नृपेण वसुधा लोकत्रयं विष्णुना ।२।

टीका- आपसे संबंध होने से हम बड़े शोभा को प्राप्त हुए हैं । जैसे- हाथी मद करके शोभा को प्राप्त होता है, जल कमल से शोभा को प्राप्त होता है, पूर्ण चन्द्रमा से रात्रि शोभा को प्राप्त होती है, शील से स्त्री शोभा को प्राप्त होती है, घोड़ा अधिक चलने से शोभा कों प्राप्त होता है और मंदिर में नित्य उत्सव होने से मंदिर की शोभा है । वाणी की व्याकरण से शोभा है । नदियाँ हंसों के जोड़े से शोभा को प्राप्त होती है । पंडितों की सभा से शोभा है और कुल की सत्पुत्र होने से शोभा है । राजा की पृथ्वी से शोभा है और विष्णु भगवान् से त्रिलोकी की शोभा है, उसी प्रकार आपसे संबंध होने पर हमारी और आपकी शोभा है ।२।

गंगा पापं शशी तापं दैन्यं कल्पतरुस्तथा ।
पापं तापं तथा दैन्यं हन्ति सज्जनसंगमः ।३।

टीका- गंगा जी का स्नान करने से सब पाप दूर हो जाते हैं और चन्द्रमा के दर्शन करने से ताप नामक गर्मी दूर हो जाती है । कल्पवृक्ष के दर्शन से दरिद्रता दूर हो जाती है और पाप, ताप तथा दरिद्रता- ये तीनों ही सज्जनों के मिलने से दूर हो जाते हैं । सो आप ऐसे सज्जन हैं कि आपके मिलने से हमारे सब दुःख दूर हो गये हैं ।३।

दूरेहि श्रुत्वा भवदीय कीर्ति, कर्णौ च तृप्तौ न हि चक्षुषी मे ।
तयोर्विवादं परिहर्तुकामः, समागतोऽहं तव दर्शनाय ।४।

टीका- आपकी कीर्ति को दूर ही से सुन कर कान तो तृप्त हो गये, परन्तु हमारे नेत्र तृप्त नहीं हुए, तब उन दोनों में (कान और नेत्रों में) विवाद होने लगा। उसको दूर करने के लिए ही हम दर्शन हेतु यहाँ आये हैं । सो जैसे सुने थे, वैसे ही देखे हैं, अतः विवाद दूर हो गया है ।

पंचगव्य	पंचामृत	पंचपल्लव	पंचरत्न
गोमूत्र गो-गोबर गो-दुग्ध गो-घृत गो दधि	गो घृत गो दधि गो दुग्ध, गंगाजल शहद	बरगद का पत्ता गूलर का पत्ता पीपल का पत्ता आम का पत्ता पिलखन का पत्ता	सोना चाँदी ताँबा मूँगा मोती

॥इति ज्योतिष सर्व संग्रह चारों प्रकरण सम्पूर्ण॥















मनोज
प्रकाशन